राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

नई दिल्ली से प्रकाशित

वर्ष : 12
अंक : 44
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
सोमवार 29 अगस्त 2022
मूल्य : 1.50/-
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट
पेज 3 शिक्षा मॉडल में केजरीवाल सरकार कर रही है फर्जीवाड़ा : रामवीर बिधूड़ी, केजरीवाल सरकार के आने के बाद सरकारी स्कूलों में घटी
पेज 5 योगी सरकार की सख्ती : सीतापुर में शराब माफिया की एक करोड़ से अधिक की संपत्ति कुर्क
पेज 7 तालिबान के कब्जे के बाद करीब एक साल बाद अफगानिस्तान में खुलने जा रहे सिनेमाघर

शिलान्यास समारोह

रविवार को गांधीनगर, गुजरात में भारत में सुजुकी के 40 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गुजरात के हंसलपुर में सुजुकी ईवी बैटरी प्लांट और खरखोदा, हरियाणा (डिजिटल) में मारुति सुजुकी वाहन निर्माण सुविधा के शिलान्यास समारोह में प्रधानमंत्री।

नोएडा के ट्विन टावर जमींदोज

3700 किलो बारूद से दोनों टावर 80 हजार टन मलबे में बदले, सुपरटेक ने कहा- 500 करोड़ का नुकसान हुआ

एजेंसी

नोएडा। नोएडा के सेक्टर 93 में बने सुपरटेक के अवैध ट्विन टावर रविवार दोपहर ढाई बजे ढहा दिए गए। 100 मीटर से ज्यादा ऊंचाई वाले दोनों टावर गिरने में सिर्फ 12 सेकेंड का वक्त लगा। इन्हें गिराने के लिए 3700 किलो बारूद का इस्तेमाल किया गया।

इसके बाद दोनों टावर करीब 80 हजार टन मलबे में तब्दील हो गए। इस मलबे में कंक्रीट और स्टील शामिल हैं, जिनकी कीमत करीब 15 करोड़ रुपए आंकी गई है।

ट्विन टावर गिरने के बाद इन्हें बनाने वाली कंपनी सुपरटेक लिमिटेड ने 500 करोड़ रुपए के नुकसान की बात कही है। कंपनी के चेयरमैन आरके अरोरा ने रविवार को कहा, 'हमारा कुल करीब 500 करोड़ रुपए का है। इसमें जमीन की खरीद, कंसट्रक्शन और ब्याज पर खर्च हुई रकम शामिल है।'

ट्विन टावर गिरने के बाद 5 मंजिलों के बराबर मलबा

ब्लास्ट के बाद दोनों टावर्स का मलबा साइट पर जमा हो गया है। भास्कर रिपोर्टर ने जब मौके का जायजा लिया, तो गिरी हुई इमारत के मलबे का ढेर करीब 50 से 60 फीट की ऊंचाई तक फैला नजर आया। यह ऊंचाई 5 मंजिला इमारत के बराबर है। पेड़ों और इमारतों से धूल हटाने के लिए 50 से ज्यादा फायर टेंडर्स को लगाया गया है। इलाके में पॉल्यूशन लेवल मॉनिटर करने के लिए स्पेशल डस्ट मशीनें लगाई गई हैं।

नजदीकी इमारतों में रहने वाले लोगों को लौटने की इजाजत

ट्विन टावर को गिराने का काम पूरा होने के बाद आसपास की उन सोसायटीज के लोगों को वापस आने की इजाजत मिल गई है, जिन्हें एहतियातन हटाया गया था। नोएडा प्रशासन ने पूरे इलाके का निरीक्षण करने के बाद रहवासियों को वापस लौटने के लिए कहा है।

ट्विन टावर को गिराने के लिए विस्फोट की जिस तकनीक का इस्तेमाल किया गया, उसके चलते घनी आबादी के बीच बने दोनों टावर अपनी जगह पर जमींदोज हो गए। आसपास की किसी इमारत को बड़ा नुकसान नहीं पहुंचा। कुछ बिल्डिंग्स के शीशे टूटने और एक सोसाइटी की बाउंड्री वॉल में दरार आने की बात कही गई है।

नोएडा के सेक्टर 93 में जिस जगह सुपरटेक के अवैध टावर खड़े थे, वहां ब्लास्ट के 30 मिनट बाद धूल का गुबार हटने पर खाली जगह नजर आई। इसके साथ ही टावर के पीछे बनीं इमारतें भी दिखाई देने लगीं। टावर मलबे में बदले, तो करीब आधा किलोमीटर के इलाके में धूल फैल गई।

आधे घंटे के बाद नोएडा अथॉरिटी के अमले ने एक्सप्लोजन साइट पर मोर्चा संभाल लिया। मलबा पूरी तरह हटाने में करीब तीन महीने का समय लगेगा।

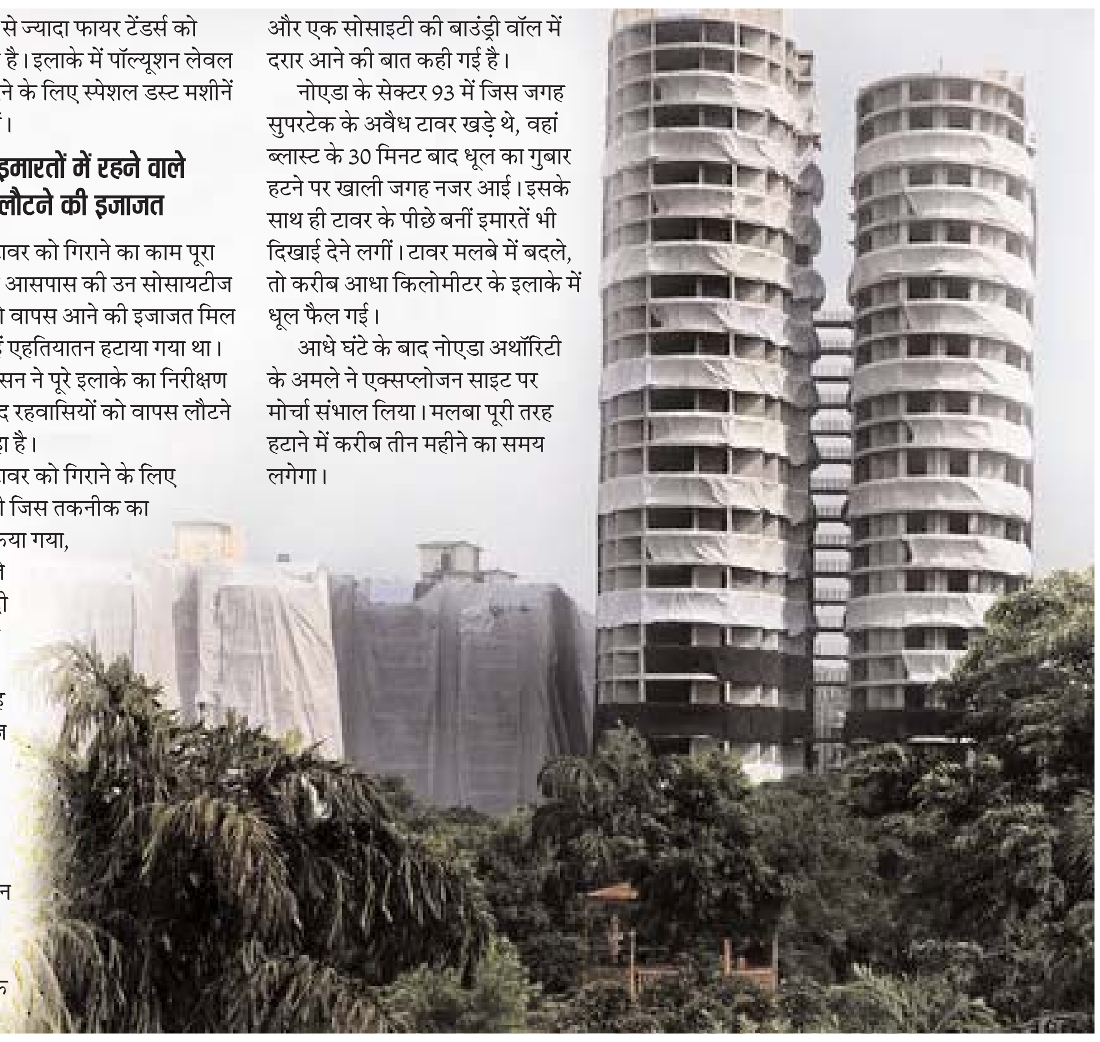

उत्तराखंड से अरुणाचल तक होगी जमकर बारिश, मौसम विभाग का अलर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने देश के बड़े हिस्से में अगले कुछ दिनों में बारिश की भविष्यवाणी की है। विभाग के मुताबिक सोमवार को नगालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा और मिजोरम में गरज-चमक के साथ मध्यम वर्षा हो सकती है। यह बारिश बड़े भूभाग में होने की संभावना है। वहीं अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय में भी अगले पांच दिनों तक बारिश की संभावना जताई गई है। इसके अलावा बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के बड़े हिस्से में बारिश की भविष्यवाणी की गई है।

अगले दो दिनों तक उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने कहा, 29 अगस्त को उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में गरज-चमक के साथ मध्य वर्षा होगी। इसके अलावा उत्तराखंड में कुछ जगहों पर भारी बारिश भी हो सकती है। इसके अलावा कर्नाटक, तेलंगाना, में 29 और 30 अगस्त को बारिश हो सकती है। आंध्र के तटीय इलाकों, दक्षिण कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और तटीय कर्नाटक में अगले कुछ दिनों तक मध्यम बारिश जारी रहेगी।

उत्तराखंड के कई जिलों में ऑरेंज अलर्ट

भारी बारिश की संभावना के बीच उत्तराखंड के कई जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। इनमें देहरादून, पौड़ी, नैनीताल, चंपावत शामिल हैं। बागेश्वर में भी भारी बारिश की संभावना जताई गई है। राज्य सरकार ने भी अपनी तरफ से अलर्ट जारी किया है और कहा है कि भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में लोग जानें से बचें।

कलकत्ता उच्च न्यायालय में नौ अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के लिए नौ वकीलों को अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया है। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय के न्याय विभाग की ओर से रविवार को जारी एक अधिसूचना में नियुक्ति संबंधी यह जानकारी दी गई। अधिसूचना के मुताबिक, राष्ट्रपति ने सर्वश्री विश्वरूप चौधरी, पार्थ सारथी सेन, प्रसेनजीत विश्वास, उदय कुमार, अजय कुमार गुप्ता, सुप्रतिम भट्टाचार्य, पार्थ सारथी चटर्जी, अपूर्व सिन्हा रे और मोहम्मद शब्बर रशीदी को उनकी वरिष्ठता के आधार पर अगले दो वर्षों के लिए अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त करने की मंजूरी दी है।

पंजाब में 38 किलो हेरोइन बरामद

गुजरात से ट्रक के टूलबॉक्स में छुपा लाई जा रही थी; विदेश बैठे सोनू खत्री ने भिजवाई

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस ने नवांशहर से 38 केजी हेरोइन बरामद की है। यह बरामदगी गुजरात से आए ट्रक से हुई। हेरोइन को ट्रक के टूलबॉक्स में छुपाकर लाया गया था।

इस मामले में पुलिस ने नवांशहर के बलाचौर के रहने वाले ट्रक ड्राइवर कुलविंदर राम उर्फ किंदा और बिट्टू को गिरफ्तार किया है। इनके साथ ड्रग स्मगलर राजेश कुमार उर्फ सोनू खत्री और सोमनाथ उर्फ बिक्कू को भी नामजद किया गया है। इनको टेलीग्राम एप से कॉल कर हेरोइन उठाने की जगह बताई गई थी।

DGP गौरव यादव ने बताया कि पुलिस को सीक्रेट इन्फॉर्मेशन मिली थी। जिसमें पता चला कि ड्रग स्मगल राजेश सोनू अपने साथियों सोमनाथ बिक्कू, कुलविंदर किंदा और बिट्टू के साथ मिलकर हेरोइन स्मगलिंग करता है। वह ट्रक में बाहर से हेरोइन लाकर पंजाब में सप्लाई करता है।

इसका पता चलते ही पुलिस ने थाना नवांशहर में इन पर केस दर्ज कर लिया। इसके बाद माहलों बाईपास पर नाकाबंदी कर दी। इस दौरान पुलिस पार्टी ने इस ट्रक को रुकने का इशारा किया लेकिन कुलविंदर किंदा ने उसे भागा लिया। पुलिस पार्टी ने दोनों को पीछा कर पकड़ा और हेरोइन बरामद कर ली।

राजेश सोनू प्रोफेशनल क्रिमिनल

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि राजेश कुमार उर्फ सोनू खत्री प्रोफेशनल क्रिमिनल है। वह विदेश में बैठा है। उसके खिलाफ 19 केस दर्ज हैं। जो कत्ल, फ्रॉड, ड्रग स्मगलिंग जैसे संगीन केसों में दर्ज हुए हैं। वहीं किंदा को भी NDPS एक्ट में 10 साल कैद हो चुकी है। उससे 3.45 क्विंटल भुक्की बरामद हुई थी।

सुपरटेक ट्विन टावर मामला : यूपी सरकार का भ्रष्टाचार पर बड़ा वार

नोएडा प्राधिकरण के 26 अफसरों की सूची जारी

नोएडा। नोएडा में सुपरटेक बिल्डर द्वारा नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ सांठगांठ कर बनाए गए ट्विन टावर सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर रविवार को विस्फोटक लगाकर जमींदोज कर दिए गए। इन दोनों टावरों के निर्माण में नियम-कायदों की अनदेखी के साथ ही जमकर भ्रष्टाचार किया गया था। यूपी सरकार ने रविवार देर रात सुपरटेक ट्विन टावर मामले में संलिप्त रहे नोएडा प्राधिकरण के 26 अधिकारियों की लिस्ट जारी की है। इनमें से 6 मौजूदा अधिकारी हैं, जबकि एक की मौत हो चुकी है और बाकी 19 रिटायर्ड अधिकारी हैं। भ्रष्टाचार के आरोपी इन अधिकारियों में दो महिलाओं के नाम भी शामिल हैं। माना जा रहा है कि इस लिस्ट को जारी कर यूपी सरकार ने भ्रष्ट अधिकारियों पर सख्त ऐक्शन की तैयारी शुरू कर दी है।

बता दें कि, इस मामले की अदालती के आदेश पर हुई उच्च स्तरीय जांच में नोएडा विकास प्राधिकरण के 26 अधिकारियों को ट्विन टावर्स के निर्माण में हुए भ्रष्टाचार में शामिल होने का दोषी पाया गया था। इस मामले में 26 अधिकारियों के अलावा सुपरटेक कंपनी के चार निदेशक और दो आर्किटेक्ट को भी भ्रष्टाचार में शामिल पाया गया। सरकार का कहना है कि इस मामले में भ्रष्टाचार के दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने रियल एस्टेट कंपनी सुपरटेक द्वारा नोएडा विकास प्राधिकरण के आला अधिकारियों की मिलीभगत से नियमों को ताक पर रखकर बनाए गए ट्विन टावर्स को अवैध करार देते हुए पिछले साल 31 अगस्त को धराशायी करने का आदेश दिया था।

यूपी के अपर मुख्य सचिव बोले- सभी के खिलाफ कार्रवाई होगी

अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश अवस्थी ने कहा भ्रष्टाचार पर एक्शन जारी रहेगा। पहली बार इतना बड़ा निर्माण कराया गया है। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन किया है। दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। नोएडा में भ्रष्टाचार की इमारत जमींदोज कर दी गई है। इस मामले में शामिल सभी अधिकारियों की सूची तैयार कर दी गई है।

सुपरटेक को कुल कितना नुकसान हुआ है?

सुपरटेक एमराल्ड कोर्ट प्रोजेक्ट में एक 3 बीएचके अपार्टमेंट की लागत लगभग 1.13 करोड़ रुपए बताई गई थी। दोनों इमारतों में करीब 915 फ्लैट थे, जिससे कंपनी को करीब 1,200 करोड़ रुपए की कमाई होती। कुल 915 फ्लैटों में से लगभग 633 बुक किए गए थे और कंपनी ने होमबॉयर्स (जो लोग इन्हें खरीद रहे थे) से लगभग 180 करोड़ रुपए एकत्र किए।

भ्रष्टाचार में शामिल अफसरों की सूची

- एस.के.द्विवेदी /सीईओ, नोएडा (रिटायर्ड)
- आर.पी.अरोड़ा/अपर सीईओ, नोएडा (रिटायर्ड)
- यशपाल सिंह/विशेष कार्याधिकारी (रिटायर्ड)
- स्व. मैराजुद्दीन/प्लानिंग असिस्टेंट (रिटायर्ड)
- ऋतुराज व्यास/ सहयुक्त नगर नियोजक (वर्तमान में यमुना प्राधिकरण में प्रभारी महाप्रबंधक)
- एस.के.मिश्रा /नगर नियोजक (रिटायर्ड)
- राजपाल कौशिक/वरिष्ठ नगर नियोजक (रिटायर्ड)
- त्रिभुवन सिंह/मुख्य वास्तुविद नियोजक (रिटायर्ड)
- शैलेंद्र कैरे/उपमहाप्रबन्धक, ग्रुप हाउसिंग (रिटायर्ड)
- बाबूराम/परियोजना अभियंता (रिटायर्ड)
- टी.एन.पटेल/प्लानिंग असिस्टेंट (सेवानिवृत्त)
- वी.ए.देवपुजारी/मुख्य वास्तुविद नियोजक (सेवानिवृत्त)
- श्रीमती अनीता/प्लानिंग असिस्टेंट (वर्तमान में उ.प्र.राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण)
- एन.के. कपूर /एसोसिएट आर्किटेक्ट (सेवानिवृत्त)
- मुकेश गोयल/नियोजन सहायक (वर्तमान में प्रबंधक नियोजक के पद पर गीडा में कार्यरत)
- प्रवीण श्रीवास्तव/सहायक वास्तुविद (सेवानिवृत्त)
- ज्ञानचंद/विधि अधिकारी (सेवानिवृत्त)
- राजेश कुमार /विधि सलाहकार (सेवानिवृत्त)
- स्व. डी.पी. भारद्वाज/प्लानिंग असिस्टेंट
- श्रीमती विमला सिंह/ सहयुक्त नगर नियोजक
- विपिन गौड़/महाप्रबंधक (सेवानिवृत्त)
- एम.सी.त्यागी/परियोजना अभियंता (सेवानिवृत्त)
- के.के.पांडेय/ मुख्य परियोजना अभियंता
- पी.एन.बाथम/ अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी
- ए.सी सिंह/वित्त नियंत्रक (सेवानिवृत्त)

19 अक्टूबर को मिलेगा कांग्रेस को फुल टाइम प्रेसिडेंट:17 को वोटिंग

जयराम रमेश बोले- पार्टी अध्यक्ष के लिए कोई भी कर सकता है नॉमिनेशन

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए 17 अक्टूबर को वोटिंग होगी और 19 अक्टूबर को काउंटिंग होगी। चुनावी शेड्यूल के मुताबिक 22 सितंबर को चुनाव संबंधी नोटिफिकेशन जारी होगा। 24 सितंबर से 30 सितंबर तक नॉमिनेशन किए जा सकेंगे। हालांकि अगर अध्यक्ष पद के लिए सिर्फ एक उम्मीदवार होता है तो ऐसी स्थिति में रिजल्ट की घोषणा 30 सितंबर को ही की जा सकती है। रविवार को हुई कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक के बाद केंद्रीय चुनाव प्राधिकरण के अध्यक्ष मधुसूदन मिस्त्री ने यह जानकारी दी। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में मौजूद सभी सदस्यों ने इस चुनाव शेड्यूल पर सहमति जताई। पार्टी नेता जयराम रमेश ने कहा कि पार्टी अध्यक्ष पद के लिए कोई भी नामांकन दाखिल कर सकेगा। केवल हमारी पार्टी में यह लोकतंत्र है। बैठक में पूर्व पीएम मनमोहन सिंह, केसी वेणुगोपाल, पूर्व केंद्रीय मंत्री जयराम रमेश, मुकुल वासनिक, पी चिदंबरम, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल और जी-23 का हिस्सा रहे आनंद शर्मा मौजूद थे। पार्टी की कार्यकारी अध्यक्ष सोनिया गांधी समेत कई नेता वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बैठक में शामिल हुए।

अशोक गहलोत बोले- राहुल को मना लेंगे

कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत का नाम सबसे ज्यादा चर्चा में था। बताया जा रहा था कि सोनिया गांधी ने उन्हें पार्टी अध्यक्ष बनने के लिए तैयार रहने को कहा था, लेकिन गहलोत ने अगले ही दिन ऐसी खबरों को खारिज कर दिया था। पिछले बुधवार को उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को फिर से पार्टी की बागडोर संभालने के लिए मनाने का अंतिम समय तक प्रयास करेंगे।

हत्या

दुमका में मोहल्ले का लड़का करता था परेशान, हिंदू संगठनों का प्रदर्शन

लड़की ने बात करने से मना किया तो जिंदा जलाया

रांची। झारखंड के दुमका में लड़की ने बात करने से मना किया तो युवक ने पेट्रोल डालकर आग लगा दी। 12वीं में पढ़ने वाली लड़की पांच दिन तक अस्पताल में जिंदगी और मौत से जंग लड़ती रही। रविवार सुबह उसकी मौत हो गई। आरोपी युवक का नाम शाहरुख है। वह अंकिता (17) को आते-जाते छेड़ता और दोस्ती के लिए दबाव डालता था। पुलिस ने जब उसे गिरफ्तार किया तो वह हंसता रहा। घटना से शहर में तनाव है। हिंदू संगठनों ने प्रदर्शन किया है। अंकिता ने बताया कि घटना 23 अगस्त की सुबह पांच बजे के आसपास की है। मैं अपने कमरे में सो रही थी, अचानक कमरे की खिड़की के पास आग की लपटें देखकर मैं डर गई। जब मैंने खिड़की खोली तब देखा की मोहल्ले का आवारा लड़का शाहरुख हुसैन हाथ में पेट्रोल का कैन लिए मेरे घर की तरफ से भाग रहा था। तब तक आग मेरे शरीर में भी लग चुकी थी और मुझे काफी जलन सी महसूस हो रही थी।

10-15 दिन से परेशान कर रहा था

अंकिता ने कहा- मैं सिर्फ यही देख पाई की ब्लू टीशर्ट पहने, हाथ में पेट्रोल की कैन लिए शाहरुख भाग रहा था। ये वही शाहरुख था जो पिछले दस पन्द्रह दिन से मुझे परेशान कर रहा था। मोहल्ले में उसकी छवि एक आवारा किस्म के लड़के की थी। जिसका काम सिर्फ लड़कियों को परेशान करना और उन्हें अपने झांसे में लेकर इधर-उधर घुमाना था।

स्कूल और ट्यूशन जाते समय पीछा करता

अंकिता ने मौत से पहले अपने दिए बयान में कहा कि पिछले दस-पंद्रह दिन से वह मेरे आगे पीछे घूम रहा था। जब भी मैं स्कूल या ट्यूशन के लिए जाती वह मेरा पीछा करता। हालांकि मैंने कभी उसकी हरकतों को सीरियसली नहीं लिया, लेकिन उसने कहीं से मेरे मोबाइल का नम्बर जुगाड़ कर लिया था। उसके बाद अक्सर मुझे फोन करके मुझसे दोस्ती करने का दबाव बनाने लगा। मैंने उसे स्पष्ट कर दिया था कि मुझे इन सबसे कोई लेना देना नहीं है।

परिवार को मारने की धमकी दी थी

अंकिता के मुताबिक शाहरुख ने धमकी भी दी थी कि अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वह मुझे और मेरे परिवार वालों को मार देगा। मुझे उसकी हरकतों का अंदेशा तो था, लेकिन यह नहीं समझ पाई कि मेरे साथ ऐसा होगा। 22 अगस्त की रात उसने मुझे धमकी दी थी कि अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगी तो वह मुझे मारेगा। मैंने पापा को यह बात बताई उन्होंने कहा कि सुबह होने के बाद इस मामले का हल निकाला जाएगा, लेकिन इससे पहले कि इस समस्या का कोई हल निकल पाता 23 अगस्त की सुबह शाहरुख ने पेट्रोल छिड़ककर मुझे जला डाला।

आरोपी गिरफ्तार, शहर में तनाव

दुमका में फिलहाल आरोपी पुलिस की गिरफ्त में है। अंकिता की मौत के बाद दुमका शहर में तनाव की स्थिति है। वारदात के खिलाफ बजरंग दल और बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया है और आरोपी को फास्ट ट्रैक कोर्ट के मार्फत सजा सुनाने की मांग की है।

देश में 87 हजार से नीचे पहुंचे कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या

नयी दिल्ली। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना वायरस की चपेट में आने वाले नए लोगों की तुलना में इससे ठीक होने वालों की संख्या अधिक रही। इस वजह से इसके सक्रिय मामले घटकर 87 हजार से नीचे पहुंच गए।

इस समय देश के विभिन्न अस्पताल में 86,591 कोरोना रोगियों का इलाज चल रहा है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने रविवार को बताया कि सुबह सात बजे तक 211.86 करोड़ टीके दिये जा चुके हैं। मंत्रालय ने बताया कि देश में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण (कोविड-19) से 9,999 लोग मुक्त हुए हैं। अभी तक कुल 4,37,93,787 लोग कोरोना से स्वस्थ हो चुके हैं। स्वस्थ होने की दर 98.62 प्रतिशत है। सक्रिय मामलों का की दर 0.10 प्रतिशत है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान इस संक्रमण के 9,436 नए मामले सामने आए। दैनिक संक्रमण दर 2.93 प्रतिशत है।

मंत्रालय ने बताया कि इसी अवधि कोरोना महामारी से 30 लोगों की मौत होने से मृतकों की संख्या 5,27,754 तक पहुंच गई है। देश में पिछले 24 घंटे में 3,52,551 कोविड परीक्षण किए गये हैं। देश में कुल 88.50 करोड़ से अधिक कोविड परीक्षण किए हैं।

केरल में 419 सक्रिय मामले बढ़ने से इनकी कुल संख्या बढ़कर 8,563 हो गयी है। वहीं इससे निजात पाने वालों की संख्या 6671741 हो गयी है। इस महामारी से एक और मरीजों की जान जाने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 70791 हो गया है।

ओडिशा में पिछले 24 घंटों में कोरोना के 288 सक्रिय मामले बढ़ने से इनकी कुल संख्या घटकर 2042 हो गई है। वहीं राज्य में अब तक 1315459 लोग इस महामारी से ठीक हुए हैं। मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 9171 हो गया है।

पंजाब में पिछले 24 घंटों में 173 सक्रिय मामले बढ़ने से इनकी कुल संख्या बढ़कर 17562 हो गयी है। वहीं राज्य में अब तक 747101 हो गई है और मतृकों की संख्या 17,895 तक पहुंच गई है।

शार्ट न्यूज

पीडीपी ने कश्मीर घाटी निवार्चन क्षेत्रों के प्रभारी किये नियुक्त

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) ने रविवार को कश्मीर घाटी के विभिन्न निवार्चन क्षेत्रों के प्रभारी नामित किए हैं। पीडीपी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि हबीबुल्लाह बाथ को कुपवाड़ा का मुख्य जिला समन्वयक और राजा वहीद शोपियां जिले का उपाध्यक्ष नामित किया है। बयान के अनुसार एडवोकेट दाऊद बशीर बाथ को लोलाब निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी, सोफी इरफान को उत्तरी कश्मीर में हंदवाड़ा निर्वाचन क्षेत्र का निर्वाचन क्षेत्र प्रभारी, जबकि गुलाम नबी पंडितपोरी को लंगेट निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी नामित किया गया है। उन्हें कुपवाड़ा जिले के समन्वयक प्रभार से मुक्त कर दिया गया है। इसी तरह खालिद मेहराज लोन को उरी का निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी, शेख बिलाल अहमद को गांदरबल निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया है। यावर शफी बंदे को शोपियां का निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी, मोहम्मद इकबाल ट्रंबू को श्रीनगर के छनापोरा निर्वाचन क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया है। उन्होंने बताया कि पार्टी ने पीरपंजाल संभाग के कुछ क्षेत्रों के लिए निर्वाचन क्षेत्र के प्रभारी भी नामित किए हैं। नदीम रफीक खान को मेंढर का प्रभारी, तज़ीम डार को राजौरी क्षेत्र के प्रभारी के रूप में नामित किया गया है। उन्हें जिला अध्यक्ष राजौरी (शहरी) और अतिरिक्त प्रवक्ता के प्रभार से मुक्त किया गया है।

जम्मू कश्मीर ने विकास और शांति की नई ऊंचाईयां प्राप्त की : मेघवाल

श्रीनगर। केन्द्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने रविवार को कहा कि पिछले तीन सालों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन के दौरान जम्मू कश्मीर विकास और शांति की नई ऊंचाईयां पर पहुंचा है। मेघवाल ने कहा कि इस केन्द्र शासित प्रदेश में केन्द्र सरकार की सभी योजनाओं का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन किया गया। मेघवाल ने दक्षिण कश्मीर अनंतनाग जिले के अपने दो दिवसीय दौरे के लगातार दूसरे दिन मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस साल रिकार्ड संख्या में पर्यटकों के आने से यह स्पष्ट है जम्मू-कश्मीर विकास और शांति की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थलों का पता लगाकर उसे विकसित किया जाना चाहिए ताकि दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके।

धारा 370 हटाने के लिए आजाद जिम्मेदार

श्रीनगर। अपनी पार्टी के अध्यक्ष अल्ताफ बुखारी ने रविवार को कांग्रेस के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद पर हमला करते हुए उन्हें जम्मू कश्मीर में धारा 370 हटाने के लिए जिम्मेदार ठहराया। श्री बुखारी ने दक्षिण कश्मीर के बिजबिहारा कस्बे में जनसभा को संबोधित करते हुए श्री आजाद संसद में विपक्ष के नेता के तौर पर धारा 370 को हटने से रोक सकते थे लेकिन उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का समर्थन किया और उनसे हाथ मिला लिया। उन्होंने कहा कि अगर श्री आजाद ने संसद में मोदी सरकार का समर्थन नहीं किया होता तो इसे पारित नहीं किया जा सकता था। उन्होंने कहा धारा 370 को हटाने से रोका जा सकता था यदि इस मुद्दे पर मतदान कराया जाता। लेकिन कांग्रेस का वोट भाजपा को चला गया। उन्होंने कहा कि श्री आजाद अब कश्मीर के लोगों को बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने सवाल किया और कहा कि जम्मू-कश्मीर के लोग मूर्ख नहीं हैं और वे जानते हैं कि आपने किसके साथ हाथ मिलाया हैं।

जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस को एक और झटका, ताज मोहिउद्दीन का भी इस्तीफा

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस को एक और झटका लगा जब पूर्व मंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ताज मोहिउद्दीन ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देकर गुलाम नबी आजाद के साथ जाने की घोषणा कर दी। श्री मोहिउद्दीन ने श्रीनगर में रविवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कांग्रेस छोड़ने और श्री आजाद के साथ जाने घोषणा की। उन्होंने मीडियाकर्मियों को कहा कि उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष को पत्र लिखकर पार्टी के सभी पदों और सदस्यता से इस्तीफा देने के बारे में बता दिया है। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति (एआईसीसी) में अब कुछ नहीं बचा है और आज मैं इसकी प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देता हुं। श्री मोहिउद्दीन जम्मू-कश्मीर के छठे नेता हैं जिन्होंने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दिया है और श्री आजाद के साथ गए हैं। इससे पहले वरिष्ठ कांग्रेसी नेता गुलाम नबी आजाद ने शुक्रवार को कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देकर बहुत जल्द अपनी पार्टी बनाने की घोषणा की थी।

नरेन्द्र मोदी भारत रत्न के हकदार : गोयल

नैनीताल। भारतीय जनता पार्टी के नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भारत रत्न देने की मांग की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी में विलक्षण प्रतिभा है और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह अथक परिश्रमी हैं। नैनीताल दौरे पर आये श्री गोयल रविवार को 'मोदी@20' कार्यक्रम में बोल रहे थे। नैनीताल की प्रबुद्ध जनता उन्हें बेहद ध्यान से सुन रही थी। उन्होंने मोदी की कार्य कुशलता के कई उदाहरण पेश किये। उन्होंने कहा कि श्री मोदी में महात्मा गांधी की तरह एक विलक्षण समानता रही है। वह महात्मा गांधी की तरह अथक परिश्रमी हैं और जो बोलते हैं, उसे पूरा करते हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आंदोलन की तरह प्रधानमंत्री मोदी ने भी विकास को जन आंदोलन बनाया। उन्होंने गुजरात के कच्छ का उदाहरण देते हुए कहा कि बतौर मुख्यमंत्री उन्होंने अथक मेहनत कर भूकंप में बर्बाद कच्छ शहर को एक साल के मामूली अंतराल में नये सिरे से खड़ा किया। यही नहीं उन्होंने गुजरात में विकास में कई नये आयाम गढ़े।

उत्तराखंड में पुलिस ने नष्ट की अवैध भांग की फसल

देहरादून। उत्तराखंड में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के 'ड्रग्स फ्री देवभूमि' अभियान अन्तर्गत, जनपद चमोली को नशामुक्त बनाने के लिए स्थानीय पुलिस ने एक कदम आगे बढ़ कर कार्रवाई की है। जिसने सीमान्त क्षेत्र उर्गम में लगभग 70 नाली भूमि पर अवैध रुप से उगाई गई भांग की खेती को नष्ट कर दिया। पुलिस अधीक्षक (एसपी) चमोली श्वेता चौबे ने रविवार को बताया कि वर्ष 2025 तक राज्य को ड्रग्स फ्री बनाने की मुख्यमंत्री की मंशा अनुरूप, कार्यवाही के दौरान, शनिवार को गोपनीय सूत्रों से उर्गम क्षेत्र में अवैध भांग की खेती किये जाने की सूचना मिली। इस पर पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी),ऑपरेशन नताशा सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया, जिसमें राजस्व पुलिस कर्मी भी सम्मिलित थे। उन्होंने बताया कि इस टीम सीमान्त क्षेत्र उर्गम एवं आसपास के गाँव खाबला, सलना, बड़गिंडा, देवग्राम में लगभग 70 नाली भूमि पर अवैध रुप से की जा रही भाँग की खेती को नष्ट किया है। चौबे ने बताया कि इस दौरान, ग्रामीणों को भांग से होने वाले नुकसान की जानकारी के साथ, भविष्य में अवैध रुप से भाँग का उत्पादन करने पर कार्यवाही करने की हिदायत दी गई है।

टाटा स्टील पंजाब में लागाएगी स्क्रैप आधारित अत्याधुनिक सरिया मिल

चंडीगढ़। टाटा स्टील ने पंजाब के लुधियाना में एक स्क्रैप-आधारित इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस (ईएएफ) वाला इस्पात सरिया कारखाना लगाने के लिए राज्य सरकार के साथ एक करार किया है। इसकी क्षमता 7.5 लाख टन वार्षिक उत्पादन की होगी। टाटा स्टील समूह की ओर से रविवार को जारी एक विज्ञप्ति में बताया गया कि इसके लिए पंजाब सरकार के साथ यहां 26 अगस्त को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भगवंत मान भी उपस्थिति थे। कंपनी ने कहा है कि लुघियान में कडियाना खुर्द, हाईटेक वैली में यह नयी इस्पात इकाई पुनर्चक्रण आधारित अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ाने की उसकी प्रतिबद्धता की दिशा में एक कदम है। इसमें स्क्रेप स्टील के पुनर्चक्रण के माध्यम से कम कार्बन उत्सर्जन वाली प्रक्रिया के साथ स्टील तैयार किया जाएगा। ईएएफ-आधारित यह अत्याधुनिक इस्पात काराखाना कंपनी के प्रमुख खुदरा ब्रांड 'टाटा टिस्कॉन' के तहत निर्माण ग्रेड स्टील रीबार का उत्पादन करेगा, जो टाटा स्टील को निर्माण खंड में अपनी बाजार उपस्थिति को और बढ़ाने में सक्षम करेगा।

गुजरात को बदनाम करने की रची गई साजिश, 2047 तक विकसित होगा भारत: पीएम मोदी

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि गुजरात को बदनाम करने और निवेश रोकने के लिए साजिशें रची गई हैं, लेकिन गुजरात ने इन्हें नज़रअंदाज किया और प्रगति का नया मार्ग प्रशस्त किया। मोदी इस साल के अंत में गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले भुज में विकास कार्यों का उद्घाटन करने और उनकी नींव रखने के बाद एक रैली को संबोधित कर रहे थे।

2047 तक विकसित राष्ट्र होगा भारत: पीएम मोदी

मोदी ने कहा कि फिलहाल कई कमियों के बावजूद वह साफ तौर पर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनते हुए देख सकते हैं। मोदी ने भुज में 4400 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन किया और आधारशिला रखी जिनमें सरदार सरोवर परियोजना की कच्छ शाखा नहर, सरहद डेयरी की नई स्वचालित दूध प्रसंस्करण और पैकिंग संयंत्र, भुज में क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, गांधीधाम में डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर सम्मेलन केंद्र, अंजार में वीर बाल स्मारक और नखत्राणा में भुज 2 उपस्टेशन शामिल है।

गुजरात को बदनाम करने की रची गई साजिश

प्रधानमंत्री ने कहा, गुजरात एक के बाद एक प्राकृतिक आपदाओं से निपट रहा था तब गुजरात को देश और दुनिया में बदनाम करने की साज़िशें रची गईं। गुजरात आने वाले निवेश को रोकने के लिए बार-बार प्रयास किए गए। उन्होंने कहा कि गुजरात ने उसे बदनाम करने वाले सभी प्रयासों को नज़रअंदाज़ किया, साज़िशों को नाकाम किया और राज्य प्रगति के नए पथ पर आगे बढ़ा।

प्रधानमंत्री ने कहा, 2001 में कच्छ के विनाशकारी भूकंप के बाद मैंने कच्छ के पुनर्विकास के बारे में बात की थी और हमने इसके लिए कड़ी मेहनत की थी। उस चुनौतीपूर्ण समय में हमने कहा था कि हम आपदा को अवसर में बदलेंगे और हमने इसे हासिल किया। आज हम परिणाम देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि कई लोग ऐसे थे, जिन्होंने कहा था कि कच्छ भूकंप से उबर नहीं पाएगा, लेकिन लोगों ने परिदृश्य बदल दिया है। मोदी ने कहा, जब मैं लालकिले की प्राचीर से कहता हूं कि 2047 तक भारत विकसित देश होगा, मैं यह साफ तौर पर देख सकता हूं। हालांकि आप कुछ कमियां देख सकते हैं। हम आज जिसका संकल्प लेते हैं, उसे हम 2047 में निश्चित रूप से साकार करेंगे।

उन्होंने कहा कि गुजरात देश में ऐसा पहले राज्य बना जिसने आपदा प्रबंधन कानून बनाया। उन्होंने कहा, इस कानून से प्रेरणा लेकर पूरे देश के लिए ऐसा ही एक कानून बना। इस कानून ने कोविड-19 महामारी के दौरान देश में हर सरकार की मदद की। कच्छ में मई 2001 में मची तबाही के बाद किए गए असाधारण कामों को रेखांकित करते हुए मोदी ने कहा कि 2003 में क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा कच्छ विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी और 35 से ज्यादा नए कॉलेजों की स्थापना भी की गई है।

उन्होंने भूकंपरोधी जिला अस्पतालों और क्षेत्र में 200 से अधिक क्लीनिक के बारे में भी बात की और कहा कि हर घर को पवित्र नर्मदा का साफ पानी मिलता है। भूकंप के बाद क्षेत्र के विकास के बारे में बोलते हुए मोदी ने कहा कि कच्छ में आज दुनिया के सबसे बड़े सीमेंट संयंत्र हैं। वेल्डिंग पाइप निर्माण के मामले में यह दुनिया में दूसरे स्थान पर है। प्रधानमंत्री ने कहा, दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कपड़ा संयंत्र कच्छ में है। एशिया का पहला विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईज़ेड) कच्छ में बना।

मोदी ने कहा, हमारी विरासत में गौरव के पंच प्रण में से एक को याद किया जिसे उन्होंने लालकिले की प्राचीर से घोषित किया था। इसी के साथ प्रधानमंत्री ने कच्छ की समृद्धि और समृद्ध विरासत पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भुज में स्मृति वन स्मारक और अंजार में वीर बाल स्मारक कच्छ, गुजरात और पूरे देश के साझा दर्द के प्रतीक हैं। मोदी ने इन दोनों स्मारकों का उद्घाटन किया था जो 2001 के कच्छ भूकंप के लगभग 13,000 पीड़ितों को समर्पित हैं। मोदी ने कहा, स्मारक का उद्घाटन करते समय आज मेरे दिल में कई भावनाएं उमड़ पड़ीं।

मैं पूरी विनम्रता के साथ कह सकता हूं कि दिवंगत आत्माओं की याद में स्मृति वन स्मारक अमेरिका में 9/11 स्मारक और जापान में हिरोशिमा स्मारक के समान है। मोदी ने कहा कि उन्हें याद है कि जब कच्छ में भूकंप आया था तो वह दूसरे दिन ही यहां पहुंचे थे।

'चिड़िया के पंखों पर उड़ान भरते थे सावरकर', कर्नाटक में कक्षा 8 की पुस्तक पर बवाल

बेंगलुरु। कर्नाटक में हाई स्कूल के सिलेबस में विनायक दामोदर सारवरकर का अध्याय जोड़ने पर एक बार फिर बवाल शुरू हो गया है। विपक्ष का आरोप है कि भाजपा सरकार दोबारा इतिहास लिखने की कोशिश कर रही है। कक्षा 8 की कितबा ममें लिखा गया है कि सावरकर जब अंडमान की जेल में बंद थे तब चिड़िया के पंख पर बैठकर अपनी जन्मभूमि को देखने जाया करते थे।

इस पुस्तक के एक पद्यांशन में लिखा है, जहां सावरकर को बंद करके रखा गया था वहां रोशनी आने तक के लिए कोई छेद नहीं था। लेकिन एक बुलबुल उस कमरे में आया करती थी और फिर सावरकर रोज उसके पंखों पर बैठकर अपनी जन्मभूमि के दर्शन करने जाया करते थे। बता दें कि

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर भी सावरकर को लेकर कर्नाटक में कई जगह बवाल हुआ था। जहां सावरकर की तस्वीरें लगाई गई थीं वहीं कई संगठन इन्हें हटाने पर अड़े हुए थे।

कक्षा 8 की किताब के इस पैरे पर आलोचकों का कहना है कि छात्रों के लिए यह भ्रम पैदा करने वाला है। वहीं टेक्स्टबुक बनाने वाले लोगों की तरफ से कहा गया है कि इस बात पर विवाद बेकार है। उन्होंने कहा है कि इसका इस्तेमाल एक मुहावरे के तौर पर किया गया है। यह एक साहित्य अलंकार का अंश है। बता दें कि यह अध्याय कक्षा 8 की कन्नड़ भाषा की किताब में है।

बता दें कि पुस्तक में यह पद्यांश केटी गट्टी के एक यात्रा वृत्तांत से लिया गया है। वह 1911 से 1924 के बीच सेल्युलर जेल गए थे जहां उस वक्त सावरकर बंद थे। कांग्रेस विधायक प्रियंक खड़के ने ट्विटर पर लिखा कि यह पैसेज किसी भी तरह से मुहावरे की तरह नहीं लगता है। वहीं कर्नाटक टेक्स्टबुक रिविजन कमिटी के चेयरमैन रोहित चक्रतीर्थ का कहना है कि यह वाक्य अलंकार के रूप में है और इसका मतलब यह नहीं है कि सावरकर चिड़िया के पंखों पर उड़ते थे। उन्होंने कहा, यह सुनकर बहुत अजीब लग रहा है कि बहुत सारे लोगों को अलंकार का भी ज्ञान नहीं है।

दहेज प्रताड़ना से तंग आकर महिला ने की खुदकुशी

काकीनाडा। आंध्र प्रदेश में काकीनाडा से 20 किलोमीटर दूर यू कोठपल्ली मंडल के कोंडेवरम गांव में एक महिला ने रविवार को कथित तौर पर खुदकुशी कर ली। पुलिस ने बताया कि मृतक महिला की पहचान मेडिसेट्टी सिरीशा (30) के तौर पर हुयी है। पुलिस के मुताबिक महिला के परिजनों ने उसके ससुराल वालों पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। महिला के परिजनों का कहना है कि उनकी पुत्री को उसका पति और ससुराल वाले दहेज के लिए प्रताड़ित करते थे, जिसके कारण उसने यह कदम उठाया। इस सिलसिले में पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और शव को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी जनरल अस्पताल में भेज दिया है।

किसान संगठन बनाएं राष्ट्रीय स्तर का संयुक्त कार्यक्रम : चंद्रशेखर राव

हैदराबाद/नयी दिल्ली। तेलंगान के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने किसान संघों से देश भर में किसानों की विविध समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक संयुक्त कार्यक्रम तैयार करने का सुधाव दिया है और किसान नेताओं को पूरा सहयोग देने का भरोसा दिया है।

राज्य सरकार की ओर जारी एक विज्ञप्ति के मुताबिक श्री चंद्रशेखर राव ने रविवार को हैदाराबाद में प्रगति भवन में एक बैठक में देश भर से आए किसान संगठनों के नेताओं को संबोधित किया। उन्होंने आह्वान किया, आइए, हम राष्ट्रीय स्तर पर एक संयुक्त कार्यक्रम बनाएं ।किसानों के लिए एक समान एजेंडे के साथ तुरंत संघर्ष शुरू करें। केसीआर ने कहा कि दिल्ली और हैदराबाद सहित उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने के लिए किसान कार्यालय स्थापित किए जाने चाहिए और इन कार्यालयों में किसानों को इस तरह प्रशिक्षित किया जाए कि एक आम किसान भी देश के प्रधान मंत्री के साथ कृषि की समस्याओं पर खुलकर चर्चा कर सके।

उनका सुझाव है कि राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों को बुला कर उनके साथ किसानों की समस्याओं पर गहन चर्चा और विश्लेषण किया जाए। साथ ही किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें। तेलंगाना में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी की ओर से चुनौती का सामना कर रहे मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार द्वारा अपनाई जा रही नीतियां किसान विरोधी हैं।

लोकतंत्र की हत्या कर रहे हैं केसीआर : चुग

हैदराबाद। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महासचिव एवं तेलंगाना के पार्टी प्रभारी तरुण चुग ने रविवार मुख्यमंत्री तेलंगाना के. चंद्रशेखर राव के निरंकुश रवैये की निंदा की और कहा कि केसीआर राज्य में लोकतंत्र की हत्या कर रहे हैं। चुग ने रविवार को यहां एक मीडिया बयान में कहा कि मुख्यमंत्री का अलोकतांत्रिक और फासीवादी स्वभाव तब सामने आया, जब उन्होंने कल वारंगल में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की प्रस्तावित जनसभा को बाधित करने की पूरी कोशिश की। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा संबोधित की जाने वाली जनसभा में बाधा उत्पन्न करने का विचार ही मुख्यमंत्री के अहंकार का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि श्री नड्डा की जनसभा की अपार सफलता और जिस तरह से लोगों ने वक्ताओं को सुना, वह मौजूदा सरकार के खिलाफ उनके गुस्से को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि अगर केसीआर को लगता है कि भाजपा को पुलिस-आधिकारिक के साथ मिलकर डराया जा सकता है, तो वह गलत हैं। चुग ने कहा कि घटनाओं का पूरा क्रम हमें निज़ाम के समय की याद दिलाता है।

चेन्नई में समुद्री अभ्यास के साथ दो दिवसीय सारेक्स का समापन

चेन्नई। भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय समुद्री तलाशी एवं बचाव अभ्यास (सारेक्स-22) के 10वें संस्करण का समापन रविवार को दो दिवसीय समुद्री अभ्यास के साथ चेन्नई में हो गया। इसमें आईसीजी के कई जहाज और विमान, नौसेना के जहाज, हेलीकॉप्टर और भारतीय वायुसेना के हेलीकॉप्टर शामिल हुए।

इस समुद्री अभ्यास में दो बड़े स्तर के कन्टिन्जेन्सी के साथ 16 आईसीजी जहाज, एक नौसेना जहाज, छह

आईसीजी विमान, एक नेवल एडवांस लाइट हेलीकॉप्टर (एएलएच), एक वायुसेना हेलीकॉप्टर, यात्री पोत स्वराजद्वीप, चेन्नई पोर्ट ट्रस्ट का एक टग बोट और सीमा शुल्क का एक बोट शामिल हुआ। पहले कन्टिन्जेन्सी में 500 यात्रियों वाले यात्री जहाज पर बनावटी संकट दर्शाया गया, जबकि दूसरे कन्टिन्जेन्सी में 200 यात्रियों के साथ एक नागरिक विमान पर बनावटी संकट दिखाया गया। समुद्री अभ्यास में प्रतिक्रिया मैट्रिक्स में परेशान यात्रियों को सुरक्षित निकालने के लिए विभिन्न पद्धतियां शामिल की गई, जिसमें रिमोट द्वारा नियंत्रित लाइफबॉय का उपयोग जैसी नई तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

इस दो दिवसीय अभ्यास का उद्घाटन रक्षा सचिव अजय कुमार ने शनिवार को किया। राष्ट्रीय समुद्री तलाशी एवं बचाव बोर्ड (एनएमएसएआरबी) के तत्वावधान में आयोजित इस अभ्यास की मेजबानी भारतीय तटरक्षक बल ने की, जो भारतीय तलाशी और बचाव क्षेत्र (आईएसआरआर) की नोडल समुद्री एसएआर समन्वय एजेंसी भी है।

इस अभ्यास में राष्ट्रीय समुद्री तलाशी और बचाव हितधारकों के 51 प्रतिभागी शामिल हुए, साथ ही 16 मित्र देशों के 24 विदेशी पर्यवेक्षकों ने भी हिस्सा लिया।

धामी ने सड़क दुर्घटना में घायल लोगों का जाना हाल, मुआवजा की भी की घोषणा

नैनीताल। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को सुशीला तिवारी अस्पताल जाकर सड़क दुर्घटना में घायल लोगों का हाल जाना और चिकित्सकों से उन्हें बेहतर उपचार देने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री की ओर से मृतकों के परिजनों को दो लाख रुपये मुआवजा देने की भी घोषणा की गयी।

मुख्यमंत्री को रविवार शाम को नैनीताल में एक कार्यक्रम में भाग लेना था लेकिन मौसम खराब होने के चलते उनका हेलीकाप्टर नैनीताल में नहीं लैंड कर पाया और उन्हें हल्द्वानी गौला पार में उतरना पड़ा। यहां से उन्हें जानकारी मिली कि उधमसिंह नगर में एक भीषण दुर्घटना में छह लोगों की जान चली गयी है जबकि 34 से अधिक लोग घायल हो गये हैं जिनमें से आठ लोग सुशीला तिवारी अस्पताल में भर्ती हैं।

मुख्यमंत्री गौला पार से सीधे सुशीला तिवारी अस्पताल पहुंचे और उन्होंने सभी घायलों का हाल जाना। उन्होंने उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना भी की। मुख्यमंत्री ने इस दुर्घटना में जान गंवाने वाले लोगों की आत्मा की शांति के लिये भी कामना की और भगवान से उन्हें श्री चरणों में स्थान देने और परिजनों को इस दुख को सहने की शक्ति देने की भी कामना की।

मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दो लाख रुपये व गंभीर घायलों को 50 हजार व सामान्य घायलों को 25 हजार रुपये मुआवजा देने व सभी को मुफ्त उपचार की भी घोषणा की। उन्होंने इस घटना के मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश भी दिये।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश -उधम सिंह नगर के बॉर्डर पर आज सुबह संगत में जा रहे श्रद्धालुओं की ट्रैक्टर ट्रॉली को एक ट्रक ने भीषण टक्कर मार दी थी जिसमें छह लोगों की जान चली गई थी और 34 से अधिक श्रद्धालु घायल हो गए थे। इनमें से कुछ घायलों को हल्द्वानी के सुशीला तिवारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है जबकि कुछ का उपचार रुद्रपुर जिला अस्पताल व घायलों का उत्तर प्रदेश के बहेड़ी में उपचार किया जा रहा है।

हिमाचल में लंपी वायरस से करीब 650 पशुओं की मौत

हमीरपुर। हिमाचल प्रदेश में महामारी के रूप में फैले लंपी वायरस के संक्रमण से अब तक करीब 650 पशुओं की मौत हो चुकी है। इस बीच लंपी वायरस से प्रभावित जानवरों की संख्या 26,950 हो गयी है। इतनी बड़ी संख्या में दुधारू पशुओं की मौत से पशु मालिकों को बड़ी कठिनाई हुई है क्योंकि वे अपना दूध बेचने और पैसा कमाने में असमर्थ हैं। राज्य सरकार ने पूर्व में ही इस वायरस को महामारी घोषित कर दिया था और प्रत्येक मृत पशु के स्वामी को 30 हजार रुपये की राहत देने की घोषणा की थी। दिलचस्प तथ्य यह भी है कि पशुपालन विभाग ने अपने स्तर पर लम्पी वायरस को महामारी घोषित कर दिया है,लेकिन आपदा प्रबंधन की ओर से इस संबंध में कोई अधिसूचना जारी नहीं की गयी है।

हिमाचल चुनाव से पहले भाजपा ने सौदान सिंह को दी पूरी ताकत

हमीरपुर। हिमाचल प्रदेश में इस साल नवंबर में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) आलाकमान ने पार्टी को लगातार दूसरी बार सत्ता में वापस लाने के लिए अपने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौदान सिंह को राज्य की स्थिति से निपटने का पूरा अधिकार दे दिया है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने हिमाचल प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सिंह को विशेष रूप से प्रभारी और देवेंद्र सिंह राणा को सह-प्रभारी नियुक्त किया है। राज्य में विधानसभा की अड़सठ सीटें हैं और पार्टी इस बार लगभग पचपन जीतना चाहती है। पार्टी ने पिछले दो वर्षों से मिशन 2022 पर काम करना शुरू कर दिया है।

सिंह ने पहले ही शिमला में अपना नया कार्यभार संभाल लिया है और अगले उम्मीदवारों के बारे में उनकी राय जानने के लिए राज्य स्तर के नेताओं और यहां तक कि निर्वाचन क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत कर रहे हैं ।राणा एक मास्टर रणनीतिकार हैं जो जम्मू से हैं और केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह के भाई हैं। राणा इससे पहले नेशनल कांफ्रेंस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे जहां उन्होंने लंबे समय तक काम किया था। इन दोनों नेताओं को इस साल की शुरुआत में राज्य की तीन विधानसभाओं और एक लोकसभा सीट पर पार्टी उम्मीदवारों की चौंकाने वाली हार के बाद चुनाव का प्रभार दिया गया था।

सिरसा के गुरभेज ढिल्लों ज्योतिष-वास्तु में गोल्ड मेडल से सम्मानित

सिरसा। हरियाणा के सिरसा के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद् गुरभेज सिंह ढिल्लों को ज्योतिष एवं वास्तु के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के चलते गोल्ड मेडल व चाँदी का सिक्का देकर उन्हें सम्मानित किया गया।

यह सम्मान माँ शारदा ज्योतिर्षधाम अनुसंधान संस्थान उज्जैन के तत्वावधान में आयोजित 29वें अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष वास्तु महासम्मेलन में दिया गया। इस महासम्मेलन में देश और विदेश के 400 से अधिक विश्व स्तर के ज्योतिष एवं वास्तु से जुड़े विद्वानों ने भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक व विश्व प्रसिद्ध पंडित दिनेश गुरु ने आज यहां जारी विज्ञप्ति में बताया कि महासम्मेलन में सात विद्वानों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया, इसमें तंत्र-मंत्र, टेरो कार्ड, हस्तरेखा,कर्मकांड के साथ-साथ अंकशास्त्र से जुड़े 21 विदुषियों व 61 विद्वानों को भारत ज्योतिष प्राइड अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया। जबकि भारत के 10 मूर्धन्य विद्वानों को भारत टॉप टेन ज्योतिष वास्तु अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया, जिसके तहत सिरसा के सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद् गुरभेज सिंह ढिल्लों को भारत टॉप टेन ज्योतिष वास्तु अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया।

प्रेमी युगल ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

खरगोन। मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के महेश्वर थाना क्षेत्र के पिपलिया बुजुर्ग में आज एक प्रेमी युगल ने कथित तौर पर सजा के भय से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। महेश्वर के थाना प्रभारी परमानंद गोयल ने बताया कि 22 वर्षीय श्यामलाल और 17 वर्ष 11 माह की युवती ने वृक्ष से लटककर आत्महत्या कर ली। उन्होंने बताया कि गत 16 अक्टूबर 2021 को युवक नाबालिग को ले गया था। 20 अक्टूबर 2021 को वापस आने पर पुलिस ने अपहरण और दुष्कर्म का प्रकरण दर्ज किया था। इसके बावजूद दोनों में प्रेम प्रसंग जारी रहा। उन्होंने बताया कि 25 अगस्त को युवक की इस मामले में पेशी थी और उसने परिजनों को बताया था कि संभवत: उसे सजा हो सकती है।

आयुष्मान कार्डधारियों के उपचार का फर्जीवाड़ा उजागर, अस्पताल संचालक पर प्रकरण दर्ज

एजेंसी

जबलपुर। मध्यप्रदेश के जबलपुर में एक होटल में रखकर आयुष्मान कार्डधारियों के उपचार का फर्जीवाड़ा उजागार होने के बाद जांच अधिकारी द्वारा आज पुलिस को प्रतिवेदन सौपा गया, जिसके आधार पर निजी अस्पताल संचालक के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया गया।

नगर पुलिस अधीक्षक (सीएसपी) कोतवाली प्रभात शुक्ला ने आज बताया कि राइट टाउन स्थित सेन्टल किडनी अस्तपाल प्रबंधन द्वारा बाजू में स्थित एक होटल में आयुष्मान कार्ड धारियों को भर्ती कर उपचार करने की शिकायत मिली थी, जिसकी सूचना सीएचएमओ डॉ संजय मिश्रा को दी गयी थी। इसके बाद आयुष्मान उपचार योजना के नोडल अधिकारी तथा पुलिस ने शुक्रवार शाम होटल में दबिश दी। होटल में 60 से 70 आयुष्मान कार्डधारी मरीज भर्ती मिले। एक पलंग में दो-दो मरीज भर्ती थे। स्वास्थ विभाग ने आयुष्मान उपचार योजना के नोडल अधिकारी डॉ डी धबंडे को जांच कर पुलिस को प्रतिवेदन देने के निर्देश जारी किये गये थे।

नोडल अधिकार द्वारा आज अस्पताल संचालक डॉ अश्वनी पाठक द्वारा आयुष्मान योजना में फर्जीवाडा करने के संबंध प्रतिवेदन दिया है। आयुष्मान कार्डधारियों मरीजों के फर्जी उपचार के नाम पर राशि निकाली गयी है। प्रतिवेदन के आधार पर अस्पताल संचालक के खिलाफ अपराध दर्ज किया गया है। जांच में जो भी दोषी पाया जाता है, उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जायेगी।

सीएचएमओ डॉ संजय मिश्रा ने बताया कि कोविड के दौरान अस्पताल प्रबंधन को बेड बढाने की अनुमत्ति दी गयी थी। मरीजों को होटल में भर्ती कर उपचार करने की अनुमत्ति नहीं दी गयी थी। यह नर्सिंग होम एक्ट का उल्लंधन है। अस्पताल प्रबंधन को नोटिस जारी कर इस संबंध में जवाब मांगा गया है।

शिक्षा मॉडल में केजरीवाल सरकार कर रही है फर्जीवाड़ा : रामवीर बिधूड़ी

केजरीवाल सरकार के आने के बाद सरकारी स्कूलों में घटी छात्रों की संख्या

प्रफुल्ल राय/गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने दिल्ली सरकार के तथाकथित वर्ल्ड क्लास शिक्षा मॉडल को पूरी तरह फर्जीवाड़ा करार दिया है। उन्होंने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के इस दावे को खुली चुनौती दी है कि दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों को छोड़कर बच्चे प्राइवेट स्कूलों में आ रहे हैं। सरकारी स्कूलों के बच्चों की संख्या पिछले सात साल में एक लाख घट गई है। सरकारी स्कूलों में जितने बच्चे आ रहे हैं, उनमें से भी रोजाना 40 फीसदी गैरहाजिर रहते हैं। सात साल में दिल्ली के पब्लिक स्कूलों के बच्चों का आंकड़ा भी 31 फीसदी से बढ़कर 43 फीसदी हो गया है।

बिधूड़ी ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया है कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 2013-14 में बच्चों की संख्या 16.1 लाख थी लेकिन 2019-20 में घटकर 15.1 लाख रह गई। 2013-14 से पहले के आंकड़ों को देखें तो हर साल सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या करीब 60 हजार बढ़ रही थी लेकिन केजरीवाल सरकार के आने के बाद सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या बढ़ना तो दूर, उसमें गिरावट का दौर शुरू हो गया। 2014-15 में ये घटकर 15.4 लाख, 2015-16 में 15.1 लाख, 2016-17 में 15.3 लाख, 2017-18 में 14.6 लाख, 2018-19 में 14.9 लाख और 2019-20 में 15.1 लाख हो गई। इसके बाद दो साल तक कोविड के कारण स्कूल बंद रहे। उल्लेखनीय बात यह है कि स्कूलों में बच्चों की संख्या में 60 हजार प्रति वर्ष की जो बढ़ोतरी हो रही थी, वह भी नहीं हुई। अगर उस नियमित वृद्धि को शामिल किया जाए तो आज सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या 20 लाख होनी चाहिए थी जबकि यह 15.1 लाख है।

बिधूड़ी ने साथ ही यह भी कहा कि इस समय स्कूलों में जितने बच्चे हैं, उनमें भी फर्जीवाड़ा किया जा रहा है। अगर आंकड़ों को देखें तो 2017-18 में सरकारी स्कूलों में कुल 14 लाख 56 हजार 313 बच्चे थे लेकिन उनमें से 5 लाख 67 हजार 816 बच्चे अनुपस्थित रहे यानी कुल संख्या के 38.09 फीसदी बच्चे तो स्कूलों में आए ही नहीं। इसी तरह 2018-19 में 44.70 फीसदी बच्चे स्कूलों से गैरहाजिर रहे। 2019-20 में यह संख्या 39.35 फीसदी रही। इसका मतलब यह है कि स्कूलों में जितने बच्चों की संख्या बताई गई है, वास्तव में उससे करीब 40 फीसदी और भी कम है। यह भी जांच का विषय है कि आखिर इतनी बड़ी संख्या में बच्चे सरकारी स्कूलों में आते ही नहीं। बिधूड़ी ने कहा कि दिल्ली सरकार के शिक्षा फार्मूले की असफलता का एक और सबूत यह है कि राजधानी के पब्लिक स्कूलों में बच्चों की संख्या लगातार बढ़ी है। 2013-14 में दिल्ली के पब्लिक स्कूलों में जाने वाले बच्चों की संख्या 31 फीसदी थी लेकिन 2019-20 के आंकड़े बताते हैं कि 43 फीसदी बच्चे पब्लिक स्कूलों में जा रहे हैं जबकि मुख्यमंत्री केजरीवाल समेत आम आदमी पार्टी का हर नेता यह दावा करता है कि पब्लिक स्कूलों के बच्चे सरकारी स्कूलों में दाखिला ले रहे हैं।

दिल्ली नगर निगम के सरकारी स्कूलों में 2.5 लाख से ज्यादा नए छात्रों के दाखिले

नई दिल्ली। निगम के स्कूलों में बीते सत्र में हुए दाखिले से शिक्षा विभाग और निगम अधिकारी खासे उत्साहित हैं। एक लंबे अरसे के बाद निगम के स्कूलों में मौजूदा सत्र में दो लाख 53 हजार छात्रों ने दाखिला लिया है, जिसके बाद निगम के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 9 लाख से अधिक हो गई है। दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग की ओर से कहा गया है कि स्कूलों में छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। गौरतलब है कि दिल्ली में निगम की ओर से चलाए जा रहे स्कूलों की संख्या 1500 से ज्यादा है और इन स्कूलों में छात्रों को प्राथमिक शिक्षा दी जाती है यानी यह स्कूल नर्सरी से पांचवी तक होते हैं।

पांच वर्षों में सर्वाधिक

निगम ने बताया कि इस साल नए सत्र में दाखिले के बाद छात्रों की कुल संख्या लगभग 9,10,000 के पार पहुंच गई है जो बीते पांच वर्षों में सबसे ज्यादा है। अधिकारियों का कहना है कि लगातार छात्रों की संख्या बढ़ रही है जिसका कारण स्कूलों में लगातार सुधार किए जा रहे हैं। शिक्षा में सुधार के साथ इंफ्रास्ट्रक्चर में भी सुधार हुआ है। निगम ने हर वार्ड में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल की भी शुरुआत की है। जानकारी के मुताबिक, निगम के स्कूलों की संख्या 1563 है, जिसमें से करीब 138 स्कूल पूरी तरह अंग्रेजी मीडियम के हैं। वहीं, 642 स्कूल ऐसे हैं जिसमें एक सेक्शन अंग्रेजी मीडियम में है। निगम के शिक्षा विभाग की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक निगम के स्कूलों में छात्रों को कई सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए दिल्ली सरकार की ओर से निगम को फंड दिया जाता है।

शार्ट न्यूज

प्रदेश में लागू होगा गाजियाबाद मॉडल

गाजियाबाद। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गाजियाबाद का कूड़ा निस्तारण मॉडल पूरे प्रदेश के नगर निगमों में लागू किया जाएगा। शनिवार को नंदग्राम के हिंडन विहार स्थित कूड़ा निस्तारण फैक्टरी का निरीक्षण करने के बाद उन्होंने यह घोषणा की। इस फैक्टरी में सूखे और गीले कूड़े को अलग-अलग किया जाता है और गीले कचरे से खाद बनाई जाती है। मुख्यमंत्री ने गीले कूड़े से खाद बनने की प्रक्रिया देखी। नगर आयुक्त ने मुख्यमंत्री को बताया कि इस तरफ फैक्टरी से कूड़ा निस्तारण केवल गाजियाबाद में ही किया जा रहा है। तीन फैक्टरी पीपीपी मॉडल पर बनाई गई हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ पूर्वाह्न 11ः57 बजे कचरा निस्तारण फैक्टरी पहुंचे। नगर आयुक्त महेंद्र सिंह तंवर ने मुख्यमंत्री को बताया कि कूड़ा उठाने के बाद उसे फैक्टरी में लाया जाता है। सफाई कर्मचारी सूखा और गीला कूड़ा अलग-अलग करते हैं। पॉलिथीन और प्लास्टिक को भी अलग किया जाता है। मशीन की मदद से गीले कूड़े से खाद तैयार होती है। सूखा कूड़े को रिसाइकल किया जा रहा है। नगर आयुक्त ने मुख्यमंत्री को बताया कि प्रदेश में केवल गाजियाबाद में फैक्ट्री से कूड़ा निस्तारण किया जा रहा। इस तरह की एक फैक्टरी सिहानी में है। तीसरी फैक्टरी का जल्द उद्घाटन किया जाएगा। बकौल नगर आयुक्त, मुख्यमंत्री को कचरा निस्तारण मॉडल पसंद आया और उन्होंने गाजियाबाद के मॉडल को अन्य निगम में लागू कराने की बात कही।

कैंटर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

गाजियाबाद। सिहानी गेट थानाक्षेत्र में बेकाबू कैंटर ने बाइक सवार युवक को टक्कर मार दी। हादसे में युवक की मौके पर मौत हो गई। घटना के बाद चालक कैंटर मौके पर छोड़कर फरार हो गया। अंतिम संस्कार के बाद मृतक के भाई ने शिकायत दी। पुलिस ने आरोपी चालक के खिलाफ केस दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। साहिबाबाद के भोपुरा स्थित कृष्ण विहार निवासी मोनू भाटी का कहना है कि 24 अगस्त को उनके बड़े भाई लोकेश बाइक लेकर घर से लोहा मंडी जा रहे थे। रात करीब 10 बजे वह जैसे ही गाजियाबाद-दादरी रोड पर इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के सामने पहुंचे तो पीछे से बेकाबू कैंटर ने बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में उनके भाई की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी चालक कैंटर को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। 25 अगस्त को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। अंतिम संस्कार के बाद उन्होंने सिहानी गेट थाने में शिकायत दी। एसएचओ नरेश कुमार शर्मा का कहना है कि केस दर्ज कर आरोपी चालक की तलाश की जा रही है।

जमीन बेचने के नाम पर 1.37 करोड़ की ठगी

गाजियाबाद। कविनगर थानाक्षेत्र में जमीन बेचने के नाम पर 1.37 करोड़ की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ित का कहना है कि वर्ष 2012 में हुए सौदे के मुताबिक जमीन का भराव भी उन्हें कराना था। भराव की रकम जमीन की कीमत में से कटनी थी। उन्होंने मिट्टी के भराव में मोटी रकम खर्च दी, लेकिन आरोपियों ने जमीन की रजिस्ट्री नहीं की। बाद में पता चला कि आरोपी उन्हें बेची जमीन की रजिस्ट्री अन्य लोगों को करते आ रहे हैं। एसएसपी के आदेश पर कविनगर पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। गांव शाहपुर बम्हैटा निवासी जगदीश का कहना है कि उन्होंने अपने जीवन-यापन के लिए बादलपुर में जमीन देखी थी। जानकारी करने पर पता चला कि जमीन वेदपाल और रूमाल सिंह की है। उन्होंने दोनों से संपर्क किया तो वह जमीन बेचने के लिए तैयार हो गए। इसके बाद 20 सितंबर 2012 को वेदपाल और टेकचंद अपने परिजनों के साथ उनके पास आए और अपनी जमीन की फर्द दिखाई। इसके बाद 25 लाख रुपये प्रति बीघा के हिसाब से 13 बीघा जमीन बेचने का सौदा तय हो गया। इस संबंध में लिखित एग्रीमेंट भी हुआ था। 26 सितंबर 2012 को उन्होंने टेकचंद और वेदपाल को एक-एक लाख रुपये बयाना दिया।

फंदे पर लटकी मिली विवाहिता

गाजियाबाद। मसूरी थानाक्षेत्र के सोनी एंक्लेव की रहने वाली अफशा (26) ने शनिवार सुबह कमरे की खिड़की से लटककर आत्महत्या कर ली। दोपहर करीब साढ़े बारह बजे सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने अफशा के मायके वालों को इसकी सूचना दी। मामले में परिजनों ने ससुरालियों के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। किठौर के गांव शाहजमाल निवासी अफशा की चार साल पहले मसूरी के काफिल से शादी हुई थी। आरोप है कि काफिल और उसके ससुरालिये दहेज के लिए उत्पीड़न कर रहे थे। मामले में अफशा के परिजनों ने पति काफिल, ससुर शकिल अहमद, माँ, बहन और बहनोई के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। मसूरी थाना प्रभारी रविंद्र चंद्र पंत का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। जांच के आधार पर आगामी कार्रवाई की जाएगी।

घर में घुसकर बिल्डर को जान से मारने की धमकी देने का आरोप

गुरुग्राम। पालम विहार इलाके में रहने वाले एक बिल्डर के घर में घुसकर कुछ लोगों ने हाथापाई की। जान से मारने की धमकी भी दी। पीड़ित बिल्डर ने आरोपियों के खिलाफ शनिवार को पुलिस को शिकायत दी। शिकायत के आधार पर पालम विहार थाना में पुलिस ने मामला दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत में पालम विहार निवासी जय भगवान शर्मा ने बताया कि वह दिल्ली के राजनगर पालम में बिल्डर का काम करते हैं और फ्लोर बनाकर बेचते हैं। उन्होंने बताया कि राज नगर पार्ट- 2 महात्मा गांधी मार्ग पर उन्होंने एक बिल्डिंग बनाई। उसमें कुछ फ्लोर सुनील जैन, स्वराज गुप्ता व दिलशाद खान और नरेंद्र व अन्य लोगों को बेचे हुए हैं । आरोप है कि सुनील जैन, स्वराज गुप्ता व दिलशाद खान और उनके साथ कुछ अन्य लोग उन पर कार पार्किंग और रुफ राइट को लेकर गैर कानूनी रूप से दबाव बनाते रहते हैं। झूठी शिकायतें एमसीडी और डीडीए व पुलिस प्रशासन में लगाकर अवैध वसूली करने की कोशिश करते हैं। आरोप है कि तीनों अपने अन्य साथियों के साथ 25 अगस्त की रात करीब साढ़े 12 बजे उसके घर आए। जब वह बाहर निकले तो उन्हें गालियां देने लगे और उनके साथ हाथापाई शुरू कर दी।

गुरुग्राम-सोहना हाईवे पर सीसीटीवी लगाए गए

गुरुग्राम। गुरुग्राम-सोहना एलिवेटेड मार्ग पर सीसीटीवी कैमरे लगाने का काम शुरू हो गया है। फिलहाल घामडोज टोल से सोहना के बीच एलिवेटेड मार्ग पर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) की ओर से चार सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए हैं। अधिकारियों के अनुसार घामडोज टोल से राजीव चौक के बीच भी जल्द सीसीटीवी कैमरे लगाने का काम शुरू किया जाएगा। इसके अलावा जीएमडीए की ओर से इस मार्ग पर दो दर्जन के कैमरे लगाए जाएंगे। इन कैमरों से वाहनों की गति भी माफी जाएगी। सोहना एलिवेटेड हाईवे पर होने वाली हर गतिविधि पर तीसरी आंख की नजर होगी। इस कैमरों के जरिये एक तो हाईवे पर यातायात मूवमेंट की एनएचएआई निगरानी कर सकेगा। वहीं यदि कभी जाम की स्थिति पैदा होती है तो उसका भी आसानी से पता चल पाएगा और तुरंत मौके पर टीम भेजी जा सकेगी।

बिलकिस बानो मामले में रिहाई का विरोध

गुरुग्राम। गुजरात में 2002 में हुए दंगों के दौरान बिलकिस बानो से गैंगरेप और उनके परिवार के सात सदस्यों की हत्या मामले में सजा काट रहे दोषियों की रिहाई का विरोध गुरुग्राम में भी शुरू हो गया है। इस मुद्दे पर रविवार को लेजरवैली पार्क में बड़ी संख्या में लोग जमा हुए। उन्होंने रिहाई का विरोध करते हुए सभी दोषियों को वापस जेल भेजने की मांग की। इस दौरान नारे भी लगाए। डॉ सारिका वर्मा ने कहा कि प्रत्येक भारतीय महिला को न्याय मिलना चाहिए और एक सुरक्षित माहौल में जीने का हमें हक है। हम ऐसा देश नहीं बन सकते, जहां महिलाओं पर अत्याचार इतने हल्के में लिए जाएं। ऐसे जघन्य अपराध करने वाले अपराधी रिहा होने के लायक नहीं हैं। डॉ पारुल शर्मा ने कहा कि बलात्कारियों को वापस जेल में भेजा जाए। बलात्कार पीड़ितों को मानसिक, शारीरिक और वित्तीय सहायता और पुनर्वास प्रदान होना चाहिए। ऊषा सरोहा ने कहा कि बलात्कारियों के साथ इस तरह का व्यवहार समाज में एक संकेत भेजता है कि यदि आप एक खास राजनीतिक दल या धर्म से हैं तो आप कोई भी अपराध कर सकते हैं और इससे बच सकते हैं।

युवक की पिटाई का वीडियो वायरल करके लिखा, पार्ट-टू बाकी है

गाजियाबाद। कविनगर थानाक्षेत्र में अवैध वसूली का विरोध करने वाले युवक पर जानलेवा हमले का मामला सामने आया है। पीड़ित के मुताबिक गांव के ही रहने वाले आरोपी और उसके साथियों ने पीट-पीटकर उसे बेहोश कर दिया और फिर उसके बाद जेब में रखे 15 सौ रुपये लूटकर फरार हो गए। इतना ही नहीं, आरोपियों ने पिटाई की वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। साथ ही लिखा कि यह पार्ट-वन है और पार्ट-टू बाकी है। पुलिस का कहना है कि हत्या की कोशिश का केस दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी का प्रयास किया जा रहा है। गांव सदरपुर निवासी अंकित चौधरी का कहना है कि वह मेहनत मजदूरी करके परिवार का पालन-पोषण करते हैं। गांव का ही रहने वाला मोहन आए दिन उनसे पैसे छीन लेता था। बाद में उन्होंने पैसे देने से इनकार कर दिया। अंकित के मुताबिक 21 अगस्त की शाम करीब पांच बजे वह गोविंदपुरम स्थित जीडीए मार्केट में आए हुए थे। उसी दौरान मोहन सदरपुर गांव निवासी अपने साथी निशांत उर्फ ऐंडी, कैलाशपुरम गोविंदपुरम निवासी अंगद उर्फ हनी तथा 8-10 अज्ञात लड़कों के साथ आया और गाली-गलौच करने लगा। विरोध करने पर आरोपियों ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया।

हर कस्बे हर गांव में जाकर जला रहे यज्ञ की ज्योति

आर्य समाज ने लिया आर्य राष्ट्र बनाने का संकल्प

कपिल शर्मा/गौरवशाली भारत

नांगल चौधरी। आर्य समाज संगठन द्वारा रविवार सुबह ग्राम बड़कोदा में वैदिक हवन अनुष्ठान मंत्रोच्चार के साथ विधिपूर्वक किया गया। इस यज्ञ अनुष्ठान में हिन्दू रीति रिवाज़ सहित हवन के बाद वेद-पुराणों में उल्लेखनीय श्लोकों का अध्ययन किया गया।

ग्राम बड़कोदा में आयोजित अनुष्ठान में आर्य समाज के प्रमुख सत्यवीर सिंह आर्य ने हवन के ब्रह्मा की भूमिका का निर्वहन किया। इस समारोह में मुख्य अतिथि स्वरूप थानेदार वासुदेव, विशिष्ट अतिथि स्वरूप आर्य समाज बड़कोदा के प्रधान रामेश्वर, कुतबापुर के विनोद कुमार सहित गणमान्य जन इस अनुष्ठान में शामिल हुए।

इस धार्मिक यज्ञ अनुष्ठान कार्यक्रम में आर्य समाज सेवकों ने गायत्री मंत्र की व्याख्या के साथ सच्चिदानंद ईश्वर से कैसे संपर्क स्थापित किया जाए और सच्चिदानंद की अनुभूति का कैसे एहसास किया जाए तथा ईश्वरीय आशीर्वाद कैसे प्राप्त किया जाए इन सबका जिक्र करते हुए ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिए युवाओं को प्रेरित किया साथ ही अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक पक्तियों पर बल दिया। गाँव में यज्ञ अनुष्ठान कार्यक्रम से प्रभावित होकर आयोजक द्वारा एक सप्ताह पश्चात पुनः वैदिक यज्ञ कराने का आग्रह किया गया।

गाँव में आयोजित यज्ञ अनुष्ठान में चतुर्थ वेदों की महिमा का वर्णन करते हुए एवं वैश्विक वैदिक प्रचार करते हुए दताल ग्राम निवासी योगाचार्य महाशय सतवीर सिंह आर्य द्वारा अध्यात्मिक भजनों के माध्यम से लोगों को समझाया गया।

महाशय सत्यवीर सिंह आर्य ने अपने मधुरमय संगीत गायन से ईश्वरीय प्रेम, करुणा, प्रजाशांति संबंधित समाज में बढ़ती आततायियों एवं नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट कर धर्म के मार्ग पर चलने का युवाओं को उपदेश दिया साथ ही उन्होंने आर्य राष्ट्र बनाने का संकल्प लेते हुए और अध्यात्मिक जिक्र करते हुए अनेक अच्छे पहलुओं पर गहराई से प्रकाश डाला।

इस कड़ी में पारिवारिक संबंधों का ज़िक्र किया गया। युवाओं को बताया गया कि, माता - पिता के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए साथ ही पुत्र पति और पत्नी के संबंधों के प्रति दायित्व को बताया गया।

इस शुभ अवसर पर यज्ञ अनुष्ठान में उपस्थित यजमान थानेदार वासुदेव, प्रधानाध्यापक देवदत्त परिवार सहित और गांव के अन्य सम्मानित जन उपस्थित रहे।

आदर्श रामलीला का भूमि पूजन संपन्न

आनंद राय/गौरवशाली भारत

- **आदर्श एवं मर्यादाओं युक्त है श्री राम का जीवन: आदेश गुप्ता**
- **श्री राम का जीवन प्रेरणादायक : श्याम जाजू**
- **श्रेष्ठतम प्रेरणा स्रोत है रामायण का प्रत्येक प्रसंग : सतीश गर्ग**

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 का भूमि पूजन वैदिक रीति रिवाज के बीच मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न हुआ। रामलीला के पदाधिकारियों ने मंचन से जुड़े कलाकारों को कलावा बांध कर अनुबंधित किया। रामलीला से जुड़े पात्रों ने अपने सुक्ष्म अभिनय से सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया । लक्ष्मण-परशुराम के रोचक संवाद के बीच शील , क्रोध,संयम और वीरता का बखान होता दिखा ।

रामलीला का भूमि पूजन भाजपा प्रवक्ता दिल्ली प्रदेश सतीश गर्ग ने किया । मुख्य अतिथि के रूप में आदेश गुप्ता जी अध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश ,श्याम जाजू पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा , राजकुमार भाटिया जिला अध्यक्ष, राजेश गुप्ता विधायक समेत अनेक सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष समारोह में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर आदेश गुप्ता ने कहा कि श्री राम का चरित्र, कर्तव्यनिष्ठ ,कर्म प्रधान, आदर्शों एवं मर्यादाओं से युक्त अति विनम्र व प्रेम प्रधान है । श्याम जाजू ने अपने संबोधन में कहा कि श्री राम के चरित्र का वर्णन शब्दों में तो हो ही नहीं सकता प्रभु श्रीराम अत्यंत शक्तिशाली थे किंतु उन्होंने कभी अपनी शक्तियों का दुरुपयोग नहीं किया तथा युद्ध में भी उन्होंने सदा मर्यादाओं का ही पालन किया। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। सतीश गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि रामलीला के प्रत्येक भाग में हमें जीवन उपयोगी कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। शबरी मिलन का प्रसंग सामाजिक समरसता का श्रेष्ठतम प्रेरणा स्रोत है ।श्री गर्ग ने सभी को अयोध्या में निर्माणाधीन भव्य श्री राम मंदिर बनने की बधाई दी।

अतिक्रमण हटाने के साथ 15 दुकानें सील

गुरुग्राम। जिला नगर योजनाकार प्रवर्तन ने सुशांतलोक फेज-1 के सी-ब्लाक व्यापार केंद्र मार्केट में अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया। अतिक्रमण पर बुलडोजर चलाने के साथ ही मौके पर अवैध तरीके बनीं 15 दुकानों को सील कर दिया गया। इस कार्रवाई के दौरान दुकानदारों ने विरोध किया, लेकिन पुलिस बल के आगे विरोध करने वाले पीछे हट गए। डीटीपी दोपहर एक बजे के बाद टीम पुलिस बल के साथ मार्केट पहुंची। मार्केट में अलवर स्वीट्स और चौधरी स्वीटस दुकानों की पार्किंग का कॉमन एरिया के बड़े हिस्से पर अतिक्रमण किया हुआ था।

सीएम बोले, हिंडन नदी का पुल समतल नहीं बनाया

गाजियाबाद। प्रदेश के मुख्यमंत्री ने शनिवार को हिंडन नदी के निर्माणाधीन नए पुल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से पूछा कि यह पुल समतल नहीं बना है, चलने में ऊंचा नीचा है। इसपर सेतु निगम के अधिकारियों ने कहा कि इस पुल पर अभी डामर (बजरी) की सड़क बनेगी। तब यह समतल हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने पुल से हिंडन नदी के बहते पानी को देखकर इसकी पर्याप्त साफ सफाई के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हिंडन नदी के पुल का निरीक्षण करने आने की सूचना अधिकारियों को पूर्वाह्न करीब 11.41 बजे मिली। उन्होंने तुरंत रास्ते को साफ करवा दिया। दो मिनट बाद मुख्यमंत्री का काफिला मेरठ रोड तिराहे की तरफ से हिंडन नदी के पुल पर पहुंचा। मुख्यमंत्री के आते ही उन्होंने सबसे पहले हिंडन नदी के निर्माणाधीन पुल के बारे में जानकारी ली। उन्हें सेतु निगम व जीडीए के अधिकारियों ने बताया कि यहां पहले अंग्रेजों के जमाने का एतिहासिक पुल था। जिसमें दरार आने के बाद इस नए पुल का निर्माण किया जा रहा है। अधिकारियों ने उन्हें पुल के निर्माण संबंधित पूरी जानकारी दी। साथ ही वहां पुल की जानकारी से संबंधित लगे स्टेन लोन के जरिये पुल निर्माण के बारे में बताया। फिर मुख्यमंत्री आपने काफिले के साथ पुल का निरीक्षण करने आगे बढ़े। उन्होंने पैदल चलकर आधे पुल तक गए। फिर वहां खड़े होकर अधिकारियों से इसके ऊंचे नीचे होने की बात कही। उन्होंने कहा कि इसपर वाहन कैसे चल सकते हैं।

गुरुग्राम में सोफा कवर बनाने वाली फैक्ट्री में लगी आग, दमकल की ने पाया काबू

गुरुग्राम। गुरुग्राम के सेक्टर-37 की पेस सिटी-2 में शुक्रवार देर रात सोफे के कवर बनाने वाली एक फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। आग की सूचना के बाद मौके पर पहुंचीं दमकल की एक दर्जन गाड़ियों ने करीब पांच घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आगजनी की इस घटना में फैक्ट्री में रखा लाखों रुपयों का सामान जलकर राख हो गया। पुलिस ने शनिवार को इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। दमकल अधिकारी राजबीर सिंह ने बताया कि फैक्ट्री में कपड़े, गद्दे व केमिकल होने के कारण आग पर काबू पाने में काफी समय लगा। आग को पूरी तरह से काबू पाने में दमकल विभाग की टीम को करीब पांच घंटे तक मशक्कत करनी पड़ी। प्रथमदृष्टया आग लगने के कारण शॉर्ट सर्किट ही बताया जा रहा है। दमकल विभाग के अधिकारियों के अनुसार शुक्रवार रात लगभग सवा दस बजे उन्हें कुर्सी के गद्दे और सोफा कवर बनाने वाले एक कारखाने से आग लगने की सूचना मिली। उन्होंने बताया कि विभाग ने पहले पांच दमकल गाड़ियां घटनास्थल सेक्टर 37 पेस सिटी-2 के प्लॉट नंबर 711 पर भेजीं, लेकिन आग कारखाने में रखे केमिकल के कारण तेजी से फैल गई। उन्होंने बताया कि इसके बाद दमकल की सात और गाड़ियां वहां भेजी गईं। उन्होंने बताया कि लगभग पांच घंटे की मशक्कत के बाद रात लगभग तीन बजे आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया गया।

दिल्ली विधानसभा का विशेष सत्र सोमवार को हंगामेदार होने के आसार

केजरीवाल सरकार पेश करेगी विश्वास प्रस्ताव

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के विशेष सत्र में सोमवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा प्रस्तावित विश्वास मत सदन में पेश किया जाएगा। इसके चलते सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) और विपक्षी दल भाजपा के बीच भारी हंगामा होने की संभावना है। 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा में आप के 62 विधायक हैं, जबकि भाजपा के पास आठ हैं।

भाजपा पर तीखा हमला करते हुए केजरीवाल ने शुक्रवार को आरोप लगाया था कि उनकी सरकार को गिराने के लिए भाजपा द्वारा शुरू किया गया ऑपरेशन लोटस फेल हो गया क्योंकि वह आप के किसी भी विधायक को नहीं खरीद सकी।

आप के राष्ट्रीय संयोजक ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा ने आप के 40 विधायकों को निशाना बनाया था और उनमें से प्रत्येक को पार्टी बदलने के लिए 20 करोड़ रुपये का ऑफर दिया था। केजरीवाल ने कहा था कि मैं विधानसभा में विश्वास प्रस्ताव लाना चाहता हूं ताकि दिल्ली की जनता के सामने यह साबित हो सके कि बीजेपी का ऑपरेशन लोटस दिल्ली ऑपरेशन कीचड़ बन गया है।

शराब 'घोटाले' से लोगों का ध्यान हटाने को नौटंकी कर रही 'आप'

वहीं, भाजपा विधायकों ने केजरीवाल पर राजनीतिक प्रचार के लिए विधानसभा का उपयोग करने और अपनी सरकार के शराब 'घोटाले' से लोगों का ध्यान हटाने के लिए नौटंकी करने का आरोप लगाया। भाजपा के सभी आठ विधायकों को शुक्रवार को सदन से बाहर निकाल दिया गया था। भाजपा नेताओं ने आरोप लगाया कि केजरीवाल 2013 में दिल्ली विधानसभा चुनाव लड़ने के बाद से आप विधायकों को कथित तौर पर तोड़ने के प्रयासों के बारे में दावा कर रहे हैं।

मुझे पार्टी तोड़ने पर सीएम पद की पेशकश की गई थी : सिसोदिया

बता दें कि, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी दावा किया था कि उन्हें भाजपा द्वारा पार्टी बदलने के लिए मुख्यमंत्री पद की पेशकश की गई थी। दिल्ली में आबकारी विभाग भी सिसोदिया के पास है और वह सीबीआई द्वारा दर्ज की गई एफआईआर में मुख्य आरोपी हैं। सीबीआई ने आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित अनियमितताओं की जांच के सिलसिले में पिछले सप्ताह दिल्ली सचिवालय में सिसोदिया के आवास और कार्यालय पर छापेमारी की थी।

गाजियाबाद अब अपराध के बजाय शिक्षा और धर्म की नगरी : योगी

गाजियाबाद। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को कहा कि गाजियाबाद की पहचान अब क्राइम कैपिटल के बजाय शिक्षा और धर्म की नगरी के रूप में बन रही है। वह गंगाजल प्लांट पर भाजपा पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि अपराध और भ्रष्टाचार को लेकर हमारी जीरो टोलरेंस की नीति है। यही कारण है कि अपराध नियंत्रण के यूपी मॉडल की देश भर में चर्चा हो रही है। मुख्यमंत्री ने बंद कमरे में करीब एक घंटे तक जिले के 63 पार्टी पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों से बात की। इस दौरान अधिकांश नेताओं ने विकास कार्यों की प्रशंसा कर अपने अपने क्षेत्र के लिए कुछ न कुछ मुख्यमंत्री से मांगा। मुख्यमंत्री भी अभिभावक की तरह सबकी बात गौर से सुनते रहे। कुछ बातों का उन्होंने तुरंत जवाब दिया। बाकी विषयों पर उन्होंने सबसे आखिर में अपनी बात रखी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब सांसद के रूप में गाजियाबाद आते थे तो यहां क्राइम और गंदगी बड़ी समस्या थी। अब गाजियाबाद के कूड़ा निस्तारण का मॉडल दूसरे सीख रहे हैं। गाजियाबाद की कई हाईवे से कनेक्टिविटी है। मुख्यमंत्री ने जनप्रतिधिनियों से जनता के बीच रहने को कहा। साथ ही कहा कि लोगों के काम कराने के लिए अधिकारियों से संवाद करें। साथ ही प्रभारी मंत्री गोपाल दास नंदी से कहा कि वह संगठन के साथ नियमित बैठक कर कार्यकर्ताओं की समस्याओं का हल करें। मुख्यमंत्री ने चेताया भी कि यदि कोई समस्या है तो चौराहों पर नकारात्मक बातें करने के बजाय मिल बैठकर उसे दूर करें। उन्होंने विधायक सुनील शर्मा की खोड़ा में जल्द गंगाजल की मांग पर कहा कि इस काम में तेजी लाई जाएगी। साथ ही महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा की मांग पर आश्वासन दिया कि मानसरोवर भवन बन चुका है। पूर्वांचल भवन और उत्तरांचल भवन भी जल्द ही लोगों के लिए तैयार कर दिए जाएंगे। पूर्व मंत्री अतुल गर्ग ने विजयनगर क्षेत्र में कब्जा मुक्त की गई जमीन पर कॉलेज की मांग की। विधायक नंद किशोर गुर्जर ने लोनी में जल निकासी की समस्या को उठाते हुए नगर निगम बनाने का प्रस्ताव मुख्यमंत्री के समक्ष रखा। सीएम ने चल रहे विकास कार्यों को तेजी से पूरा करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सफाई कर्मचारियों के बच्चों को दुलार कर पढ़ने के लिए प्रेरित किया

गाजियाबाद। मुख्यमंत्री ने कूड़ा निस्तारण फैक्ट्री में सफाई कर्मचारियों के बच्चों के लिए बनाए प्ले स्कूल का निरीक्षण किया। वहां करीब 15 बच्चे थे। मुख्यमंत्री ने सभी से नाम पूछा। वह किस कक्षा में पढ़ते हैं इस पर बात की। एक बच्ची से कविता और गाना सुनाने के लिए कहा। मुख्यमंत्री ने सभी बच्चों को टॉफी और बिस्कुट देकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। हिंडन विहार स्थित रेत मंडी में गार्बेज फैक्ट्री है। वहां सूखा और गीला कूड़ा अलग-अलग करने के लिए 100 से ज्यादा महिला और पुरुष सफाई कर्मचारी रोजाना आते हैं ।उनके बच्चों के लिए निगम ने फैक्ट्री परिसर में एक प्ले स्कूल बनाया है। वहां बच्चों को खेल के साथ पढ़ाई कराई जाती है ताकि वह भी पढ़कर अपना भविष्य सुधार सके। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ निरीक्षण के दौरान बच्चों से मिले। मुख्यमंत्री ने एक-एक करके सभी बच्चों को अपने पास बुलाया। उनका नाम पूछा। वह कहां से आते हैं और किस कक्षा में पढ़ते हैं। इस बारे में बात की। एक बच्ची से कविता और गाना सुनाने के लिए कहा। इस दौरान मुख्यमंत्री ने बच्चों को टॉफी और बिस्कुट दिए। मुख्यमंत्री ने करीब चार मिनट तक बच्चों के साथ समय गुजारा।

संपादकीय

कल तक जो खुद 'गुलाम' थे, आज़ाद हो गये

गुलाम नबी आज़ाद का कांग्रेस को अलविदा कहना कोई अप्रत्याशित नहीं है। इसका आभास तो तभी होने लगा था जब 1 अगस्त 2018 को तत्कालीन राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद द्वारा उन्हें उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार से नवाज़ा गया और बाद में इसी नरेंद्र मोदी सरकार ने 2022 में आज़ाद को देश के सर्वप्रतिष्ठित पदम् भूषण सम्मान से भी अलंकृत किया था। देश को कांग्रेस मुक्त बनाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कोशिशों के बीच किसी कांग्रेस नेता को ही इतना सम्मान देना, आमजनों द्वारा उसी समय से आज़ाद को संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा था। जब अमिताभ बच्चन के लोकसभा सीट से त्यागपत्र के बाद 1988 में इलाहबाद में उपचुनाव हो रहे थे उस समय मुख्य विपक्षी उम्मीदवार विश्वनाथ प्रताप सिंह ने एक जनसभा में गुलाम नबी आज़ाद की तरफ़ इशारा करते हुये कहा था कि जो दिल्ली में गुलाम हैं वह यहां (इलाहबाद में) आज़ाद हैं। यही वह दौर भी था जब वीपी सिंह, अरुण नेहरू, आरिफ़ मोहम्मद ख़ान , रामधन, सत्यपाल मलिक जैसे वरिष्ठ नेताओं को कांग्रेस पार्टी से निकाल दिया गया था । उस समय भी अनेक वरिष्ठ कांग्रेस नेता आज के गुलाम नबी आज़ाद की ही तरह कुछ ख़ास चाटुकारों के बीच घिरे रहने का राजीव गाँधी पर आरोप लगाते थे। अंतर यह है कि तब आज़ाद की गिनती राजीव गाँधी की उस चाटुकार मण्डली में होती थी जो कथित तौर पर राजीव गाँधी को ग़लत सलाह दिया करते थे। आज आज़ाद का कथन है कि -पार्टी अब ऐसी अवस्था में पहुँच गई है जहाँ से वापस लौटना संभव नहीं है. परन्तु सही मायने में कांग्रेस को इस दुर्गति तक पहुँचाने की बुनियाद डालने वालों में प्रमुख नाम गुलाम नबी आज़ाद का भी है। यह आज़ाद व उन जैसे चापलूस नेता ही थे जिन्होँने 1988 के इलाहबाद उपचुनाव में विश्व नाथ प्रताप सिंह के विरुद्ध सुनील शास्त्री जैसा कमज़ोर उम्मीदवार कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में उतारने की सलाह देकर कांग्रेस के पतन की शुरुआत में अपनी भूमिका निभाई। जब कोई कोंग्रेसी नेता उस समय इनसे पूछता कि अमिताभ बच्चन को ही पुन: चुनाव लड़वाकर वी पी सिंह की चुनौती क्यों स्वीकार नहीं की गयी तब आज़ाद जवाब देते कि यदि बच्चन %राजा साहब% से चुनाव हार जाते तो विपक्ष राजीव गाँधी के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफ़े के लिये अड़ जाता। इसलिये सुनील शास्त्री को लड़ाया जा रहा है। आज़ाद शायद अकेले ही नेता थे जो कहते फिर रहे थे कि शास्त्री चुनाव जीतेंगे पूरा प्रदेश देख रहा था कि वह चुनाव केवल सुनील शास्त्री की कांग्रेस की उम्मीदवारी के कारण वी पी सिंह के पक्ष में एकतरफ़ा हो चुका था।

खुद जम्मू कश्मीर के जम्मू संभाग के निवासी होने यहां तक कि 2005 से लेकर 2008 तक कांग्रेस पार्टी की ओर से पी डी पी व कांग्रेस की संयुक्त सरकार के मुख्यमंत्री बनने वाले आज़ाद के कश्मीर में जनाधार का अंदाज़ा भी इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन्हें पार्टी ने लोकसभा चुनाव महाराष्ट्र से लड़ाया और केंद्र में मंत्री बनाया। आज़ाद की गिनती कांग्रेस के बिना जनाधार वाले %पैराशूट % नेताओं में होती थी जो आलाकमान से अपनी नज़दीकियों का लाभ उठाकर अपनी मीठी चुपड़ी बातों से गाँधी परिवार का दिल जीत कर हमेशा किसी न किसी पद पर %सुशोभित % रहा करते थे। कांग्रेस में यही सब उस श्रेणी के नेता हैं जो सत्ता या कुर्सी के बिना रहने के आदी नहीं। वर्तमान समय कांग्रेस को ही नहीं बल्कि कांग्रेस की गांधीवादी व नेहरू वादी धर्म निरपेक्ष नीतियों को सीधी चुनौती दक्षिण पंथी शक्तियों द्वारा दी जा रही है। इस समय पार्टी को मज़बूत करने व कांग्रेस की नीतियों पर मज़बूती से चलने व उन्हें प्रचारित करने की ज़रुरत है। राहुल गाँधी इस समय जिस साहस के साथ सत्ता पर हमला कर रहे हैं और भारत जोड़ो यात्रा शुरू कर रहे हैं ऐसे समय में पार्टी के साथ मज़बूती से खड़े रहने की ज़रुरत थी न कि सोनिया गाँधी को लिखे पत्र में यह प्रवचन देने की कि -पार्टी को भारत जोड़ो अभियान से पहले कांग्रेस जोड़ो अभियान चलाना चाहिए था। कांग्रेस छोड़ते समय सोनिया गांधी को अपनी व्यथा बताते हुए आज़ाद लिखते हैं कि पार्टी के शीर्ष पर एक ऐसा आदमी थोपा गया जो गंभीर नहीं है।

नेताओं की उठापटक से कांग्रेस का आम कार्यकर्ता सबसे ज्यादा परेशान है

दीपक कुमार त्यागी

कांग्रेस से विचारधारा व दिल से जुड़ा हुआ आम कार्यकर्ता दुविधा में है कि आखिरकार पार्टी में यह किस तरह का माहौल चल रहा है और भविष्य में ऐसा माहौल कब तक चलता रहेगा। लेकिन अफसोस की बात यह है कि कांग्रेस पार्टी के दिग्गज नेता अपने ठाठबाट में ही मस्त हैं।

कांग्रेस पार्टी के सितारे पिछले कुछ वर्षों से लगातार गर्दिश में चल रहे हैं, पहले तो वह केंद्र की सत्ता से बाहर हुई फिर एक-एक करके उससे राज्यों की सत्ता भी छिनती चली गई। वहीं रही-सही कसर उन राजनेताओं ने पूरी कर दी जो कांग्रेस पार्टी में कभी सत्ता का प्रमुख केन्द्र व नीति निर्माता होते थे, वह राजनेता भी पिछले कुछ वर्षों से एक-एक करके ना जाने क्यों कांग्रेस पार्टी को छोड़ते जा रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के हालात को देखकर अब तो देश के आम जनमानस को भी यह लगने लगा है कि कांग्रेस मुक्त भारत का जो सपना कभी भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने देखा था, उसको कांग्रेस पार्टी के अंदर के कुछ नेता व पार्टी छोड़कर बाहर जाने वाले नेता ही पूरा करने पर तुले हुए हैं।

आज कांग्रेस पार्टी अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रही है, पार्टी के पास लंबे समय से अपना पूर्ण कालिक अध्यक्ष तक नहीं है, कांग्रेस के दिग्गज नेता पार्टी छोड़कर भाग रहे हैं, वहीं कांग्रेस पार्टी से दशकों से विचारधारा व दिल से जुड़ा हुआ आम कार्यकर्ता दुविधा में है कि आखिरकार पार्टी में यह किस तरह का माहौल चल रहा है और भविष्य में ऐसा माहौल कब तक चलता रहेगा। लेकिन अफसोस की बात यह है कि कांग्रेस पार्टी के दिग्गज नेता अपने ठाठबाट में ही मस्त हैं, उन्हें ना तो वास्तव में कांग्रेस पार्टी की कोई चिंता है और ना ही पार्टी के आम कार्यकर्ताओं की भावनाओं की कोई चिंता है, कांग्रेस की बेहद चिंताजनक स्थिति होने के बाद भी पार्टी के दिग्गज राजनेता आरोप लगाने में तो मस्त हैं, लेकिन ना जाने क्यों कांग्रेस पार्टी के हित में कभी भी यह चंद ताकतवर राजनेता अपने गिरेबान में झांक कर आत्ममंथन करने के लिए तैयार नहीं हैं।

कांग्रेस पार्टी के दिग्गज राजनेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री गुलाब नबी आजाद ने भी 26 अगस्त शुक्रवार के दिन पांच पन्नों का लंबा पत्र सोनिया गांधी को लिखकर के कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देते हुए, कांग्रेस में अपनी बेहद लंबी चली पारी को विराम दे दिया। हालांकि अब उन पर आरोप लग रहे हैं कि उन्होंने दशकों तक कांग्रेस राज का आनंद लेकर आज जरूरत के समय कांग्रेस पार्टी का साथ छोड़ दिया, जो सैद्धांतिक रूप से ठीक नहीं है। हालांकि यह भी कटु सत्य है कि कांग्रेस पार्टी में गुलाम नबी आज़ाद बहुत लंबे समय तक एक नीति निर्माता व रणनीतिकार की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका में कार्य करते रहे थे, राहुल गांधी के दौर में वह इस सिस्टम से बाहर हुए तो शायद उनको भी छटपटाहट हुई और बहुत बुरा लगा, जिसके चलते ही उन्होंने कांग्रेस पार्टी के अन्य शीर्ष राजनेताओं के साथ सोनिया गांधी को पार्टी में अंदरूनी लोकतंत्र स्थापित करने के लिए व पार्टी की कमजोरियों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए एक लंबी चौड़ी चिट्ठी लिख डाली थी। चिट्ठी लिखने वाले इस समूह को बाद में जी-23 नाम दिया गया था। इस ग्रुप पर कांग्रेस पार्टी के राहुल गांधी के नजदीकी विभिन्न बड़े राजनेताओं से लेकर के आम कार्यकर्ताओं तक ने भी बहुत गंभीर आरोप लगाये थे, जिसके चलते अन्य राजनेताओं के साथ-साथ गुलाम नबी आज़ाद भी बेहद आहत हुए थे। पिछले कुछ वर्षों से गुलाम नबी आज़ाद ने भी खुलेआम बागी तेवर अपना कर कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व के लिए बहुत बड़ी मुश्किल खड़ी कर रखी थी। हाल में उनको जम्मू-कश्मीर में संगठनात्मक दायित्व दिया गया था, जिसको उन्होंने लेने से इंकार कर दिया था। तब से ही देश के विभिन्न राजनीतिक गलियारों में यह कयास लगाए जाने शुरू हो गये थे कि अब कांग्रेस पार्टी में गुलाम नबी आज़ाद चंद दिनों के मेहमान हैं। इन अटकलों पर उन्होंने 26 अगस्त शुक्रवार को पांच पन्नों के अपने इस्तीफे पत्र के साथ ही मुहर लगा दी।

अपराध और ड्रग्स के बीच संबंध हज़ारों है

-डॉ सत्यवान 'सौरभ'

नशीली दवाओं के दुरुपयोग के प्रमुख कारण है- साथियों द्वारा स्वीकार किया जाना, आर्थिक तनाव बढ़ना, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन, न्यूरोटिक आनंद और अप्रभावी पुलिसिंग। तभी तो हाल ही में सुशांत राजपूत के बाद भारत की सोशल मीडिया स्टार सोनाली फोगाट को असमय मौत का शिकार होना पड़ा। चाहे कारण कुछ भी रहे हो, ड्रग ने ही जान ली दोनों की। भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के मामले और संख्या आये दिन बढ़ती जा रही है। नशीली दवाओं का दुरुपयोग हमारे स्वास्थ्य, सुरक्षा, शांति और विकास को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। ड्रग्स से दुर्घटनाओं, घरेलू हिंसा की घटनाओं, चिकित्सा समस्याओं और मृत्यु का उच्च जोखिम होने के साथ-साथ आर्थिक क्षमता बर्बाद हो जाती है। नशीली दवाओं पर निर्भरता, कम आत्मसम्मान, निराशा के कारण आपराधिक कार्रवाई और यहां तक कि आत्महत्या की प्रवृत्ति भी हो सकती है। नशीली दवाओं के कब्जे के लिए लोगों को अदालत में भेजने के बजाय, इसका मॉडल शिक्षा, उपचार और नुकसान में कमी पर केंद्रित है।

अपराध और ड्रग्स कई तरह से संबंधित हो सकते हैं। पहला, नशीली दवाओं का अवैध उत्पादन, निर्माण, वितरण या कब्ज़ा करना एक अपराध हो सकता है। दूसरे, ड्रग्स अन्य, गैर-ड्रग अपराधों के होने की संभावना को बढ़ा सकते हैं। तीसरा, ड्रग्स का इस्तेमाल पैसा बनाने के लिए किया जा सकता है। और चौथा, ड्रग्स अन्य प्रमुख समस्याओं से निकटता से जुड़ा हो सकता है, जैसे कि मर्डर, बंदूकों का अवैध उपयोग, विभिन्न प्रकार की हिंसा और आतंकवाद। क्या अवैध नशीली दवाओं के उपयोग को अपराध माना जाना चाहिए, नशीली दवाओं के दुरुपयोग का कारण क्या है और अंतत: कौन जिम्मेदार है।

स्वीकृत सामाजिक स्थिति और अपराध के संबंध में एक निरंतरता मौजूद है। एक तरफ कानून का पालन करने वाला व्यवहार है और दूसरी तरफ आपराधिक गतिविधि। इन दो चरम सीमाओं के बीच विचलित व्यवहार और अपराध पाया जाता है। कई सीमांत व्यक्ति जो नशीली दवाओं का उपयोग करते हैं वे अपराधी नहीं बनते हैं। यूनाइटेड नेशन ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत सदियों पुरानी भांग से लेकर ट्रामाडोल जैसी नई दवाओं और मेथामफेटामाइन (जिसे पिलाकर हाल ही में सोनाली फोगाट का मर्डर किया गया) जैसी डिजाइनर दवाओं के अवैध व्यापार के प्रमुख केंद्रों में से एक है।

नशीली दवाओं के व्यापार से प्राप्त धन का उपयोग आतंकवाद, मानव तस्करी, अवैध व्यवसायों आदि के वित्तपोषण के लिए किया जाता है। भारत दुनिया के दो प्रमुख अवैध अफीम उत्पादन क्षेत्रों के बीच में स्थित है, पश्चिम में गोल्डन क्रिसेंट और पूर्व में

गोल्डन ट्राएंगल जो इसे अवैध ड्रग व्यापार का एक व्यवहार्य केंद्र बनाता है। स्वर्ण त्रिभुज में म्यांमार, लाओस और थाईलैंड के क्षेत्र शामिल हैं और यह दक्षिण पूर्व एशिया का मुख्य अफीम उत्पादक क्षेत्र है और यूरोप और उत्तरी अमेरिका के लिए सबसे पुराने नशीले पदार्थों की आपूर्ति मार्गों में से एक है। गोल्डन क्रिसेंट में अफगानिस्तान, ईरान और पाकिस्तान शामिल हैं और अफीम उत्पादन और वितरण के लिए एक प्रमुख वैश्विक साइट है।

नशीली दवाओं के कब्जे के लिए लोगों को अदालत में भेजने के बजाय, इसका मॉडल शिक्षा, उपचार और नुकसान में कमी पर केंद्रित है। पिछले साल दुनिया भर में लगभग 275 मिलियन लोगों ने ड्रग्स का इस्तेमाल किया। 36 मिलियन से अधिक लोग नशीली दवाओं के उपयोग संबंधी विकारों से पीड़ित थे। अधिकांश देशों द्वारा महामारी के दौरान भांग के उपयोग में वृद्धि की सूचना दी गई है। इसी अवधि में औषधीय दवाओं का गैर-चिकित्सा उपयोग भी देखा गया है। नवीनतम वैश्विक अनुमान कहते हैं, 15 से 64 वर्ष के बीच की लगभग 5.5 प्रतिशत आबादी ने पिछले वर्ष में कम से कम एक बार नशीली दवाओं का उपयोग किया है। अनुमान है कि वैश्विक स्तर पर 11 मिलियन से अधिक लोग दवाओं का इंजेक्शन लगाते हैं - उनमें से आधे को हेपेटाइटिस सी है।

नशीली दवाओं के दुरुपयोग के प्रमुख कारण है-साथियों द्वारा स्वीकार किया जाना, आर्थिक तनाव बढ़ रहा है, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन, न्यूरोटिक आनंद और अप्रभावी पुलिसिंग। तभी तो हाल ही में सुशांत राजपूत के बाद भारत की सोशल मीडिया स्टार सोनाली फोगाट को असमय मौत का शिकार होना पड़ा। चाहे कारण कुछ भी रहे हो, ड्रग ने ही जान ली दोनों की। भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के मामले और संख्या आये दिन बढ़ती जा रही है। नशीली दवाओं का दुरुपयोग हमारे स्वास्थ्य, सुरक्षा, शांति और विकास को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। ड्रग्स से दुर्घटनाओं, घरेलू हिंसा की घटनाओं, चिकित्सा समस्याओं और मृत्यु का उच्च जोखिम होने के साथ-साथ आर्थिक क्षमता बर्बाद हो जाती है। नशीली दवाओं पर निर्भरता, कम आत्मसम्मान, निराशा के कारण आपराधिक कार्रवाई और यहां तक कि आत्महत्या की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

नशीली दवाओं के खतरे पर अंकुश लगाने की चुनौतियाँ देखे तो कानूनी रूप से उपलब्ध दवाएं जैसे तंबाकू एक बहुत बड़ी समस्या है जिसे आमतौर पर एक प्रवेश द्वार की दवा के रूप में देखा जाता है जिसे बच्चे सिर्फ प्रयोग करने के लिए लेते हैं। पुनर्वास केंद्रों का अभाव है। इसके अलावा, देश में नशा मुक्ति केंद्रों का संचालन करने वाले गैर सरकारी संगठन आवश्यक प्रकार के उपचार और चिकित्सा प्रदान करने में विफल रहे हैं। पंजाब, असम और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के माध्यम से ड्रग्स की तस्करी, जो पड़ोसी देशों के साथ सीमा साझा करते हैं।

नशीली दवाओं की लत से निपटने के लिए सरकार की पहल को देखे तो इसने नवंबर, 2016 में नार्को-समन्वय केंद्र (एनसीओआरडी) का गठन किया और नारकोटिक्स नियंत्रण के लिए राज्यों को वित्तीय सहायता की योजना को पुनर्जीवित किया। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो को एक नया सॉफ्टवेयर यानी जब्त सूचना प्रबंधन प्रणाली (एसआईएमएस) विकसित करने के लिए धन उपलब्ध कराया गया है जो नशीली दवाओं के अपराधों और अपराधियों का एक पूरा ऑनलाइन डेटाबेस तैयार करेगा। सरकार ने नारकोटिक ड्रग्स में अवैध यातायात से निपटने के संबंध में किए गए खर्च को पूरा करने के लिए नशीली दवाओं के दुरुपयोग के नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कोष नामक एक कोष का गठन किया है; व्यसनियों का पुनर्वास, और नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ जनता को शिक्षित करना आदि।

सरकार एम्स के नेशनल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर की मदद से सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के माध्यम से भारत में नशीली दवाओं के दुरुपयोग के रुझानों को मापने के लिए एक राष्ट्रीय नशीली दवाओं के दुरुपयोग सर्वेक्षण भी कर रही है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 2016 में प्रोजेक्ट सनराइज शुरू किया गया था, ताकि भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में, विशेष रूप से ड्रग्स का इंजेक्शन लगाने वाले लोगों में एचआईवी के बढ़ते प्रसार से निपटा जा सके। नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट, (एनडीपीएस) 1985 किसी व्यक्ति को किसी भी मादक दवा या साइकोट्रोपिक पदार्थ के उत्पादन, रखने, बेचने, खरीदने, परिवहन, भंडारण और / या उपभोग करने से रोकता है। एनडीपीएस अधिनियम में तब से तीन बार संशोधन किया गया है - 1988, 2001 और 2014 में। यह अधिनियम पूरे भारत में फैला हुआ है और यह भारत के बाहर के सभी भारतीय नागरिकों और भारत में पंजीकृत जहाजों और विमानों पर सभी व्यक्तियों पर भी लागू होता है।

सरकार ने नशा मुक्त भारत, या ड्रग-मुक्त भारत अभियान शुरू करने की भी घोषणा की है जो सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों पर केंद्रित है। व्यसन को एक चरित्र दोष के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि एक ऐसी बीमारी के रूप में देखा जाना चाहिए जिससे कोई अन्य व्यक्ति जूझ रहा हो।

इसलिए, नशीली दवाओं के सेवन से जुड़े कलंक को कम करने की जरूरत है। समाज को यह समझने की जरूरत है कि नशा करने वाले अपराधी नहीं बल्कि पीड़ित होते हैं। कुछ फसल दवाएं जिनमें 50 प्रतिशत से अधिक अल्कोहल और ओपिओइड शामिल हैं, को शामिल करने की आवश्यकता है।

मानसिक शक्ति ही मनुष्य को जीवंत और महान बनातीं है

सिर्फ मानव प्रजाति में सोचने समझने और मुस्कुराने की शक्ति होती है। मनुष्य की सर्व चेतनाओं से परिपूर्ण होता है । पत्थरों में चेतना शून्य होती है, पेड़ पौधों में पल्लवित पुष्पित होती है,

पशु पक्षियों में चलायमान होती है और मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें मानव मस्तिष्क चिंतन मनन कर किसी समस्या का समाधान निकालता हैंद्य यह सर्वविदित है कि मनुष्य का जीवन विभिन्न सामाजिक मानसिक संघर्षों का केंद्र होता हैद्य मनुष्य ने सदैव मानसिक शारीरिक शक्ति और दृढ़ संकल्प के बलबूते पर हर समस्या पर समय-समय पर विजय प्राप्त की है, और अपने लक्ष्य को बड़ी दृढ़ता के साथ प्राप्त किया हैद्य मनुष्य के जीवन में जब उत्साह, ऊर्जा एवं अपनी क्षमताओं के उपयोग करने का पूर्ण रूप से आत्मविश्वास होता है तो वह परिस्थितियों का सामना बखूबी कर अपने जीवन को सुचारू रूप से संचालित करता हैद्य एक मानव प्रजाति ही ऐसी प्रजाति है जिसकी संकल्प शक्ति इतनी ऊर्जावान एवं महत्वपूर्ण होती है कि वह प्रगति की विविधताओं, विषमताओं एवं अपार शक्ति को भी आसानी से नियंत्रित कर लेता है एवं उसका स्वयं के लिए समाज के लिए देश के लिए सकारात्मक उपयोग करने में भी सक्षम होता हैद्य जीवन में मनुष्य को सदैव अपने आप को व्यस्त रख कार्यशील रहना चाहिए, क्योंकि व्यस्त व्यक्ति ही किसी कार्य को उसकी परिणति तक पहुंचा सकता है ,खाली दिमाग सदैव शैतान का होता है एवं उसमें नकारात्मक विचार प्रवेश कर मन को मायूस कर देते हैंद्य आपका मन या मनोबल या संकल्प ही जब एकाग्र चित्त ऊर्जावान तथा शक्तिशाली होगा तो आपके सामने की कितना भी क्लिष्ट व कठिन लक्ष्य हो उसमें आप सफलता अवश्य पा सकेंगे। इसलिए मनुष्य को सदैव कर्मरत रहना चाहिए ।इसका यह भी अभिप्राय है कि मनुष्य को अपने आपको सदैव स्वस्थ्य एवं व्यस्त रखना चाहिएद्य

मन में दृढ़ संकल्प रखकर हमारी दुनिया में लोगों ने ऐसे असंभव कठिन तथा दुरूह कार्यों को अपनी जड़ मानसिक शक्ति से संभव कर दिखाया है जिसकी हम कतई कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की विपन्न स्थिति एवं आर्थिक कमी के बावजूद उन्होंने अपनी मानसिक दृढ़ता ,उच्च संकल्प शक्ति और संगठन क्षमता के दम पर भारत देश को आजाद कराया ।इसमें निसंदेह महात्मा गांधी, सरोजनी नायडू, सरदार वल्लभ भाई पटेल,जवाहरलाल नेहरू, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस और न जाने कितने उदाहरण हैं जिन्होंने अपनी मानसिक शारीरिक शक्ति तथा ऊर्जा के दमखम पर देश को अंग्रेजों के चंगुल से निकाल कर आजादी की हवा की सांस लेने का देशवासियों को मौका दिया है।

हम उनका नमन करते हैं उन्हें श्रद्धांजलि भी देते हैं और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति एवं संकल्प को आदर्श के रूप में लेकर अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करेंगे। दुनिया में अपनी मानसिक शक्ति और संकल्प से अनेक असंभव कार्य को सफलतापूर्वक संचालित संपादित करते हुए अनेक उदाहरण मिलेंगे जो वाकई में इस दुनिया के और हम सबके आदर्श महान लोग हैं। व्यक्ति यदि सादगी, ईमानदारी और निरंतरता के साथ किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक संपादित करने का सार्थक एवं सर्वोच्च प्रयत्न करता है, तो निसंदेह सफलता उनके कदम चूमती है और वे व्यक्तियों के लिए, समाज के लिए तथा देश के लिए आदर्श पुरुष होते हैं। कोई भी महान या आदर्श व्यक्ति आसमान से अचानक नहीं आता है वह इसी धरती में पैदा हुआ सामान्य मनुष्य ही है जिसने अपने संघर्ष, इच्छा शक्ति, अदम्य साहस ,संयम और संतुलन से अपने हर लक्ष्य को प्राप्त कर अपने आपको समाज से अलग कर एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। मनुष्य का हृदय या मन अनंत ऊर्जा और शक्ति का बहुत बड़ा स्रोत होता है। किसी भी बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मस्तिष्क मदद करता है फिर चिंतन करता है और कार्य योजना सुनियोजित कर, अन थक परिश्रम कर उस दुरूह लक्ष्य को प्राप्त करता है ।आपका मन यदि हताश या निराश है तो आप किसी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं।

पुस्तक का नाम 'कलयुग में आये साई'

लेखिकाः ऊषा कुशवाहा

मैं कोई साहित्यकार या समीक्षक नहीं बस एक पाठक और साई भक्त हूं। चुकि साई चरणों में मेरी श्रद्धा है इसलिए मैं शिरडी जाता रहता हूं और उनसे संबधित किताबों को पढ़ने में विशेष रुचि रखता हूं। अत: जीतनी किताबें मेरी नजर में आ पाई है मैने उन सब को पढ़ा है। बेसक उन किताबों से बाबा का रहन-सहन, उनके जीवनशैली तथा उनके चमत्कारों के बारे में जानने समझने का मौका मिला है। कुछ दिन पहले एमाजॉन पर %कलयुग में आये साई% किताब पर मेरी नजर गई और मैंने उसे मंगवाया। जैसे-जैसे इसे पढ़ता गया इसकी लेखन शैली का कायल होता गया। अबतक मैने जो भी किताबें पढ़ी थी उनमें श्रीसाईं के चमत्कारों का वर्णन मात्र ही था। बाबा की चमत्कारों के बारे में पढ़ना अच्छा तो लगता पर मेरे मन में कुछ सवाल भी पैदा होते थे। जैसे दीप तो साई के सिर्फ आदेश मात्र से भी जल सकते थे या साई अपने चमत्कार से तेल उत्पन्न कर सकते थे फिर पानी से दीये क्यों जलाये ?... उन्होंने अपने रहने के लिए एक मस्जिद को ही क्यों चुना ?... साई चक्की क्यों चलाया करते थे ?... वैगरह... वैगरह... ? क्या उदेश्य रहा होगा इन चमत्कारों को करने के पीछे ? इस अद्भुत किताब को पढ़ते हीं यूं लगा जैसे स्वयं साई ने ही आज मेरे मन में उठते सारे सवालों के जवाब देने लिए इस पुस्तक को उपलब्ध कराया है। मैं बिल्कुल अभीभूत हो उठा ! कई दिनों तक यह किताब मेरे जेहन में बना रहा। फिर मुझे लगा आये दिन छप रहे किताबों की भीढ़ में एक अच्छी किताब की पहचान के लिए मुझे कुछ करना चाहिए, यह किताब सिर्फ पढ़ने योग्य ही नही बल्कि अपने पास सहेजने योग्य भी है। नौ अध्यायों की इस किताब में कुछ लाईने, कुछ शब्द तो ऐसे हैं जिन्हें पढ़कर जीवन के किसी निराश, विचलित पल में आपको साक्षात श्रीसाई के आशिर्वाद सा सांत्वना का अनुभव कराती है। पहले तो मैंने इस किताब के बारे में एमाजॉन पर लिखना चाहा किंतु प्रयास करने पर मालूम हुआ उनकी कुछ नियम एंव शर्तें हैं जिनपर मैं खरा नही उतरता। क्या करता मन मारकर बैठ गया।

खेल हमारे जीवन की आवश्यकता है

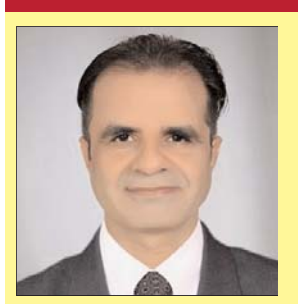

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न अवस्थाओं से गुजरे खेलों का आज भी हमारे जीवन में महत्व है

मनुष्य जीवन शैली को स्वस्थ्य और शारीरिक तंदुरुस्ती बनाए रखने में खेलों का महत्वपूर्ण योगदान - एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर खेलों का ट्रेंड बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है, यह न केवल किसी देश की प्रतिष्ठा का सवाल है बल्कि मनुष्य जीवन के स्वास्थ्य और शारीरिक तंदुरुस्ती को भी फिट बनाए रखता है, तथा इनसे मनुष्य का चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास भी होता है। खेलकर से पुष्ट और स्फूर्तिमय शरीर ही मन को स्वस्थ बनाता है। खेलकूद मानव मन को प्रसन्न और उत्साहित बनाए रखते हैं। खेलों से नियम पालन के स्वभाव का विकास होता है और मन एकाग्र होता है ।जिसको रेखांकित किया जाना आवश्यक है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विभिन्न अवस्थाओं से गुजरे खेलो का हमारे दैनिक जीवन को स्वस्थ्य रखने में अमूल्य योगदान देता है जो नकारा नहीं जा सकता। चूंकि 29 अगस्त 2022 को राष्ट्रीय खेल दिवस है इसलिए आज हम खेलों और उसमें मानुषी जीवों के स्वास्थ्य, देश की प्रतिष्ठा पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव पर चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम भारत में खेल दिवस की करें तो भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है जो आज मेजर ध्यानचंद के नाम से भी जाना जाता है,इसीलिए राष्ट्रीय खेल दिवस मेजर ध्यानचंद की विरासत का सम्मान करने और हमारे जीवन में खेल के महत्व को स्वीकार करने, हमारे जीवन में शारीरिक गतिविधियों और खेलों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम, कार्यशालाएं, राष्ट्रीय सेमिनार आदि सरकार द्वारा विकसित किए जाते हैं। भारत का पहला राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त 2012 से मनाना प्रारंभ हुआ था। ध्यानचंद को फादर ऑफ स्पोर्ट्स के रूप में भी जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम खेलों के महत्व की करें तो कुछ समय पहले हमने देखा कि किस तरह ओलंपिक खेलों में भारत ने परचम लहराया, फिर एशियन गेम्स, क्रिकेट और अभी दूसरे महत्वपूर्ण खेलों में खिलाड़ियों ने भारत की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिए ।सबसे बड़ी बात हमारे माननीय राष्ट्रपति, पीएम और अनेक केंद्रीय मंत्रियों ने जिस तरह खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की और पीएम ने सभी खिलाड़ियों को अपने निवास स्थान पर बुलाया, व्यक्तिगत फोन से बात की, जीतने वालों को बधाई और असफल होने वालों की हौसला अफजाई की जिसे रेखांकित किया जा सकता है और अभी से ही अगले ओलंपिक खेलों की तैयारियां शुरू हो गई है।

साथियों बात अगर हम खेल दिवस मनाने की करें तो यह हर वर्ष 12 अगस्त को मनाया जाता है, इस दिन सभी शिक्षण संस्थानों और खेल संस्थानों में कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। लगभग सभी तरह की खेल स्पर्धाएं करवाई जाती हैं। जीतने वालों को इनाम दिया जाता है, साथ ही जिन खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया होता है या पिछले एक साल में खेल जीते होते हैं, उनको भी सम्मानित किया जाता है। राष्ट्रीय स्तरपर राष्ट्रपति भवन में खेल क्षेत्र की प्रतिभाओं को स्मानित किया जाता है। राष्ट्रीय खेल दिवस के दिन, मेजर ध्यानचंद खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, ध्यानचंद पुरस्कार और द्रोणाचार्य पुरस्कार जैसे कई पुरस्कार खेल में खेल नायकों के योगदान का सम्मान करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वर्ष 2022 के लिए इन खेल पुरस्कारों के लिए आवेदन आमंत्रित करने वाली अधिसूचना अधिकृत वेबसाइट पर अपलोड की गई है,पात्र खिलाड़ियों को 20 सितंबर 2022 तक अपने आवेदन अपलोड करने होंगे। खेल प्राचीन काल से आधुनिक काल तक परिवर्तन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरे हैं। कबड्डी, शतरंज, खो-खो, कुश्ती, गिल्ली-डंडा, तीरंदाजी, गदा आदि परंपरागत खेलों के अलावा भारत विभिन्न देशों के संपर्क में आने से क्रिकेट, जूडो, टेनिस, बैडमिंटन आदि खेलों का भी खूब प्रचलन हुआ है।

साथियों बात अगर हम मेजर ध्यानचंद की करें तो हाल ही में पीएम नें राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार करने की घोषणा की है। खेल के क्षेत्र में अपनी जिंदगी और जी जान लगा देने वाले खिलाड़ियों को ध्यान चंद अवार्ड दिया जाता है। इस अवार्ड को सबसे ऊपर माना जाता है। हर साल ये अवार्ड उन शख्सियतों को दिया जाता है जिन्होंने ना केवल खेल का बेहतरीन प्रदर्शन किया बल्कि रिटायर्मेंट के बाद खेल को बढ़ावा देने के लिये भी कार्य किये ।साथियों मेजर ध्यान चंद जब हॉकी खेलते थे तो दूसरी टीम का खिलाड़ी गेंद को छीन ही नहीं पाता था। ऐसा लगता था मानो उनकी हॉकी में कोई जादू है। एक बार खेल के दौरान उनकी हॉकी को तोड़ कर चैक किया गया कि कहीं उसमें चुंबक तो नहीं है। मेजर ध्यान चंद के सम्मान में भारतीय डाक ने 1979 में एक डाक टिकट भी जारी की है। वहीं 2002 में दिल्ली के नेशनल स्टेडियम का नाम भी बदल कर ध्यान चंद नेशनल स्टेडियम कर दिया गया।

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में हुआ था और वह अपने समय के महान हॉकी खिलाड़ी थे।

उन्हें हॉकी खिलाड़ी के स्टार या हॉकी का जादूगर के रूप में जाना जाता था, क्योंकि उनकी अवधि के दौरान, उनकी टीम ने वर्ष 1928, 1932 और 1936 के दौरान ओलंपिक में स्वर्ण पदक हासिल किए थे। उन्होंने 1926 से 1949 तक 23 वर्षों तक अंतरराष्ट्रीय स्तरपर हॉकी खेली। उन्होंने अपने करियर में कुल 185 मैच खेले और 570 गोल किए। वह हॉकी के बारे में इतना समर्पित थे कि वह चांदनी रात में खेल के लिए अभ्यास किया करते थे, जिससे उसका नाम ध्यानचंद पड़ गया ।1956 में, ध्यानचंद को पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया, वह यह सम्मान पाने वाले तीसरे नागरिक थे।

हां मैं हूं नारीवादी!

नारीवाद के प्रमुख प्रकार,
स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार,
ऐसा विश्वास या सिद्धांत,
भेदभाव का हो देहांत,
और ना हो उस पर अत्याचार,
किसी का ना सहे दुर्व्यवहार,
समाज में स्वाभिमान के साथ जीना जाने,
जागरूक हो के अपने अधिकारों को पहचाने,
मिले दोनों को बराबर का अवसर,
महिलाएं भी हो हर तरह से स्वतंत्र,
नहीं हो किसी मौके से वंचित,
नहीं सिर्फ चार दीवारों में सीमित,
यही है नारीवाद की परिभाषा,
इसे सुनकर तुम्हें क्यों होती है निराशा,
अपनी दकियानूसी मानसिकता के साथ,
कहते हो किसी को इस तरह से नारीवाद,
नारीवादी कोई अपशब्द नहीं,
अपभाषा लहजे में बहुतो ने कही,
करो और मत तुम अर्थ का अनर्थ,
पहले सही से समझे नारीवाद का मतलब,
इसमें महिलाओं का पुरुषों पर वर्चस्व नहीं, बल्कि दोनों में समान अधिकारों की बात है कहीं,
राजनीति व शिक्षा पर हो बराबर का हक

शार्ट न्यूज

योगी सरकार की सख्ती : सीतापुर में शराब माफिया की एक करोड़ से अधिक की संपत्ति कुर्क

सीतापुर। योगी सरकार ने शराब माफियाओं पर नकेल कसना शुरू कर दिया है। इसी के क्रम में सीतापुर के महोली इलाके में अवैध शराब कारोबार करने वाले विजय वर्मा की एक करोड़ दस लाख रुपए कीमत की संपत्ति कुर्क करने का आदेश जिलाधकारी ने जारी किया था। उनके आदेश पर सम्पत्ति कुर्क की गई। उप जिलाधिकारी पूनम भास्कर तथा क्षेत्राधिकारी अमन सिंह के नेतृत्व में कोतवाली प्रभारी अनूप शुक्ला के द्वारा चौकी इंचार्ज रिछाही शीतला प्रसाद सिंह ने भारी पुलिसबल की मौजूदगी में गैंगस्टर एक्ट की धारा 14 (1) के जरिए पक्का मकान, धर्मकांटा,पालेसर, मेडिकल स्टोर, गुड़ बेल सहित चल अचल सम्पत्ति कुर्क करने की कार्यवाही की गई है। कोतवाली प्रभारी महोली के द्वारा माइक से मुनादी करा दी गई थी। लोगों को इस बात की जानकारी भी दी गई कि पूर्व में अवैध शराब का कारोबार इन लोगों के द्वारा किया जा रहा था। जिस पर कई महीने पूर्व यूपी एसटीएफ ने छापा मारकर अधिक मात्रा में कई ड्रम स्प्रिट, खाली पव्वे, रेपर व भरे हुए पव्वे बरामद किए थे। स्थानीय थाने पर मुकदमा पंजीकृत करवाया था। और जेल भेजने की कार्यवाही की गई थी। इसी क्रम में जिलाधिकारी के आदेश पर गैंगस्टर एक्ट की कार्रवाई की गई थी। इसके तहत शनिवार को कुर्की की कार्यवाही कर सम्पत्ति को सील कर दिया गया है।

पर्यटक स्थलों पर अतिक्रमण स्वीकार्य नहीं

झांसी। केंद्रीय रक्षा एवं पर्यटन राज्यमंत्री अजय भट्ट ने रविवार को कहा कि ऐतिहासिक पर्यटक स्थलों पर अतिक्रमण किसी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता। यहां हिंदी साहित्य भारती की बैठक में हिस्सा लेने आये केंद्रीय मंत्री ने यहां संवाददाताओं के साथ बातचीत में विभिन्न सवालों के जवाब दिये। इसी वार्ता के दौरान झांसी के ऐतिहासिक किले के परकोटे पर लगातार हो रहे अतिक्रमण को लेकर पूछे गये सवाल के जवाब में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अतिक्रमण नहीं होना चाहिए यह हमारी धाती हैं। यदि इस संबंध में हमें कोई पत्र प्राप्त होता है तो हम संबंधित संस्था या सरकार से बात कर अतिक्रमण रूकवाने का प्रयास करेंगे। यहां एक अन्य ऐतिहासिक धरोहर जराय का मठ क्षेत्र में सेना की जमीन पर बने इस ऐतिहासिक स्थल पर भी अतिक्रमण को लेकर जब मंत्री जी से सवाल किया गया तो वह फिर वहीं पुराना रटा रटाया ज्ञान ही देने में लग गये । एक टीचर के लहजे में अतिक्रमण के सवाल का जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अतिक्रमण करना अच्छी बात नहीं है ऐसा नहीं होना चाहिए। अतिक्रमण जहां भी हुए हैं वह हटाये जायेंगे।

हिंदी साहित्य भारती की बैठक में उठी हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने की मांग

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी में हिन्दी साहित्य भारती की दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक का रविवार को भव्य दीक्षान्त समारोह संपन्न हुआ। इस बैठक के दौरान विद्वानों के विचारविमर्श के साथ हिंदी को राजभाषा की जगह राष्ट्रभाषा बनाये जाने का प्रस्ताव रखा गया। यहां होटल द मारवलस में आयोजित दीक्षांत समारोह में केंद्र सरकार के रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री अजय भट्ट की मौजूदगी में सर्वसम्मित से हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने को लेकर प्रस्ताव पारित किया गया। केंद्र सरकार से यह माँग की गई कि संविधान में संशोधन करते हुए हिन्दी को राजभाषा के स्थान पर राष्ट्रभाषा बनाया जाए। संस्था के अन्तरराष्ट्रीय प्रभारी प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय ने यह प्रस्ताव रखा जिस पर कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की। संस्था के पदाधिकारियों ने यह प्रतिज्ञा ली कि वे हिन्दी भाषा को उसका दर्जा दिलाने के लिए पूरी ताकत से प्रयास करते रहेंगे।

ललितपुर : ट्रेन से गिरने से युवक की मौत

ललितपुर। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में रविवार को ट्रेन से गिरने के कारण एक युवक की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि ललितपुर-टीकमगढ़ रेलमार्ग पर कोतवाली सदर अंतर्गत ग्राम बिरारी रेलवे स्टेशन के पास आज एक युवक का शव रेल की पटरी पर पड़ा मिला। जानकारी मिलने पर पहुंचे ग्रामीणों ने उसकी शिनाख्त ग्राम बिरारी के ही सुनील कुशवाहा (26) के रूप में की। परिजनों ने बताया कि वह बीती 26 अगस्त को प्रयागराज गंगा स्नान करने के लिए गया हुआ था व किसी ट्रेन से लौटने को फोन किया था, लेकिन आज उसका शव रेल पटरियों पर पड़ा मिला। आशंका व्यक्त की जा रही है कि ट्रेन से उतरते समय गिरने से उसकी मौत हो गई। सदर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सन्तोष सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है व पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंहगाई व बेरोज़गारी के मुद्दे पर झांसी में आप ने निकाली पदयात्रा

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी में आम आदमी पार्टी (आप) के कार्यकर्ताओं ने मंहगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर रविवार को पदयात्रा निकाली। आप के जिला प्रभारी दीनदयाल काका तथा जिलाध्यक्ष अरशद खान के नेतृत्व में निकाली गयी पदयात्रा की शुरूआत यहां लक्ष्मीबाई पार्क से की गयी। पार्क स्थित रानी झांसी की प्रतिमा के समक्ष तिरंगा शाखा का आयोजन किया जिसके बाद पदयात्रा निकाली गई। लक्ष्मीबाई पार्क से आरंभ होकर पदयात्रा इलाइट चैराहा, जेल चैराहा होते हुए, कचहरी चैराहा स्थित गांधी उद्यान पर सम्पन्न हुई। इस पदयात्रा में पार्टी की मेन बॉडी के अलावा , महिला प्रकोष्ठ, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ, युवा प्रकोष्ठ, छात्र सभा सीवाईएसएस सहित विभिन्न प्रकोष्ठों के कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। कार्यकर्ता अपने हाथों में मंहगाई, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार से संबन्धित नारे व स्लोगन लिखी तख्तीयाँ व पोस्टर लेकर चर रहे थे तथा केन्द्र सरकार के खिलाफ नारेबाज़ी कर रहे थे। इस दौरान पार्टी के जिला प्रभारी दीनदयाल काका ने कहा मंहगाई से आम जनता बूरी तरह से त्रस्त है, बेरोज़गार युवा नौकरी के लिये भटक रहे है, जब तक मंहगाई व बेरोज़गारी पर अंकुश नहीं लगता हमारा आंदोलन जारी रहेगा।

सुरक्षित रूप से संपन्न हुआ ट्विन टावर का ध्वस्तीकरण : प्राधिकरण

गौतमबुद्धनगर। उत्तर प्रदेश के नोएडा में सेक्टर 93ए स्थित सुपरटेक के ट्विन टावर के निर्माण में भ्रष्टाचार की शिकायतें सही पाये जाने पर उच्चतम न्यायालय के आदेश पर रविवार को नोएडा विकास प्राधिकरण की निगरानी में दोनों टावर को सुरक्षित रूप से ध्वस्त कर दिया गया। प्राधिकरण की ओर से जारी बयान के अनुसार पिछले साल 31 अगस्त को पारित उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार ट्विन टावर्स को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ निर्देशन में नोएडा प्राधिकरण द्वारा रविवार को दोपहर 02:30 बजे मुम्बई की कंपनी एडिफाईस इंजीनियरिंग तथा साउथ अफ्रीका की जेट डिमॉलिशन एजेंसी के माध्यम से सुरक्षित रूप से ध्वस्त कर दिया गया। बयान के अनुसार ट्विन टावर्स को बारूद से ध्वस्त करने के लिये रिमोट कंट्रोल का बटन दबाने का काम एडिफाईस इंजीनियरिंग की पांच सदस्यीय टीम ने किया। बटन दबाये जाते समय एक पुलिसकर्मी भी उपस्थित थे। बटन दबाने के 15 मिनट के बाद एडिफाईस इंजीनियरिंग द्वारा यह घोषणा की गयी कि ध्वस्तीकरण सुरक्षित रूप से पूर्ण कर लिया गया है।

स्मृति ईरानी ने रायबरेली मे जानी सरकारी योजनाओं की वास्तविक स्थिति

रायबरेली। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने रविवार को उत्तर प्रदेश के रायबरेली में चल रही विभिन्न सरकारी योजनाओं की वस्तुस्थित का जायजा लिया। ईरानी ने यहां बचत भवन में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति दिशा की बैठक की अध्यक्षता की, जिसमे उन्होंने जनप्रतिनिधियों के साथ प्रशासन के साथ विकास योजनाओं की समीक्षा के साथ कई बिंदुओं पर चर्चा की । इसके अलावा उन्होंने क्रिप्टो रिलीफ कमांड सेंटर का लोकार्पण किया, निमंत्रण के बावजूद रायबरेली की सांसद सोनिया गांधी बैठक से अनुपस्थित रही। बैठक में जनप्रतिनिधियों के साथ उन्होंने विकास योजनाओं की समीक्षा की। साथ ही 43 बिंदुओं पर चर्चा हुई। इसके अलावा उन्होंने क्रिप्टो रिलीफ कमांड सेंटर का लोकार्पण भी किया।

पूर्वांचल की 7 पार्टियों ने मिलकर बनाया भारतीय लोकतांत्रिक गठबंधन

परिवारवादी पार्टियों को उखाड़ने का लिया संकल्प

एजेंसी

पूर्वांचल। पूर्वांचल की राष्ट्रीय समता पार्टी सहित सात पार्टियों ने मिलकर भारतीय लोकतांत्रिक गठबंधन बनाया है। रविवार को वाराणसी के शिवपुर लक्ष्मी वाटिका में इन पार्टियों की बैठक हुई। इन पार्टियों में राष्ट्रीय समता पार्टी, बहादुर आम आदमी पार्टी, भारत माता पार्टी, भामा शाह भारतीय जन पार्टी, भारतीय कार्यरत पार्टी, छत्रपति शिवजी गरीब पार्टी और सुहेलदेव पार्टी शामिल है। हाल ही में शशि प्रताप सिंह ने सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभसपा) छोड़कर समता पार्टी का गठन किया है।

इस मौके पर राष्ट्रीय संयोजक शशि प्रताप सिंह ने बताया कि परिवारवादी पार्टियों द्वारा मोर्चा बनाकर जनता को

गुमराह कर जिन पार्टियों के हिस्से को लूटा गया है उनको बेनकाब करने के लिए आज भारतीय लोकतांत्रिक गठबंधन बना है।

शशि प्रताप सिंह के मुताबिक भारतीय लोकतांत्रिक गठबंधन का ये एजेंडा होगा।

1-जो वादे करो उसे पूरा करो।

2-वंशवादी पार्टियों के नक्सलवाद को रोकना।

3-जल्द से जल्द लखनऊ में कार्यकर्ता सम्मेलन।

4-परिवारवादी पार्टियों को रोकने के लिए दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना प्रर्दशन।

5-राइट टू प्रॉमिस को कानून को लाया जाए।

6-विधायक सांसद की पेंशन को बंद किया जाए।

राष्ट्रीय संयोजक शशि प्रताप सिंह ने बताया कि सभी पार्टियों का प्रभाव पूर्वांचल के 30 जिलों में हैं।

ये लोग रहे मौजूद

इस आयोजन की अध्यक्षता रासपा राष्ट्रीय अध्यक्ष कैप्टन राजकुमार ने किया, धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय अध्यक्ष महिलामंच दीदी वंदना सिंह ने किया। वहीं संचालन राष्ट्रीय सलाहकार राजकुमार गुप्ता और स्वागत डॉ0 रामगोविंद ने किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपस्थित राष्ट्रीय कोर कमेटी के ठाकुर काशी सिंह, टुनटुन पांडेय, पुनवसी प्रजापति, प्रकाश जायसवाल, राजेंद्र गांधी कुशवाहा, रामसागर बिंद, गुलाब राजभर, मनोज चक्रवाल, अशोक कुमार और जयनाथ यादव लोग मौजूद रहे।

प्रेमिका के नंबर से कॉल कर प्रेमी को अकेले में बुलाया, फिर पीट-पीटकर की हत्या

एजेंसी

दीदारगंज। उत्तर प्रदेश के जौनपुर में एक युवक की बेहरमी से पीट-पीटकर हत्या करने का मामला सामने आया है। युवक को प्रेमिका के नंबर से कॉल कर अकेले मिलने के लिए बुलाया गया। युवक जब अपने दो दोस्तों के साथ मिलने पहुंचा तो वहां मौजूद कुछ लोगों ने उसकी पीट-पीटकर हत्या कर दी। युवक के दो दोस्तों में से एक दोस्त की भी जमकर धुलाई कर दी।

वहीं आरोपियों ने तीसरे दोस्त को जान से मारने की धमकी देते हुए छोड़ दिया। गंभीर रूप से घायल युवक का इलाज चल रहा है। पुलिस मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश कर रही है।

ये मामला आजमगढ़ के दीदारगंज थाना क्षेत्र का है। जहां रंगडीह गांव के रहने वाले 22 वर्षीय पंकज राजभर को शनिवार रात फोन करके नाटोली गांव बुलाया गया।

जिसके बाद पंकज अपने दो दोस्त अजीत और हरेंद्र के साथ बाइक से अपनी प्रेमिका से मिलने निकल गया। लेकिन रास्ते में ही चार-पांच लोगों ने बाइक रुकवाकर पंकज को पीटने लगे। वहीं पंकज बचाने की कोशिश कर रहे अजीत को भी लोहे की रॉड से पीटने लगे। वहीं आरोपियों ने हरेंद्र को धमकी देकर छोड़ दिया।

जिसके बाद हरेंद्र गंभीर रूप से घायल पंकज और अजीत को लेकर गांव पहुंचा।

लेकिन रास्ते में ही पंकज ने दम तोड़ दिया। परिजनों ने पंकज को मरा देख क्षुब्ध हो गए। वहीं अजीत को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, उसकी हालात नाजुक है। गांव वालों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी है।

पुलिस के मुताबिक पंकज की दोस्ती उसके बुआ के गांव की एक लड़की से हो गया था। इसकी भनक लड़की के घर वालों को लग गई। वहीं पंकज के पिता जगदीश ने लड़की के परिजनों पर हत्या का मामला दर्ज करवाया है।

मुख्तार अंसारी की बीवी को लेकर सतर्क हुई ईडी, लुक आउट सर्कुलर जारी

प्रयागराज। माफिया मुख्तार अंसारी के विधायक बेटे अब्बास अंसारी के फरार होने के बाद ईडी मुख्तार की पत्नी अफ्सा अंसारी को लेकर सतर्क हो गई है। ईडी ने अफ्सा पर शिकंजा कस दिया है। उनके फरार होने की आशंका के मद्देनजर प्रवर्तन निदेशालय ने लुक आउट सर्कुलर जारी करा दिया है। मुख्तार की पत्नी देश छोड़कर नहीं भाग पाएंगी। मुख्तार के बेटे को पुलिस ने पहले ही वांछित किया है। बांदा जेल में बंद मुख्तार अंसारी के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग का मुकदमा दर्ज करके प्रवर्तन निदेशालय की टीम जांच कर रही है। इसी क्रम में ईडी ने गाजीपुर लखनऊ और दिल्ली के 12 ठिकानों पर छापामारी की गई थी, जिसमें लेन-देन के कई प्रमाण मिले थे। इसी आधार पर ईडी ने मुख्तार अंसारी के ससुर, साले, गाजीपुर के प्रॉपर्टी डीलर, सर्राफ समेत आधा दर्जन से अधिक को नोटिस जारी करके सिविल लाइंस स्थित कार्यालय में बयान के लिए बुलाया है।

बीएचयू छात्रा से लंफगों ने की छेड़छाड़, विरोध करने पर दोस्त को भी पीटा

वाराणसी। वाराणसी के बीएचयू परिसर में युवती के साछ छेड़छाड़ और मारपीट का मामला सामने आया है। ये घटना 21 अगस्त की शाम कंप्यूटर सेंटर चौराहे की है। छात्रा के तगरीर पर लंका थाना की पुलिस ने हर्ष यादव, रंजीत यादव और आनंद यादव पर छेड़खानी, मारपाटी और धमकी की धारा के तहत केस दर्ज कर लिया है।

बलिया के नरही थाना क्षेत्र की रहने वाली युवती बीएचयू से ग्रेजुएशन कर रही है। युवती ने पुलिस को बतयाा कि बस्ती के गौर निवासी युवक उसका

दोस्त है। 21 अगस्त की शाम वह अपने दोस्त के साथ पढ़ाई के लिए कंप्यूटर सेंटर चौराहे से सेंट्रल लाइब्रेरी जा रही थी। तभी चौराहे पर 20 से 25 बाइक पर सवार होकर तकरीबन 60 लड़के जाते दिखे। एक बाइक पर हर्ष यादव और उसके साथ बैठ अन्य युवक अश्लील इशारे करते हुए फब्तियां कसने लगे। जब छात्रा के दोस्त ने विरोध किया तब हर्ष, ब्रजनाथ हॉस्टल में रहने वाले रंजीत यादव और आनंद यादव को लेकर आया और छात्रा के दोस्त को पीटने लगा। इसके अलावा हर्ष ने छात्रा से छेड़खानी करते हुए उसका हाथ खींचने लगा।

इसके बाद छात्रा के दोस्त के परिचित छात्र ने प्रॉक्टोरियल बोर्ड को इस बात की सूचना दी। छात्रा, उसका दोस्त और परिचित छात्र समेत दो अन्य सीर गेट की ओर गए तो वहां पर हर्ष, रंजीत और अमन पहले से खड़े थे। वहां छात्रा के दोस्त के परिचित युवकों की फोटो लेने लगा। इस पर हर्ष, रंजीत, अमन और एक अन्य ने उसे जमकर पीटा।

वहां मौजूद प्रॉक्टर कर्मियों ने युवक को बचाया और लंका थाने ले गए। लंका थाना प्रभारी बृजेश सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के जरिये छानबीन की जा रही है।

महोबा में पुलिस की थर्ड डिग्री, मारपीट से युवक हुआ बहरा

पहले डाली गर्म चाय, फिर कान में घुसेड़ा नुकीला तार, छह पर मुकदमा

महोबा। यूपी में एक बार फिर पुलिस द्वारा थर्ड डिग्री का मामला सामने आया है। पुलिस ने एक युवक की बेरहमी से पिटाई कर दी, जिससे उसके कान के पर्दे फट गए। कान के पर्दे फट जाने से युवक बहरा हो गया। युवक ने इसकी शिकायत मानवाधिकार आयोग से की तो जांच बैठ गई। मानवाधिकार आयोग की जांच में दारोगा समेत छह पुलिसकर्मी दोषी पाए गए, जिनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

मामला यूपी के महोबा का है। श्रीनगर थाना क्षेत्र के पवा गांव निवासी भारत सिंह ने मानवाधिकार आयोग को दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि दो अप्रैल 2022 को वह घर पर था तभी प्रधान पति हरिओम राजपूत श्रीनगर थाना में

तैनात दरोगा सुरेन्द्र नाथ, सिपाही उपेन्द्र, सिपाही रोहित और सिपाही राजीव यादव आए और मारपीट कर जबरन थाने ले आए। पीड़ित ने बताया कि यहां थाने लाकर पुलिस ने उसे थर्ड डिग्री दी। तत्कालीन थानाध्यक्ष अनिल कुमार ने मारपीट करते हुए उस पर गर्म चाय डाल दी। पुलिस कर्मियों का जब इतने से भी मन नहीं भरा तो उसके कान में नुकीला तार डाल दिया जिससे कान के पर्दे फट गए। इसके बाद उसकी हालत बिगड़ गई।

पीड़ित ने बताया कि पुलिस तीन अप्रैल 2022 को उसे जिला अस्पताल उपचार कराने के लिए लेकर आई जहां डॉक्टरों ने हालत नाजुक होने पर मेडिकल कॉलेज झांसी रेफर कर दिया, लेकिन पुलिस कर्मी कानपुर लेकर गए और मनमाने तरीके से उपचार कराया। पुलिस द्वारा गर्म चाय शरीर में डालने से शरीर में छाले पड़ गए। मामले को गंभीरता से लेते हुए मानवाधिकार आयोग ने मामला दर्ज करने के निर्देश दिए।

आयोग के निर्देश पर थाना प्रभारी अनिल कुमार, प्रधानपति हरिओम उर्फ पप्पू, उपनिरीक्षक सुरेन्द्र नाथ, सिपाही उपेन्द्र, सिपाही रोहित, राजीव यादव के खिलाफ जानलेवा हमले सहित संगीन धाराओं में केस दर्ज किया गया है। थाना प्रभारी दिनेश तिवारी ने बताया कि मानवाधिकार आयोग के निर्देश पर मामला दर्ज करते हुए छानबीन शुरू कर दी गई है। विवेचना उप निरीक्षक शिव स्वरूप सिंह को सौंपी गई है।

थाना प्रभारी को किया गया था निलंबित

थर्ड डिग्री के आरोपों के बाद मामला सुर्खियां बना तो पुलिस अधीक्षक सुधा सिंह ने थाना प्रभारी अनिल कुमार को निलंबित कर दिया था जबकि दरोगा सहित तीन सिपाहियों को भी लाइन हाजिर किया गया था। पुलिस अधीक्षक की कार्रवाई के बाद पीड़ित ने मानवाधिकार आयोग में तहरीर दी जिस पर कार्रवाई की गई।

वाराणसी : गंगा में बढ़ाव जारी, दर्जनभर पॉश कॉलोनियां पानी से घिरीं, छत बनी सहारा

वाराणसी। वाराणसी में गंगा के जलस्तर में रविवार को भी बढ़ाव जारी रहा। रफ्तार एक सेमी प्रतिघंटे की दर से रही, लेकिन इसका प्रभाव अब पॉश कॉलोनियों में होने लगा है। सामनेघाट के सामने करीब दर्जनभर से अधिक कॉलोनियों की करीब 100 से ज्यादा मकान पानी में घिर गए हैं। बहुमंजिली भवन में रहने वाले इलाके बाढ़ प्रभावित लोग अपने ही मकान में शरण लिये हैं। छत पर शरण लिए लोगों के लिए सुबह की बारिश काल बन गई। हालांकि थोड़ी बारिश होने से ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। उधर, वरुणा तटवर्ती इलाकों को बाढ़ तेजी से अपने आगोश में ले रहा है। सीवर पाइप लाइन के जरिए कॉलोनियों में मुहल्लों में पानी चला आया। नमो घाट पर नमस्कार की मुद्रा वाली आकृति को डूबने अब कुछ ही घंटे बाकी हैं। बाकी अन्य पक्के घाटे भी धीरे-धीरे डूबते जा रहे हैं। शीतलाघाट के जरिए पानी सड़क होते हुए सब्जी मंडी तक पहुंच गई है। ग्रामीण इलाकों में रमना, डाफी, चिरईगांव, व चौबेपुर आदि इलाकों के दर्जनभर से अधिक गांवों का सम्पर्क आसपास से कट गया है। बाढ़ की विभीषिका को देखते हुए जिलाधिकारी कौशलराज शर्मा सामनेघाट के इलाकों का हाल जानने के लिए एनडीआरएफ के मोटर बोट से दौरा किया। उन्होंने बाढ़ प्रभावित से मिलकर उन्हें मदद का आश्वासन दिया। साथ ही नीचले इलाकों में रह रहे लोगों को बाढ़ राहत शिविर में जाने का अनुरोध किया। रविवार को कई संस्थाएं बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए उतर आई हैं। भाजपा की ओर से करीब दो दर्जन से अधिकार कार्यकर्ता अलग-अलग इलाकों में भ्रमण कर सूखा राहत सामाग्री वितरित कर रहे हैं।

यूपी में मर चुके लोगों के नाम पर लोन का फर्जीवाड़ा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में कोरोना से मरे हुए लोगों की फर्जी आईडी के जरिये बैंक से करोड़ों रुपये का लोन लेने का मामला सामने आया है। लखनऊ की विभूति खंड पुलिस ने फर्जीवाड़े में शामिल दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि ये लोग कोरोना वायरस से मर चुके लोगों की आईडी के जरिये बैंक से लोन लेते थे। पुलिस के मुताबिक इस गिरोह का सरगना पहले इंश्योरेंस कंपनी में काम कर चुका है।

डीसीपी प्राची सिंह के मुताबिक कानपुर रोड के पास स्थित ।।छ्स्न्ष्ट बैंक के मैनेजर अतुल भारती ने विभूति खंड थाने में एफआईआर दर्ज कराई थी। एफआईआर में बैंक मैनेजर ने बताया था कि एक शख्स ने फर्जी डॉक्यूमेंट के जरिये बैंक लोन अप्रूव कराया है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया और फिर दो लोगों को गिरफ्तार किया। पहला आरोपी मृगांक सहाय रायबरेली के न्यू राना नगर का निवासी है और दूसरा अभिषेक भारती दूरभाष नगर का रहने वाला है। पुलिस के मुताबिक आरोपियों ने अब तक करीब 24 बैंकों से लोन लिया है जो कि अप्रूव हो चुका है, यह रकम करोड़ों में है। आरोपियों ने कुछ दिन पहले ही एचडीएफसी बैंक में एक करोड़ रुपये के लोन के लिए आवेदन किया था। बैंक मैनेजर को शक होने पर उसने आधार कार्ड और पैन कार्ड की जांच की. जिसके बाद दस्तावेज फर्जी निकले। बैंक मैनेजर ने उसके बाद उनकी शिकायत विभूति खंड पुलिस से की।

पत्नी को यमुना पुल से दिया धक्का, बच कर पुलिस से की शिकायत, पति गिरफ्तार

आगरा। आगरा में रुनकता (सिकंदरा) निवासी एक युवक ने बटेश्वर (बाह) में यमुना पुल से धक्का देकर पत्नी की हत्या का प्रयास किया। आए दिन झगड़े से परेशान था। मायके वालों की सूचना पर पुलिस ने पति को पकड़ लिया। उसे फिरोजाबाद पुलिस के सुपुर्द किया है। सिरसागंज के नगला मदारी (फिरोजाबाद) निवासी संतोषी की शादी आठ वर्ष पहले खुशालपुर, नारखी (फिरोजाबाद) निवासी अरविंद से हुई थी। अरविंद परिवार के साथ सिकंदरा के रुनकता इलाके में किराए पर रहता है। दो बच्चे हैं। शुक्रवार को झगड़ा हुआ था। विवाहिता के भाई चंद्रकात ने पुलिस को बताया कि अरविंद ने संतोषी को बटेश्वर दर्शन के बहाने बाइक पर साथ ले गया था।

पानी बहाने के झगड़े में डबल मर्डर

देवरिया में चाचा-भतीजा ने चाकू मार ले ली एक-दूसरे की जान

एजेंसी

देवरिया। यूपी के देवरिया में बारिश के दौरान छत से बह रहे पानी को लेकर चाचा-भतीजा ने एक-दूसरे को चाकू मारकर मौत के घाट उतार दिया। इस घटना को लेकर पूरे इलाके में शोक फैल गया। देवरिया के एसपी ने भी जिला अस्पताल पहुंचकर घटना के बारे में पूरी जानकारी ली।

मिली जानकारी के अनुसार रामपुर कारखाना थाना क्षेत्र के सिधुआ गांव के रहने वाले रोज मोहम्मद और लाल मोहम्मद सगे भाई हैं।

लाल मोहम्मद इस समय सऊदी अरब गए हैं। वह वहां राजगीर मिस्त्री का काम करते हैं। उनका बेटा सलमान (उम्र 19 वर्ष) घर पर था। बारिश होने

की वजह से रविवार की सुबह लाल मोहम्मद के घर की छत का पानी रोज मोहम्मद की जमीन में गिरकर बह रहा था। इसी बात को लेकर दोनों परिवारों में विवाद हो रहा था। उसी दौरान लाल मोहम्मद के बेटे सलमान और रोज मोहम्मद (उम्र 45 वर्ष) ने चाकू से एक-दूसरे पर हमला कर दिया। दोनों ने ताबड़तोड़ एक दूसरे को कई बार चाकू घोंप दिया। इस घटना में दोनों बुरी तरह से घायल हो गए। खून से लथपथ दोनों को परिजन व ग्रामीण लेकर जिला अस्पताल पहुंचे जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही एसपी संकल्प शर्मा इमरजेंसी पर पहुंचे। वारदात की जानकारी लेते हुए उन्होंने मातहतों को कार्रवाई का निर्देश दिया। घटना के बाद सिधुआ गांव में पुलिस तैनात कर दी गई है।

चोरी की बाइकों का गजब कलेक्शन, डिस्कवर से लेकर बुलेट तक शामिल, तीन गिरफ्तार, दो फरार

बदायूं उधैती। बदायू में पुलिस ने आटोलिफ्टर गैंग का खुलासा किया है। तीन आटोलिफ्टर पुलिस ने गिरफ्तार किए हैं। जबकि इस गैंग के दो शातिर फरार हैं। इनके पास से पुलिस ने चोरी की आठ बाइक बरामद की हैं। पुलिस ने जिन चोरों को पकड़ा है उन्होंने एक से एक गाड़ियों का कलेक्शन कर रखा था। चोरों के कलेक्शन में डिस्कवर से लेकर बुलेट तक शामिल थी। सभी के खिलाफ लिखापढ़ी के बाद कोर्ट ले जाने से पहले पुलिस ने उन्हें एसएसपी डॉ. ओपी सिंह व एसपी देहात सिद्धार्थ वर्मा के सामने पेश किया।

एसएसपी ने बताया, उघैती थाना पुलिस ने चेकिंग के दौरान खंडवा अमानाबाद तौराहे से टिंकू, शिशुपाल व जितेंद्र निवासीगण गांव खंडवा को गिरफ्तार कर लिया। इनके दो साथी वहां से भाग निकले। आरोपियों की निशानदेही पर चोरी की आठ बाइकें बरामद हुईं। जबकि आरोपियों के पास से एक तमंचा 12 बोर व चाकू भी मिला।

आरोपियों ने कबूला कि बाइकें चोरी करने के बाद उन पर फर्जी नंबर प्लेट लोकल नंबर की लगा लेते हैं। खासियत यह रहती है कि संबंधित मॉडल की बाइक पर उसी मॉडल की बदायूं पर चलने वाली बाइक का नंबर लगाया जाता है। इससे कोई ग्राहक अगर किसी ऐप पर चेक करता है तो सूचना सही निकलती है और भरोसे में आ जाता है। इसके बाद बाइक कम दाम में उसे बेच देते हैं। जबकि बाद में वाहन नाम कराने का आश्वासन भी देते हैं।

ये भाग निकले आरोपी

पुलिस के मुताबिक उघैती के ही कोठा गांव का मुनीश व संभल के थाना धनारी इलाके के गांव हिम्मतपुर का यशपाल फरार हो गया है। उसकी तलाश की जा रही है।

सीतापुर में बुखार का कहर, कई गांव में 100 अधिक मरीज

सीतापुर। यूपी के सीतापुर जिले में महोली के इलाके में बुखार कहर बरपा रहा है। जगदेवा, फखरपुर, देवरिया, फरीदपुर सहित कई गांवों में 100 से लोग अधिक बीमार हैं। अभी तक गांव में स्वास्थ विभाग की तरफ से कोई टीम नहीं पहुंची है। मरीज गांव के झोला छाप डॉक्टर से इलाज कराने को मजबूर हैं। जगदेवा निवासी विपिन उम्र (32) कैलाश नाथ (48) वेद प्रकाश (35) रामू (40) फखरपुर निवासी लाल बिहारी(55) राम सागर (50) अमित(18) मोनू (15) गजेंद्र (8) हुलासी (30) इसी प्रकार देवरिया, मुजफ्फरपुर, फरीदपुर सहित 100 से अधिक लोग बुखार से बीमार चल रहे हैं।

यूपी में बना लंपी से निपटने को हॉस्पिटल, संक्रमित पशुओं को लगेगी वैक्सीन

बरेली। लंपी स्किन डिजीज के मामले बढ़ने पर पशुपालन विभाग ने एहतियाती कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। पशुपालन विभाग ने लंपी डिजीज से निपटने के लिए रामनगर में इमरजेंसी हॉस्पिटल शुरू कर दिया है। हॉस्पिटल में सीवीओ ने तीन विशेषज्ञ डॉक्टरों को तैनात किया है। यह डॉक्टर लंपी स्किन डिजीज के साथ पशुओं की दूसरी गंभीर बीमारियों का भी उपचार करेंगे।

भोजीपुरा क्षेत्र में पांच गायों में लंपी स्किन डिजीज की आईवीआरआई के वैज्ञानिकों ने पुष्टि की है। लंपी वायरस की दस्तक के बाद पशुपालन विभाग के अधिकारी रोकथाम के इंतजाम करने में जुट गए हैं। सभी गोशालाओं में मक्खी और मच्छरों को नियंत्रित करने के लिए सैनिटाइजेशन और फॉगिंग का अभियान चलाया जा रहा है।

गोशालाओं में गोवंश की जांच के लिए डॉक्टरों की तैनाती कर दी गई है। इसके अलावा डीएम ने जिला स्तरीय अधिकारियों को गोशालाओं के निरीक्षण की जिम्मेदारी दी है। ताकि लंपी वायरस के संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। पशुधन व दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह के आदेश पर पशुपालन विभाग ने रामनगर में इमरजेंसी हॉस्पिटल का संचालन शुरू कर दिया।

शार्ट न्यूज

रिलायंस की समूह की वार्षिक महासभा सोमवार को, 5जी सेवा पर बड़ी घोषणा की उम्मीद

मुंबई। पेट्रोलियम और दूरसंचार से लेकर खुदरा स्टोर जैसे विविध कारोबार में लगी रिलायंस इंडस्ट्रीज लि (आरआईएल) के शेयरधारकों की सोमवार को होने जा रही 45वीं वार्षिक आम बैठक में रिलायंस समूह के मुखिया मुकेश अंबानी 5जी दूरसंचार सेवा बाजार के बारे में कुछ बड़ी घोषणाएं कर सकते हैं। उद्योग जगत के सूत्रों ने यह जानकारी दी। आरआईएल की ओर से मीडिया को जारी परामर्श के अनुसार यह बैठक 29 अगस्त को दोहपर बाद दो बजे शुरू होगी। आमंत्रित प्रतिभागी इसमें दृश्य-श्रव्य माध्यम से जुड़ सकेंगे। इस बैठक में आरआईएल के चेयरमैन मुकेश अंबानी का संबोधन दो बजे के कुछ ही देर बाद शुरू होगा। सूत्रों ने कहा, "जिस तरह सितंबर 2014 में रिलायंस जियो की 4जी सेवाएं शुरू किए जाने के समय चेयरमैन ने उस समय सस्ता डाटा देने और काल सुविधा मुफ्त करने की धमाकेधमाकेदार घोषाणा की थी, कुछ उसी तरह की बड़ी घोषणाएं जियो द्वारा कल 5जी सेवाओं के क्षेत्र में किए जाने की उम्मीद है।" बैठक में रिलायंस समूह के चेयरमैंन के साथ आरआईएल के निदेशक मंडल के सदस्यगण, समूह की अन्य कंपनियों के संचालन मंडल के सदस्यों के अलावा रिलायंस जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी और अंबानी परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहने की संभावना है।

विदेशी मुद्रा भंडार 6.7 अरब डॉलर घटकर 564.05 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में कमी आने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार 19 अगस्त को समाप्त सप्ताह में 6.7 अरब डॉलर घटकर लगातार तीसरे सप्ताह गिरता हुआ 564.05 अरब डॉलर रह गया। इसके पिछले सप्ताह विदेशी मुद्रा भंडार में 2.24 अरब डॉलर की कमी आई और यह घटकर लगातार दूसरे सप्ताह गिरता हुआ 570.74 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 19 अगस्त को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 5.8 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 501.21 अरब डॉलर रह गयी। इस अवधि में स्वर्ण भंडार भी 70.4 करोड़ डॉलर घटकर 39.91 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर 14.6 करोड़ डॉलर की कमी हुई और यह घटकर 17.98 अरब डॉलर पर रहा। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि 5.8 करोड़ डॉलर की गिरावट लेकर 4.93 अरब डॉलर पर आ गई।

बीते सप्ताह कीमती धातुओं की चमक रही फीकी

मुंबई। वैश्विक बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर मांग कमजोर रहने से बीते सप्ताह घरेलू सर्राफा बाजार में सोना 242 रुपये प्रति दस ग्राम और चांदी 350 रुपये प्रति किलोग्राम उतर गई। समीक्षाधीन सप्ताह में वैश्विक बाजार में कीमती धातुओं में मिलाजुला रुख रहा। सोना हाजिर 3.95 डॉलर प्रति औंस गिरकर सप्ताहांत पर 1745.99 डॉलर प्रति औंस पर आ गया। वहीं, अमेरिकी सोना वायदा 1.8 डॉलर प्रति औंस बढ़कर 1751.80 डॉलर प्रति औंस हो गया। इसी तरह सप्ताहांत पर चांदी हाजिर 0.04 डॉलर प्रति औंस की बढ़त लेकर 19.13 डॉलर प्रति औंस रही। बीते सप्ताह देश के सबसे बड़े वायदा बाजार एमसीएक्स में सप्ताहांत पर सोना 242 रुपये उतरकर 51267 रुपये प्रति दस ग्राम पर आ गया। इस दौरान सोना मिनी 258 रुपये गिरकर 51276 रुपये प्रति दस ग्राम पर रही। इसी तरह समीक्षाधीन अवधि में चांदी 350 रुपये सस्ती होकर 55130 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। वहीं, चांदी मिनी 450 रुपये मजबूत होकर सप्ताहांत पर 56690 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें यथावत

नयी दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों के फिर से 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंचने के बीच घरेलू स्तर पर आज भी पेट्रोल और डीजल के दाम यथावत बने रहे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सप्ताहांत में लंदन ब्रेंट 100.99 डॉलर प्रति औंस पर और अमेरिकी क्रुड 0.49 प्रतिशत चढ़कर 92.97 डॉलर प्रति औंस बोला गया था। घरेलू स्तर पर तेल विपणन करने वाली कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर यथावत है। पिछले दो महीने से अधिक समय से तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल और डीजल के दाम क्रमशः 106.31 रुपये प्रति लीटर और 94.27 रुपये प्रति लीटर हैं। देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

इंदौर किराना बाजारः शक्कर, खोपरा गोला में मजबूती साबूदाना सस्ता

इंदौर। सियागंज किराना बाजार में सप्ताहांत ग्राहकी ऊपर नीचे होती रही। शक्कर में उठाव बढ़ा रहा। खोपरा गोला तथा बूरा सस्ता बिका हल्दी में मांग रही। साबूदाना गिरावट लिए रहा। स्थानीय किराना बाजार में सोमवार को शक्कर 3650 से 3700 रुपये प्रति क्विंटल खुलने के शनिवार को 3640 से 3680 रुपये बोली गई। शक्कर की दैनिक आवक 07 से 08 गाड़ी की रही। खोपरा गोला 180 से 200 रुपये प्रति किलो के स्तर पर खुलने के बाद 175 से 190 रुपये होकर बिका। खोपरा बूरा भी 250 रुपये प्रति 15 किलोग्राम सस्ता बिका। साबूदाना में पूछपरख घटने से गिरावट दर्ज की गई। हल्दी में मांग सुधार लिए रही इसमें व्यापार 100 से 162 रुपये की रंगत पर सौदे हुए। खोपरा बूरा में कामकाज 2000 से 3250 रुपये प्रति 15 किलोग्राम पर खुलने के बाद 2000 से 3500 रुपये बिका। साबूदाना में उठाव कमी से नरमी रही।

इंदौर अनाज मंडीः तुअर, मूंग, मसूर, उड़द में गिरावट

इंदौर। स्थानीय संयोगितागंज अनाज मंडी में मांग कमी साथ सप्ताहांत दलहन जिन्सों में भाव गिरावट लिए बताए गए। इस दौरान दालों में मन्दा रहा। तुअर, मूंग तथा मसूर दाल सहित उड़द मोगर में भाव कम हुए। चावल में उठाव बताया गया। सप्ताहांत चना कांटा 5000 से 5025 रुपये खुलने के बाद 4850 से 4900 रुपये होकर बंद हुआ। मूंग 6400 से 6550 रुपये पर खुलने के बाद नीचे में 5500 रुपये बिकी। हालांकि सप्ताहांत इसमें सौदे 6400 से 6500 रुपये प्रति क्विंटल पर हुए। कारोबार में तुअर 7000 से 8200 रुपये खुलकर 6700 से 7900 रुपये बिकी। उड़द 7400 से 7600 रुपये खुलकर इसी स्तर पर थमा। मसूर 6400 से 6450 रुपये के स्तर पर खुलने के बाद 6200 से 6250 रुपये होकर प्रति क्विंटल बिकी। दालों में मांग घटी रही। सप्ताहांत तुअर, मूंग दाल, मूंग मोगर, उड़द मोगर के साथ मसूर दाल में भाव कम हुए। कारोबार के मध्य चावल तथा पोहा में ग्राहकी सुधार लिए रही।

सर्राफा बाजारः सोना, चांदी में मजबूती

इंदौर। सप्ताहांत सोना तथा चांदी मजबूती लिए बताए गए। इस दौरान सोना 300 रुपये तथा चांदी 400 रुपये ऊंची होकर बिकी। चांदी सिक्का मजबूत बताया गया। कारोबार की शुरुआत में सोना 52400 रुपये पर खुलने के बाद शनिवार के दिन 52700 रुपये प्रति दस ग्राम होकर थमा। चांदी में व्यापार की शुरुआत 56250 रुपये पर हुई वहीं शनिवार के दिन 56650 रुपये बिकी। कामकाज में सोना ऊंचे में 53000 नीचे में 52300 रुपये प्रति 10 ग्राम बिका। व्यापार में चांदी ऊपर में 57200 तथा नीचे 56300 रुपये प्रति किलोग्राम बिकी। चांदी सिक्का पूछपरख से मजबूत बताया गया। विदेशी बाजार में सोना 1738 डॉलर तथा चांदी 1890 सेन्ट प्रति औंस बिकी।

दिल्ली में एलांटिस हेल्थकेयर की शुरुआत, प्रेग्नेंसी से लेकर त्वचा संबंधी बीमारियों का एडवांस टेक्नोलॉजी की मदद से होगा इलाज

- दिल्ली के लाजपत नगर-4 में शुरू किया गया एलांटिस अस्पताल
- महिलाओं की डिलीवरी होगी बेहद सुरक्षित, बच्चों की केयर के विशेष इंतजाम
- अस्पताल में 30 साल से ज्यादा के अनुभव वाले डॉक्टर्स से मिलेंगी सेवाएं

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर के लोगों की स्वास्थ्य सेवा में 30 साल से ज्यादा वक्त से लगे दिल्ली आईवीएफ एंड फर्टिलिटी रिसर्च सेंटर ने इस दिशा में एक और कदम बढ़ाया है. राजधानी दिल्ली में एलांटिस हेल्थकेयर की शुरुआत की गई है. महिलाओं के लिए शानदार बर्थिंग सेंटर वाला ये मल्टी-स्पेशयलिटी अस्पताल दिल्ली के लाजपत नगर-4 में शुरू किया गया है.

बेहतरीन सुविधाओं वाला ये अस्पताल 25000 स्क्वायर फीट में फैला हुआ है. यहां विशेष रूप से महिलाओं की केयर के लिए खास फैसिलिटीज़ हैं. अच्छे इंफ्रास्ट्राक्चर के साथ ही अस्पताल में इलाज के लिए एडवांस उपकरण भी मौजूद हैं.

एलांटिस अस्पताल में डर्मेटोलॉजी (त्वचा संबंधी समस्याएं) से लेकर आईवीएफ एंड फर्टिलिटी से जुड़ी समस्याओं वाले मरीज बेहतर कंसल्टेशन और ट्रीटमेंट पा सकेंगे. इसके अलावा पिगमेंटेशन यानी त्वचा पर दाग-धब्बे, एंटी-एजिंग और कॉस्मेटिक सर्जरी समेत तमाम अन्य सुविधाएं भी यहां उपलब्ध रहेंगी.

इंफ्रास्ट्रक्चर के लिहाज से भी एलांटिस अस्पताल काफी आकर्षक और लक्जूरियस है. यहां तीन मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर, 14 ओपीडी रूम, 2 रेडियोलॉजी रूम, एम्ब्रायोलॉजी रूम, तीन लेबर डिलीवरी रूम और इमरजेंसी वार्ड, दो मैटर्नल आईसीयू (इमरजेंसी), अडल्ट हाई डिपेंडेंसी यूनिट (एचडीयू), लेवल-3 एनआईसीयू (न्यूबॉर्न केयर), स्पेशल केयर बेबी यूनिट (एससीबीयू) और एक स्पेशल वाटर बर्थिंग स्पेस भी है जो बच्चे को जन्म देते समय महिलाओं को कम दर्द का अनुभव कराने में लाभदायक होता है.

एलांटिस हेल्थेकयर के डायरेक्टर डॉक्टर अनूप गुप्ता ने इस मौके पर कहा, %%30 साल से ज्यादा वक्त से हम स्वास्थ्य के क्षेत्र में लोगों की सेवा कर रहे हैं और बेस्ट इलाज मुहैया करा रहे हैं. लग्जरी बर्थिंग के मामले में देश के बेस्ट मल्टी-स्पेशयलिटी अस्पताल बनने की दिशा में हमने अपने यहां बेस्ट टेक्नोलॉजी और एक्सपर्ट डॉक्टर्स को लोगों की सेवा में लगाया है. अब एलांटिस अस्पताल के जरिए लोगों को बेहतर और एडवांस ट्रीटमेंट मेथड्स के साथ अपना इलाज कराने का मौका मिल रहा है जहां हमारे एक्सपर्ट्स मॉडर्न टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हैं. अस्पताल ने तुरंत इलाज देने के लिए भी व्यवस्था की है और इमरजेंसी विभाग में क्रिटिकल केयर यूनिट्स सेटअप की गई हैं जहां हर तरह के इमरजेंसी केस को डील करने की सुविधाएं होंगी. डिलीवरी केस में नर्सिंग स्टाफ की भूमिका काफी अहम होती है, जिसे देखते हुए एनआईसीयू एंड पीआईसीयू में नर्स की संख्या मरीजों के अनुपात में उचित रखी गई है.

जन्म के बाद नवजात की देखभाल बहुत महत्वपूर्ण होती है लेकिन अधिकतर हेल्थकेयर सेंटर्स में अच्छी केयर यूनिट्स की सुविधा नहीं है जिसके चलते नवजात बच्चों की मौत के केस भी काफी हाई रहते हैं. एलांटिस में नवजात की केयर के लिए स्पेशल अरेंजमेंट्स हैं, यूनिट्स हैं जो निश्चित ही जन्म के बाद बच्चे की देखभाल और उसकी हेल्थ को डवलप करने में काफी मददगार साबित होंगी.

एलांटिस हेल्थकेयर दिल्ली के मैनेजिंग डायरेक्टर और इंफर्टिलिटी स्पेशलिस्ट डॉक्टर मन्नान गुप्ता ने कहा, हमारा मकसद महिलाओं को हर तरह की बेहतर स्वास्थ्य सेवा देना है. उन्नत तकनीक की मदद से हम ये सुनिश्चित करते हैं कि महिलाओं को बेबी को जन्म देते वक्त कम से कम दर्द से गुजरना पड़े, प्रेग्नेंसी से जुड़े रिस्क कम रहें और लेट प्रेग्नेंसीज़ जैसी स्थिति न पैदा हों.

जो महिलाएं किसी बीमारी से भी जूझ रही होती हैं उनकी डिलीवरी और इलाज के लिए स्पेशल ट्रीटमेंट और केयर सर्विस हैं. महिलाओं को एज ग्रुप के हिसाब से अलग-अलग तरह की समस्याएं होती हैं, जिनका यहां सही रूप में ट्रीटमेंट किया जाएगा. आजकल सिर्फ भारत ही नहीं, दुनियाभर में इंफर्टिलिटी के मामले बढ़ रहे हैं, ऐसी परिस्थितियों में शुरू किए जा रहे हमारे नए मल्टी-स्पेशयलिटी अस्पताल के माध्यम से हम ये सुनिश्चित करेंगे कि हर नए कपल को अपने परिवार को आगे बढ़ाने का अवसर मिले और उनकी झोली खुशियों से भरे. एलांटिस अस्पताल देश के उन बड़े और बेस्ट मल्टी-स्पेशयलिटी अस्पतालों में शुमार है जो प्रेग्नेंसी और कॉस्मेटिक से जुड़ी समस्याओं में फुल रिसर्च के साथ प्रीमियम सेवाएं देता है. 30 साल से ज्यादा अनुभव वाले एक्सपर्ट हाई-रिस्क प्रेग्नेंसी केस से लेकर संवेदनशील मामलों का बेस्ट पॉसिबल इलाज देते हैं. यहां देश के 50 टॉप लीडिंग डिलीवरी-प्रेग्नेंस एक्सपर्ट मरीजों को देखेंगे जिनके पास 15000 से ज्यादा स्वस्थ बच्चों की डिलीवरी का अनुभव है.

जीडीपी आंकड़ों पर रहेगी निवेशकों की नजर

मुंबई। वैश्विक अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ने की आशंका और फेड रिजर्व के ब्याज दरों में बढ़ोतरी की अटकलों से विदेशी बाजारों में आई गिरावट के दबाव में बीते सप्ताह 1.36 प्रतिशत तक गिरे घरेलू शेयर बाजार की नजर अगले सप्ताह जारी होने वाले आर्थिक विकास, कार बिक्री और औद्योगिक उत्पादन के आंकड़ों पर रहेगी।

बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 812.28 अंक टूटकर सप्ताहांत पर 59 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे 58833.87 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 199.55 अंक गिरकर 17558.90 अंक पर रहा।

वहीं, समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की दिग्गज कंपनियों के विपरीत छोटी और मझौली कंपनियों में तेजी रही। सप्ताहांत पर मिडकैप 153.43 अंक चढ़कर 25119 अंक और स्मॉलकैप 240.51 अंक की तेजी लेकर 28415.89 अंक पर रहा।

विश्लेषकों के अनुसार, अगले सप्ताह 31 अगस्त को चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े जारी होने वाले हैं। इस आंकड़े पर निवेशकों की नजर रहेगी। इसका असर अगले सप्ताह बाजार पर दिखेगा। इसके साथ ही 01 सितंबर को अगस्त में हुई वाहनों की बिक्री तथा अगले सप्ताह ही अगस्त के औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े भी आएंगे। बाजार की दिशा निर्धारित करने में इन कारकों की भी अहम भूमिका होगी।

इनके अलावा अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल की दो दिन पूर्व हुई जैक्सन हॉल बैठक के दौरान उनके वक्तव्य में महंगाई को दो प्रतिशत के लक्ष्य के दायरे में लाने के लिए सभी आवश्यक कदम तेजी से उठाए जाने के संकेत पर अगले सप्ताह वैश्विक बाजार की प्रतिक्रिया सामने आएगी। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि ऊंची ब्याज दरें, धीमी विकास दर और श्रम बाजार में नरमी से मुद्रास्फीति में कमी आएगी। हम इसे तब तक जारी रखेंगे जब तक हमें विश्वास नहीं हो जाता कि काम पूरा हो गया है। ऐसे में छोटे निवेशकों को सलाह है कि वह सतर्कता बरतें।

बीते सप्ताह शेयर बाजार दो दिन गिरकर वहीं तीन दिन तेजी पर रहा। वैश्विक अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ने की आशंका और फेड रिजर्व के ब्याज दरों में बढ़ोतरी की अटकलों से विदेशी बाजारों में आई गिरावट से हतोत्साहित निवेशकों की चौतरफा बिकवाली के दबाव में सोमवार को सेंसेक्स 872.28 अंक लुढ़ककर 59 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के नीचे 58773.87 अंक और निफ्टी 267.75 अंक टूटकर 17490.70 अंक पर आ गया। वहीं विदेशी बाजार के कमजोर रुख के बीच स्थानीय स्तर पर धातु, तेल एवं गैस, ऑटो, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और ऊर्जा समेत 17 समूहों में हुई लिवाली से मंगलवार को शेयर बाजार उबरा तथा सेंसेक्स 257.43 अंक उछलकर 59031.30 अंक और निफ्टी 86.80 अंक बढ़कर 17577.50 अंक पर रहा।

इसी तरह अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की गिरावट के बावजूद स्थानीय स्तर पर रियल्टी, कैपिटल गुड्स, बैंकिंग, दूरसंचार और इंडस्ट्रियल्स समेत चौदह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत बुधवार को शेयर बाजार में लगातार दूसरे दिन भी तेजी रही। सेंसेक्स 54.13 अंक की बढ़त लेकर 59085.43 अंक और निफ्टी 27.45 अंक बढ़कर 17604.95 अंक पर रहा।

वहीं, वैश्विक बाजार की तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर ऊर्जा, एफएमसीजी, हेल्थकेयर, आईटी और टेक समेत पंद्रह समूहों में हुई बिकवाली से शेयर बाजार पिछले लगातार दो दिन की तेजी गंवाते हुए गुरुवार को आधे प्रतिशत गिर गया। सेंसेक्स 310.71 अंक टूटकर 58774.72 अंक और निफ्टी 82.50 अंक उतरकर 17522.45 अंक पर आ गया। विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर पावर, धातु, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, कैपिटल गुड्स, यूटिलिटीज, इंडस्ट्रियल्स और बेसिक मैटेरियल्स समेत सोलह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत शेयर बाजार में शुक्रवार को तेजी लौट आई। सेंसेक्स 59.15 अंक बढ़कर 58833.87 अंक और निफ्टी 36.45 अंक की मामूली बढ़त लेकर 17558.90 अंक पर रहा।

टाटा स्टील पंजाब में लागाएगी स्क्रैप आधारित अत्याधुनिक सरिया मिल

राज्य सरकार से किया करार

एजेंसी

चंडीगढ़। टाटा स्टील ने पंजाब के लुधियाना में एक स्क्रैप-आधारित इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस (ईएएफ) वाला इस्पात सरिया कारखाना लगाने के लिए राज्य सरकार के साथ एक करार किया है। इसकी क्षमता 7.5 लाख टन वार्षिक उत्पादन की होगी।

टाटा स्टील समूह की ओर से रविवार को जारी एक विज्ञप्ति में बताया गया कि इसके लिए पंजाब सरकार के साथ यहां 26 अगस्त को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भगवंत मान भी उपस्थिति थे।

कंपनी ने कहा है कि लुघियान में कडियाना खुर्द, हाईटेक वैली में यह नयी इस्पात इकाई पुनर्चक्रण आधारित अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ाने की उसकी प्रतिबद्धता की दिशा में एक कदम है। इसमें स्क्रेप स्टील (इस्पात के भंगार) के पुनर्चक्रण के माध्यम से कम कार्बन उत्सर्जन वाली प्रक्रिया के साथ स्टील तैयार किया जाएगा। ईएएफ-आधारित यह अत्याधुनिक इस्पात काराखाना कंपनी के प्रमुख खुदरा ब्रांड टाटा टिस्कॉन के तहत निर्माण ग्रेड स्टील रीबार का उत्पादन करेगा, जो टाटा स्टील को निर्माण खंड में अपनी बाजार उपस्थिति को और बढ़ाने में सक्षम करेगा।

कंपनी ने यह 2045 तक अपने उत्पादन में प्रति इकाई कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि को शुद्ध रुप से शून्य करने लक्ष्य रखा है।

बयान में मुख्यमंत्री श्री मान को यह कहते हुए उद्धरित किया गया है, यह बेहद खुशी की बात है कि मैं पंजाब राज्य में टाटा समूह का स्वागत करता हूं।

टाटा समूह द्वारा पंजाब में इस्पात क्षेत्र में निवेश से राज्य में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह पंजाब के लिए गर्व का क्षण है। मेरी सरकार इस उपक्रम को सफल बनाने में पूरा सहयोग देती है। मुझे विश्वास है कि इस परियोजना से पैदा होने वाले रोजगार के अवसरों से पंजाब के युवा लाभान्वित होंगे।

टाटा स्टील के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक टी.वी. नरेंद्रन ने कहा, पंजाब हमारे इलेक्ट्रिक आर्क फर्नेस के लिए एक आदर्श स्थान है, जो बाजार और स्टील स्क्रैप पैदा करने वाली वाहन क्षेत्र की इकाइयों के केंद्र से निकट है। हम भारत में स्क्रैप रूट के माध्यम से स्टील बनाने के लिए विकास की एक अच्छी दीर्घकालिक क्षमता देखते हैं।

अधिकांश खाद्य तेलों में तेजी

नयी दिल्ली। विदेशी बाजारों की तेजी से समर्थन पाकर बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में अधिकांश खाद्य तेलों के साथ ही अनाज के भाव चढ़ गए वहीं दाल-दलहन और मीठे में मिलाजुला रुख रहा। तेल तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का सितंबर वायदा समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान 53 रिंगिट बढ़कर 4149 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह सितंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा भी सप्ताहांत पर 1.97 सेंट की तेजी लेकर 65.91 सेंट प्रति पाउंड रह गया। बीते सप्ताह मूंगफली तेल 146 रुपये, सोया रिफाइंड 147 रुपये और सूरजमुखी तेल 220 रुपये प्रति क्विंटल महंगा रहा। वहीं, सरसों तेल, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। सप्ताहांत पर सरसों तेल 16849 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 19413 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 20000 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 15751 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 13773 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 14652 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा। दाल-दलहन : बीते सप्ताह दाल-दलहन के बाजार में मिलाजुला रुख रहा। सप्ताहांत पर चना 50 रुपये, चना दाल 50 रुपये और अरहर दाल 50 रुपये प्रति क्विंटल महंगी जबकि मूंग दाल 100 रुपये और उड़द दाल 50 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती रही। वहीं, मसूर दाल के भाव स्थिर रहे। सप्ताहांत पर चना 4600-4700, दाल चना 5600-5700, मसूर काली 8300-8400, मूंग दाल 8000-8100, उड़द दाल 9850-9950, अरहर दाल 8800-8900 रुपये प्रति क्विंटल रही।

जेम पोर्टल से ऑनलाइन पूर्ति व भुगतान में तेजी

नयी दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता कार्य, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा वस्त्र मंत्री पीयूष गोयल ने गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस (जेम) की प्रगति की समीक्षा की।

समीक्षा में यह रेखांकित किया गया कि अप्रैल 22 के बाद से सभी फिजिकल ऑर्डर में से 95 प्रतिशत से अधिक की डिलीवरी समय पर हुई, विशेषकर उन मामलों में जहां ऑनलाइन पूर्ति और भुगतान जेम के माध्यम से किया गया था।

रविवार को जारी एक सरकारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि समीक्षा बैठक में कई अन्य बातों के अलावा, जेम के विभिन्न कार्यों के साथ-साथ खरीद और वितरण की समयावधि के बारे में विस्तार से चर्चा की गई।

जेम के माध्यम से सभी प्रकार के लेनदेन (प्रत्यक्ष खरीद, एल1, बोलियां / व्युत्क्रम नीलामी) के लिए समय पर डिलीवरी में लगातार सुधार देखा गया है। मंत्री ने प्रारंभिक लक्ष्यों को फिर से तय करने तथा डिलीवरी के समय में और तेजी लाने के लिए सुविधाओं एवं सरकारी खरीदारों को उनकी जरूरतों के अनुसार उत्पादों का चयन करने के लिए लचीला रुख अपनाने के बारे में विशिष्ट सुझाव प्रस्तुत किए।

श्री गोयल ने जेम पोर्टल पर खरीदारों के सभी लेनदेन की पूर्ति और भुगतान को शुरू से अंत तक ऑनलाइन करने तथा समयसीमा के अनुरूप सामानों की डिलीवरी की निगरानी में सुधार करने का सुझाव दिया।

श्री गोयल ने सभी सार्वजनिक खरीद को जेम जैसे पूरी तरह से ऑनलाइन और पारदर्शी पोर्टल पर लाने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सूक्ष्म और लघु उद्यमों को बढ़ावा देकर बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था और सामाजिक समावेश को प्रोत्साहन दिया जा सके।

बैठक में संभावित मिलीभगत और धोखाधड़ी का पता लगाने और रिपोर्ट करने के लिए एआई-एमएल के उपयोग सहित सरकारी खरीद की कड़ी निगरानी करने और विसंगति का पता लगाने से सम्बंधित जेम की पहल की समीक्षा की गई। श्री गोयल ने ऐसी गतिविधियों में लिप्त खरीदारों और आपूर्तिकर्ताओं के खिलाफ कड़ी कानूनी और दंडात्मक कार्रवाई का सुझाव दिया।

विसंगतियों का पता लगाने के अलावा, जेम ने एआई-एमएल के अन्य उपयोग करने की भी योजना बनाई है, ताकि प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके, खरीदारों के लिए उत्पाद के बेहतर सुझाव दिए जा सकें एवं इस प्रकार सार्वजनिक खर्च में बचत सुनिश्चित की जा सके।

जेम द्वारा महत्वपूर्ण तकनीकी उन्नयन की योजना बनाई गई है, ताकि अत्याधुनिक उपयोग के तरीकों को सक्षम किया जा सके और प्लेटफॉर्म पर उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर किया जा सके। मंत्री ने जेम के एमएसएमई समावेश और हर घर तिरंगा अभियान सहित कई अन्य पहलों की सराहना की।

एमसीएक्स के कपास वायदा कारोबार पर सेबी के साथ बैठक, जनवरी से संशोधित नियम होंगे लागू

मुंबई। एमसीएक्स के कपास वायदा अनुंबधों का कारोबार आगामी जनवरी से संशोधित नियमों के आधार पर किया जाएगा।

जनवरी 2023 और उसके बाद के अनुबंध , नए संशोधित नियमों को अंतिम रूप दिए जाने तक ट्रेडिंग के लिए अस्थायी रूप से अनुपलब्ध रहेंगे। यह संशोधन 30 दिनों की अवधि के भीतर किया जाएगा।

बाजार विनियामक नियमों में संशोधन इस एक्सचेंज की उत्पाद परामर्श समिति के साथ विचार विमार्श कर के करेगा।

एमसीएक्स की रविवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार संबंधित विभिन्न पहलुओं और मूल्य श्रृंखला की व्यापक भागीदारी के लिए कांट्रैक्ट की संगतता बढ़ाने के तरीकों और माध्यमों की चर्चा करने के लिए भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) , टैक्सटाइल कमिशनर, कपड़ा मंत्रालय के अधिकारियों, टैक्सटाइल परामर्श समूह (टैग), कॉटन कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया, सीएआई, सीआईटीआई, सीमा और एमसीएक्स एवं एमसीएक्ससीसीएल आदि जैसे उद्योग निकायों की एक संयुक्त बैठक गत 26 अगस्त को मुंबई में सेबी भवनमें आयोजित की गई थी।

इस बैठक के निष्कर्षों के अनुसार एक्सचेंज द्वारा उपरोक्त के अलावा कई अन्य महत्व पूर्ण निर्णय लिए गए है। बयान में कहा गया, जनवरी और उसके बाद के कपास वायद अनुबंधों में संशोधित कांट्रैक्ट के विनिर्देशों के साथ ट्रेडिंग होगी। बयान के अनुसार एक्सचेंज की प्रोडक्ट एडवाइज़री कमिटी (उत्पाद सलाहकार समिति) के साथ परामर्श करके कॉटन कांट्रैक्ट के विनिर्देशों की आवश्यक्ता के अनुसार फिर से जांच और संशोधन किया जाएगा। परामर्श की प्रक्रिया में टैग के सदस्य सहित अन्य हिस्सेदारों के निमंत्रितों भी शामिल किया जाएगा।

बयान के अनुसार चूंकि मौजूदा नियमों में ओपन इंटरेस्ट यानी (बाजार की समाप्ति पर प्रतिभागियों के पास पड़े खरीद बिक्री के बकाया अनुबंध) में बदलाव की अनुमति नहीं है।

बैठक में प्रोडक्ट एडवाइज़री कमिटी का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया गया है। इसमें कपड़ा उद्योग सहित मूल्य श्रृंखला प्रतिभागियों के अधिक प्रतिनिधित्व को शामिल कर के इस समिति का विस्तार किया जाएगा।

बयान में कहा गया है कि कपास वायदा अनुबंधों को लेकर बाजार का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग को रोकने के लिए विनिमय निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाएगा और बारीकी से निगरानी की जाएगी।

अब तक 46.25 करोड़ खुले जनधन खाते, जमा हुये 1.74 लाख करोड़

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने प्रधानमंत्री जनधन योजना (पीएमलेडीवाई) के पात्र लाभार्थियों को सूक्ष्म बीमा योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के तहत कवर करने की घोषणा करते हुये आज कहा कि अब तक जनधन योजना के तहत 46.25 करोड़ खातें खुल चुके हैं और इन खातों में 1.74 लाख करोड़ रुपये जमा हो चुके हैं।

पीएमजेडीवाई के आज आठ वर्ष पूर्ण होने के मौके पर सरकार ने कहा कि इसको लेकर बैंकों को पहले ही सूचित किया जा चुका है और अब पात्र जनधन खाताधारकों को सूक्ष्म बीमा कवर किया जायेगा। देशभर में संबंधित बुनियादी ढांचा तैयार कर पीएमजेडीवाई खाताधारकों के बीच रुपे डेबिट कार्ड के उपयोग सहित डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने के साथ ही फ्लेक्सी-आवर्ती जमा आदि जैसे माइक्रो निवेश और माइक्रो-क्रेडिट तक पीएमजेडीवाई खाताधारकों की पहुंच को बेहतर बनाने की तैयारी चल रही है।

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस मौके पर कहा कि वित्तीय समावेशन की अपनी पहलों के जरिए वित्त मंत्रालय हाशिए पर रहने वाले और अब तक सामाजिक-आर्थिक रूप से उपेक्षित वर्गों का वित्तीय समावेशन करने और उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा वित्तीय समावेशन के माध्यम से हम देश में एक समान और समावेशी विकास को हासिल कर सकते हैं। वित्तीय समावेशन का मतलब है- कमजोर समूहों जैसे निम्न आय वर्ग और गरीब वर्ग, जिनकी सबसे बुनियादी बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच नहीं है, उन्हें समय पर किफायती दर पर उचित वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराना। उन्होंने कहा कि पीएमजेडीवाई इस प्रतिबद्धता की दिशा में एक अहम पहल है, जो वित्तीय समावेशन से जुड़ी दुनिया की सबसे बड़ी पहलों में से एक है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त 2014 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिए अपने संबोधन में प्रधानमंत्री जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई) की घोषणा की थी।

शार्ट न्यूज

यूपी मैराथन में अभिषेक और प्रीति का जलवा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की सबसे अधिक सात लाख की इनामी राशि वाली श्री सुविधा यूपी मैराथन दौड़ का खिताब रेलवे के अंतरराष्ट्रीय धावक अभिषेक पाल ने जीत लिया है, वहीं महिलाओं में विश्व रेलवे की स्वर्ण पदक विजेता प्रीति लाम्बा ने खिताब पर कब्जा जमाया। पुरुषों की क्रासकंट्री दौड़ में पंकज और महिलाओं मं प्रीनू यादव ने अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए पहला स्थान हासिल किया। 1090 चौराहे पर हुई इस मैराथन दौड़ में उत्तर प्रदेश के अलावा हरियाणा, बंगाल, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार आदि राज्य के एथलीटों ने हिस्सा लिया। पुरुषों और महिलाओं की हाफ मैराथन का फ्लैग ऑफ अपर पुलिस महानिदेशक डा. रामकृष्ण स्वर्णकार, एथलीट पद्मश्री सुधा सिंह, खेल निदेशक डा.आरपी सिंह ने किया। पुरुषों की 21 किलोमीटर की हाफ मैराथन में अभिषेक पाल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पहला स्थान हासिल किया। उन्होंने इस दौड़ को एक घंटा 05.59 सेकंड का समय दर्ज किया। अंतरराष्ट्रीय धावक मान सिंह 01 घंटा.08.20 सेकंड का समय दर्ज कर दूसरे और सैफ खेलों के स्वर्ण पदक विजेता कार्तिक कुमार 01 घंटा 06.53 सेकंड का समय निकालकर तीसरे स्थान पर रहे। महिलाओं में विश्व रेलवे की स्वर्ण पदक विजेता प्रीति लाम्बा ने 01 घंटा 15.46 सेकंड का समय निकालकर पहले स्थान पर रहीं, वहीं नीतू कुमारी दूसरे और सोनिका तीसरे स्थन पर रहीं।

हिंदुस्तान और रॉयल रेंजर्स जीते

नयी दिल्ली। हिंदुस्तान क्लब ने इमरान खान और कप्तान माइक फोकु के शानदार गोलों की मदद से आधी अधूरी भारतीय वायु सेना को 2-0 से परास्त कर दिल्ली प्रीमियर लीग के दूसरे चरण में पूरे अंक अर्जित किए। अंबेडकर स्टेडियम पर दिन के दूसरे मैच में रॉयल रेंजर्स ने तरुण संघा को 3-0 से हराया। रॉयल रेंजर्स के स्टार स्ट्राइकर कांगो के डेली मकानिनो ने पहले हाफ में पेनल्टी पर गोल जमाने के बाद प्रतिद्वंद्वी गोली की चूक का फायदा उठाते हुए तेज रफ्तार दौड़ से स्कोर 2-0 कर दिखाया। दूसरे हाफ में रविराज ने लंबी दूरी का शाट जमाकर स्कोर आगे बढ़ाया। नेहरू स्टेडियम पर खेले जा रहे महिला प्रीमियर लीग के मुकाबले में ग्रोइंग स्टार ने रेंजर्स स्पोर्ट्स क्लब को 3 -0 से शिकस्त दी। प्लेयर ऑफ़ द मैच पिंकी कुमारी, सुनीता और सुहावी धूपिया ने एक एक गोल बांटे।

सैफ महिला चैंपियनशिप के लिये पुणे में तैयारी करेगी टीम

नयी दिल्ली। भारतीय महिला फुटबॉल टीम दक्षिण एशिया फुटबॉल महासंघ (सैफ) महिला चैंपियनशिप 2022 के लिये पुणे में आयोजित तैयारी शिविर में सोमवार से शामिल होगी। यह चैंपियनशिप नेपाल में 06-19 सितंबर के बीच आयोजित की जाएगी। भारतीय महिलाएं तीन सितंबर को नेपाल के लिये रवाना होंगी। पिछली बार की चैंपियन भारत को ग्रुप-ए में मालदीव, पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ रखा गया है। टीम अपने अभियान की शुरुआत पाकिस्तान के खिलाफ सात सितंबर को शुरू करेगी। भारतीय टीम के कोच सुरेन छेत्री ने तैयारी शिविर के लिये 26 खिलाड़ियों की संभावित सूची तैयार की है, जिसमें अदिति चौहान, मैबम लिनथोइंगंबी देवी, श्रेया हुड्डा, सौम्या नारायणसामी को बतौर गोलकीपर, जबकि स्वीटी देवी, रितु रानी, आशालता देवी, रंजना चानू, मनीसा पन्ना, आरिफा सैयद, मिशेल कास्टान्हा, जूली किशन और संतोष को बतौर डिफेंडर शामिल किया गया है। इसके अलावा अंजू तमांग, कार्तिका अंगमुथु, प्रियंगका देवी, मार्टिना थोकचोम, संध्या रंगनाथन, काविया पक्कीरिसामी, काश्मीना, रतनबाला देवी बतौर मिडफील्डर और दुलार मरांडी, अपर्णा नारजारी, सौम्या गुगुलोथ, रेणु, किरण पिस्दा बतौर फॉर्वर्ड शिविर में शामिल हो सकती हैं।

भारतीय टीम ने विश्व स्केट खेलों से पहले तैयारी शुरू की

जम्मू। भारतीय पुरुष स्केटिंग टीम ने अक्टूबर में होने वाले विश्व स्केट खेलों से पहले मौलाना आज़ाद स्टेडियम के स्केटिंग रिंक में आयोजित प्रशिक्षण कैंप में तैयारी शुरू कर दी है। यह भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ द्वारा आयोजित दूसरा प्रशिक्षण कैंप है, जबकि पहला कैंप पटियाला में 15-30 जून तक आयोजित किया जा चुका है। जम्मू क्षेत्र के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक मुकेश सिंह ने खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय आयोजन से पहले शुभकामनाएं देते हुए रविवार को कहा, अपना ध्यान केंद्रित रखें, अपना खेल खेलें और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दें। जम्मू-कश्मीर में पुलिस उपाधीक्षक और टीम के मुख्य कोच राजेश आनंद ने यूनीवार्ता को बताया, यह जम्मू और कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश के लिए एक सम्मान की बात है कि भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ द्वारा इस तरह के शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय जूनियर पुरुष और जूनियर पुरुष रोलर हॉकी टीम 24 अक्टूबर से 13 नवंबर तक ब्यूनस आयर्स और सैन जुआन, अर्जेंटीना में होने वाले विश्व स्केट खेलों में भाग लेगी। उल्लेखनीय है कि भारतीय रोलर स्केटिंग महासंघ ने राजेश आनंद को उनकी देखरेख में जम्मू में शिविर आयोजित करने के लिए अधिकृत किया है। राजेश स्वयं एक अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और भारतीय रोलर हॉकी टीम के कप्तान हैं।

खेलों में अब परिजनों ने अपनी मानसिकता में बदलाव किया :मलिक

अलवर। देश की प्रसिद्ध रेसलर और पदम श्री से सम्मानित साक्षी मलिक ने कहा कि खेलों में महिलाओं के बढ़ते रुझान को देखते हुए ऐसा लगता है कि अब परिजनों ने भी अपनी मानसिकता में बदलाव किया है। साक्षी मलिक आज रानी लक्ष्मीबाई मार्शल आर्ट अकादमी द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में भाग लेने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रही थी। उन्होंने बताया कि जिस वक्त उन्होंने रेसलिंग में शुरुआत की उस वक्त सेंटर पर तीन चार लड़कियां थी और इन 18 साल में काफी बदलाव देखा गया है। अब उसी सेंटर पर करीब 70 लड़कियां हैं। यह इस कारण संभव हुआ है कि रेसलिंग में लड़कियां अब मेडल लेकर आ रही हैं इसलिए परिजनों की भी मानसिकता में बदलाव आया है। उन्होंने बताया कि खेलों के प्रति अपने रुझान को बरकरार रखने के लिए ग्रास रूट पर काम करना चाहिए। हर गांव में खेल नहीं हो सकते लेकिन कुछ गांवों को चिन्हित कर वहां पर प्रशिक्षण लिया जा सकता है। उन्होंने बताया कि अब उनका आगामी फोकस अगले साल होने वाले एशियन गेम पर है उन्होंने बताया कि जब उन्होंने रेसलिंग में अपनी शुरुआत की तब कोई पाटनर नहीं थे अब तो वर्ल्ड लेवल की संसाधन उपलब्ध है।

पुजारा ने कार्तिक पर पंत को प्राथमिकता दी

दुबई। भारतीय टेस्ट टीम के अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा ने एशिया कप 2022 में भारत बनाम पाकिस्तान मुकाबले से पहले कहा है कि यदि टीम प्रबंधन को ऋषभ पंत और दिनेश कार्तिक में से किसी एक को टीम में रखना है तो उन्हें पंत को चुनना चाहिये। पुजारा ने ईएसपीएन क्रिक इन्फो से कहा, यह टीम प्रबंधन के लिये बड़ा सिरदर्द है क्योंकि दोनों (पंत और पुजारा) टी20 प्रारूप में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। सवाल यह है कि आप किसी को पांचवें स्थान पर बल्लेबाजी करवाना चाहते हैं, या आपको एक फिनिशर चाहिये जो छठे या सातवें स्थान पर बल्लेबाजी कर सके। उन्होंने कहा, मैं कहूंगा कि अगर आप किसी को पांचवें स्थान पर बल्लेबाजी करवाना चाहते हैं तो पंत एक बेहतर विकल्प हैं, लेकिन अगर आप एक फिनिशर चाहते हैं जो 10-20 गेंदें खेलकर 40-50 रन बनाये, तो कार्तिक बेहतर विकल्प हैं। पुजारा ने कहा कि पंत बाएं हाथ के बल्लेबाज़ हैं इसलिये उन्हें कार्तिक के ऊपर तरजीह दी जाएगी, और कार्तिक की अनुपस्थिति में हार्दिक पांड्या फिनिशर की भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा, व्यक्तिगत रूप से, (और) टीम प्रबंधन को जानते हुए कि भारतीय टीम के आसपास चीजें कैसे काम करती हैं, मुझे लगता है कि वे ऋषभ पंत के साथ जा सकते हैं क्योंकि वह एक बाएं हाथ का बल्लेबाज है और इससे टीम को थोड़ा संतुलन मिलता है।

(राष्ट्रीय खेल दिवस पर विशेष) सोनिया पाण्डे से...

चांद की रोशनी में हॉकी खेलकर ध्यान सिंह बने थे ध्यानचंद

एजेंसी

झांसी। दुनियाभर में हॉकी के जादूगर के नाम से मशहूर मेजर ध्यानचंद का मूल नाम ध्यान सिंह था, लेकिन हॉकी के प्रति उनके जुनून का नतीजा था कि वह रात के समय चांद की रोशनी में हॉकी का अभ्यास करते थे और उनकी इसी आदत के कारण उन्हें 'ध्यानचंद' नाम मिला।

'भारत रत्न' मेजर ध्यानचंद के पुत्र और अर्जुन पुरस्कार विजेता ओलंपियन अशोक ध्यानचंद ने रविवार को 'यूनीवार्ता' को बताया कि हॉकी के लिये उनके पिता की दीवानगी इस कदर थी कि दिन में समय न मिलने पर वह रात में भी ग्राउंड में चांद की रोशनी में ही हॉकी खेलने लग जाते थे। उनकी इस आदत के बाद आसपास के लोगों में यह बात मुहावरे के तौर पर कही जाने लगी कि 'चांद की रोशनी में देखो ध्यान की हॉकी।' कालांतर में चांद और ध्यान का मिश्रण कुछ इस तरह हुआ कि उनका नाम ही ध्यान सिंह से ध्यानचंद हो गया और इसके बाद देश और दुनिया में वह इसी नाम से विख्यात हो गये।

उन्होंने बताया कि मेजर ध्यानचंद की प्रारंभिक शिक्षा झांसी में ही हुई। उस समय वह झांसी में एबर्ट गंज में रहते थे। वह झांसी स्थित हीरोज ग्राउंड की पथरीली जमीन पर ही हॉकी की प्रैक्टिस करते थे। पहले इसे चांदमारी का मैदान कहा जाता था। उन्होंने इस मैदान की कठोर जमीन पर नंगे पैर ही हॉकी खेलकर खुद को एक मजबूत खिलाड़ी के रूप में तैयार किया।

यही वह मैदान था जिस पर उन्होंने हॉकी से जुड़ी तकनीकी बारीकियां सीखीं। अशोक ध्यानचंद ने बताया कि उनके दादा ने खेल के प्रति बेटे की दीवानगी को देख कर उन्हें 16 साल की उम्र में ही सेना में भर्ती करा दिया। सेना में भर्ती होने के बाद ही उन्हें 'मेजर' का तमगा मिला। उन्होंने बताया कि कम लोगों को ही यह मालूम है कि ध्यान सिंह हॉकी खेलने के

साथ कुश्ती भी बहुत अच्छी लड़ते थे। उन्हें हॉकी खेलने और कुश्ती लड़ने का जबरदस्त शौक था।

सेना में शामिल होने के बाद उन्हें दिन में हॉकी खेलने का मौका कम ही मिल पाता था। ऐसे में वह हॉकी पर रात को चांद की रोशनी में हाथ आजमाते थे। उन्होंने बताया कि वर्ष 1926 में उनका न्यूजीलैंड दौरा, पहला मौका था जब विदेश की धरती पर किसी भारतीय ने किसी विदेशी टीम के खिलाफ गोल दागा था। इस समय ध्यानचंद की मौजूदगी में भारतीय टीम ने ऐसा जबरदस्त प्रदर्शन किया कि 1920 में ओलंपिक से बाहर कर दिये गये हॉकी के खेल को 1928 के ओलंपिक में फिर से शामिल किया गया।

इसके बाद 1928 की ओलंपिक की टीम में उन्हें शामिल गया। उस समय की हॉकी 'हिट एंड रन' पद्धति पर खेली जाती थी, लेकिन भारतीय हॉकी 1926 तक पूरी तरह से स्किलफुल हो चुकी थी और ध्यानचंद इस हॉकी के शानदार खिलाड़ी थे। ओलंपिक में ध्यानचंद के विदेशी धरती पर जानदार और शानदार खेल के लोग मुरीद हो गये। इस ओलंपिक में उनके जादुई प्रदर्शन के बलबूते ही उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाने लगा।

उन्होंने बताया कि उस समय देश गुलाम था। इसके बावजूद देश की हॉकी टीम जब किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेती थी तो 'भारतीय टीम' के रूप में ही जाना जाता था। उसे 'ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत की टीम' या ऐसा ही कोई और नाम नहीं दिया गया था।

मेजर ध्यानचंद की जयंती 29 अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाये जाने की भारत सरकार की घोषणा का अशोक ध्यानचंद ने स्वागत करते हुए इसके लिये आभार भी प्रकट किया।

उन्होंने कहा कि अच्छा यही है कि खेल दिवस का नाम किसी खिलाड़ी के नाम पर ही रखा जाना चाहिए। सरकार ने इस ओर ध्यान देकर देश भर के खिलाड़ियों को सम्मान दिया है।

उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकारें खेलों को काफी प्रोत्साहन दे रही हैं। ऐसे में बच्चों के सामने अब खेल भी एक करियर के रूप में उभर कर आ रहा है। बच्चे और युवा इस प्रोत्साहन से लाभ लें, ताकि खेलों की दुनिया में भारत का सितारा बुलंदी पर चमके।

हरफनमौला स्टोक्स के आगे लाजवाब प्रोटियाज़

मैनचेस्टर। इंग्लैंड ने कप्तान बेन स्टोक्स (103 रन, चार विकेट) के हरफनमौला खेल की बदौलत दक्षिण अफ्रीका को दूसरे टेस्ट मैच में शनिवार को पारी और 85 रन से मात दी। इसी के साथ शृंखला 1-1 से बराबर हो गयी है। इंग्लैंड ने पहली पारी में दक्षिण अफ्रीका के 151 रन के जवाब में 415 रन बनाकर 264 रन की बढ़त हासिल की थी। दूसरी पारी में कीगन पीटरसन (42) और रैसी वान डेर डुसेन (41) के प्रयासों के बावजूद प्रोटियाज़ 179 रन पर ऑलआउट होकर इंग्लैंड के स्कोर से 85 रन पीछे रह गयी। ओली रॉबिन्सन ने इंग्लिश गेंदबाजी की अगुवाई करते हुए चार विकेट निकाले, जबकि जेम्स एंडरसन ने तीन विकेट लिये जिसमें कप्तान डीन एल्गर का महत्वपूर्ण विकेट भी शामिल था।

भारत ने पाकिस्तान को पांच विकेट से मात दी

दुबई। भारत ने हार्दिक पांड्या (तीन विकेट, 33 रन) के हरफनमौला खेल की बदौलत पाकिस्तान को एशिया कप 2022 में रविवार को पांच विकेट से मात दी।

पाकिस्तान ने भारत को 20 ओवर में 148 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे रोहित शर्मा की टीम ने दो गेंदें रहते ही हासिल कर लिया। पाकिस्तान ने 308 दिन पहले टी20 विश्व कप में भारत को इसी मैदान पर हराया था मगर भारत ने अतीत को पीछे छोड़ते हुए पाकिस्तान को इस बार पछाड़ा।

एक समय पर भारत को 14.2 ओवर में 89 रन पर पांच विकेट गंवाकर दबाव में था, मगर हार्दिक पांड्या की विस्फोटक बल्लेबाजी की मदद से भारत ने यह मैच 19.4 ओवर में ही जीत लिया।

जब भारतीय टीम 148 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी तो अंतरराष्ट्रीय टी20 में अपना पदार्पण करने वाले नसीम शाह ने पहले ओवर की दूसरी ही गेंद पर केएल राहुल को शून्य के स्कोर पर आउट किया। कप्तान रोहित शर्मा विकेट पर संघर्ष करते नज़र आये और अंततः विराट कोहली के साथ 49 रन की साझेदारी करने के बाद 18 गेंदों पर 12 रन बनाकर पवेलियन लौट गये। अपना 100वां टी20 मैच खेल रहे कोहली ने 34 गेंदों पर तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए पुराने दिनों की झलक दिखायी लेकिन वह भी 35 रन ही बना सके।

भारत के 53 रन पर तीन विकेट गिरने के बाद रविंद्र जडेजा और सूर्यकुमार यादव ने 36 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की। जब भारत को 35 गेंदों पर 59 रन की आवश्यकता थी तब सूर्य (18) ने पारी की रफ्तार बढ़ाने का प्रयास किया मगर नसीम ने उन्हें भी बोल्ड कर दिया।

सूर्य के आउट होने के बाद विकेट पर आये पांड्या ने जडेजा के साथ भारतीय पारी को संभाला और दोनों के बीच पांचवें विकेट के लिये 29 गेंदों पर 52 रन की मैच जिताऊ साझेदारी हुई।

भारत को अंतिम तीन ओवर में 32 रन की दरकार थी। जडेजा ने नसीम के 18वें ओवर में एक छक्का और एक चौका लगाते हुए 11 रन बटोरे, जबकि पांड्या ने 19वें ओवर में हारिस रऊफ को तीन चौके लगाये। आखिरी ओवर में जब भारत को सात रन चाहिये थे तब जडेजा (35) पहली गेंद पर बोल्ड हो गये, मगर पांड्या ने ओवर की चौथी गेंद पर छक्का लगाकर भारत की विजय पताका लहरायी। पाकिस्तान की ओर से नवाज़ ने तीन विकेट लिये जबकि डेब्यूटेंट नसीम ने दो विकेट हासिल किये। इससे पहले, भारत ने टॉस जीतकर पाकिस्तान को बल्लेबाजी के लिये आमंत्रित किया और भुवनेश्वर कुमार ने तीसरे ओवर में ही बाबर आज़म (10) को आउट कर टीम को शानदार शुरुआत दिलायी।

तीसरे नंबर पर आये फखर ज़मान ने दो चौकों के साथ पारी का आगाज किया, लेकिन आवेश खान ने उन्हें मात्र 10 रन पर विकेटकीपर दिनेश कार्तिक के हाथों कैच कराकर पवेलियन लौटाया। तीसरे विकेट के लिये 45 रन की साझेदारी करने वाले मोहम्मद रिज़वान और इफ़्तिखार अहमद हार्दिक पांड्या की छोटी गेंदों का शिकार हुए। रिज़वान ने 42 गेंदों पर चार चौकों और एक छक्के की बदौलत 43 रन की पारी खेली, जबकि इफ़्तिखार ने 22 गेंदों पर दो चौके और एक छक्का लगाते हुए 28 रन बनाये।

तालिबान के कब्जे के बाद करीब एक साल बाद अफगानिस्तान में खुलने जा रहे सिनेमाघर

37 फिल्मों में केवल एक महिला एक्टर

काबुल। तालिबान की ओर से अफगानिस्तान पर कब्जा जमाए जाने के करीब एक साल बाद देश के सिनेमाघरों में फिल्मों का शो शुरू होने जा रहा है। सिनेमाघरों में शो को अनुमति जरूर दे दी गई है लेकिन महिला कलाकारों की भूमिकाएं बहुत सीमित हैं। तालिबान ने पिछले साल अगस्त के महीने में तालिबान पर कब्जा जमाया था। अफगानिस्तान पर कब्जा जमाने के बाद तालिबान ने देश में कई तरह के प्रतिबंध भी लगा रखे हैं। खासकर महिलाओं को लेकर तालिबान का रवैया पुराने जैसा ही है।

खामा प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, 37 फिल्में और डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित होने के लिए लाइन में हैं, लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि आतिफा

मोहम्मदी एकमात्र महिला अभिनेत्री हैं, जिन्होंने हाल ही में बनी इन फिल्मों में से एक में भूमिका निभाई है। फिल्मों के अभिनेता सिनेमाघरों के फिर से खुलने से खुश हैं और उन्होंने कहा कि उन्हें फिल्मों के निर्माण के लिए धन उपलब्ध कराना होगा। एक कलाकार अब्दुल साबोर खिनजी ने कहा, एक साल बाद सिनेमा के दरवाजे फिर से खुल गए हैं। हम खुश हैं।

एक्टर खुश लेकिन फंड को लेकर चिंतित

उन्होंने कहा, हमने अपनी पॉकेट मनी से फिल्मों पर खर्च किया है। मीडिया पोर्टल के अनुसार, एक अन्य कलाकार फैयाज इफ्तिखार ने कहा, हम अपना काम करके खुश थे। काबुल निवासी ज़हरा मुर्तज़ावी ने एक महत्वपूर्ण संदेश देते हुए कहा, इस क्षेत्र में महिलाओं को प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह महिलाओं का अधिकार है। मुझे नहीं लगता कि महिलाओं की उपस्थिति के बिना कोई फिल्म अच्छी लगती है।

महिला को शरीर ढक कर निकलने की सलाह

तालिबान ने पिछले महीने घोषणा की कि महिलाओं और लड़कियों को तब तक अपने घरों से बाहर नहीं निकलना चाहिए जब तक जरूरी न हो। अगर वे बाहर निकल भी रहीं हैं तो पूरे शरीर को ढक कर ही निकलना चाहिए। तालिबानी शासन के इस फरमान से वो लोग हैरा रहे जो 1996 से 2001 तक तालिबान शासन के अंतिम दौर से नहीं गुजरे थे।

ऑस्ट्रिया के गृह मंत्रालय ने वोवक की हत्या की पुष्टि नहीं की

वियना। ऑस्ट्रिया के गृह मंत्रालय ने कहा कि वह यूक्रेन की नागरिक नतालिया वोवक की कथित हत्या की खबरों की पुष्टि नहीं कर सकता है। इससे पहले दिन में एक्सप्रेस न्यूज आउटलेट ने बताया कि टेलीग्राम पर प्रसारित एक संदेश के हवाले से कहा कि वोवक किराए के अपार्टमेंट में मृत पाये गये है। मंत्रालय ने कहा, राज्य सुरक्षा और खुफिया निदेशालय (डीएनएस) के हमारे सहयोगियों से परामर्श करने के बाद हम आपको बता सकते हैं कि ऑस्ट्रिया में ऐसा कोई मामला सामने आया या नहीं है। इसलिए हम इस जानकारी की वैधता की पुष्टि नहीं कर सकते हैं।

स्टॉकटन गुरुद्वारा में हुई गोलीबारी में तीन घायल

स्टॉकटन। अमेरिका में कैलीफोर्निया प्रांत के स्टॉकटन गुरुद्वारा में हुई गोलीबारी की घटना में तीन लोग घायल हो गए है। पुलिस ने बताया कि शनिवार रात गोलीबारी की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने गुरुद्वारा स्ट्रीट के 1900 ब्लॉक में जवाबी कार्रवाई की। पुलिस के अनुसार सभी तीन पीड़ितों को चोटों के साथ अस्पताल ले जाया गया। पुलिस ने बताया कि संदिग्ध और पीड़ित दोनों सिख हैं। अधिकारी गोलीबारी की घटना की जांच कर रहे हैं।

अल्जीरिया फ्रांस को गैस आपूर्ति बढ़ाने के लिए तैयार

पेरिस। यूरोप में तनावग्रस्त सर्दियों की आशंका के बीच अल्जीरिया फ्रांस के लिए गैस आपूर्ति में बढ़ोत्तरी करने के लिए तैयार हो गया है। यह जानकारी यूरोप1 रेडियो ने रविवार को सूत्रों के हवाले से दी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों 25-27 अगस्त को अल्जीरिया की आधिकारिक यात्रा पर थे। श्री मैक्रों की यात्रा के दौरान, फ्रांस की ऊर्जा कंपनी एंजी की सीईओ कैथरीन मैकग्रेगर ने अल्जीरिया के ऊर्जा और खनन मंत्री मोहम्मद अर्कब और अल्जीरिया की तेल और गैस कंपनी सोनाट्रैच के प्रमुख तौफिक हक्कर से मुलाकात की। यूरोप 1 के अनुसार, अल्जीरिया ने फ्रांस को पहले केवल मौखिक आश्वासन दिया था लेकिन इन मुलाकातों के बाद अब वह फ्रांस के लिए गैस आपुर्ति में 50 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी कर सकता है।

नीदरलैंड में ट्रक से कुचलने से छह की मौत

एम्सटर्डम। दक्षिणी नीदरलैंड में एक ट्रक के बार्बेक्यू खाने वाले लोगों के एक समूह को कुचल दिया, जिसके कारण छह लोगों की मौत हो गयी है। द डच ब्रॉडकास्टिंग फाउंडेशन (एनओएस) ने रविवार को पुलिस के हवाले से अपनी रिपोर्ट में बताया कि शनिवार की रात स्पेनिश परिवहन कंपनी का एक ट्रक सड़क से उतर गया और निउव-बेयरलैंड गांव में एक आउटडोर बारबेक्यू की मेजबानी कर रहे लोगों के एक समूह में जा घुसा। मीडिया ने पहले बताया था कि दुर्घटना तीन लोगों की मौत हो गई थी। पुलिस के मुताबिक इस दुर्घटना में छह लोगों की मौत हुयी है तथा सात अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनमें से एक की हालत नाजुक बनी हुयी है। ट्रक का चालक 46 वर्षीय स्पेन का निवासी है और उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। मीडिया के मुताबिक चालक दुर्घटना के समय नशे की हालत में नहीं था।

चीन ने ताइवान के पास आठ जहाजों व 23 विमानों को तैनात किया है: ताइपे

ताइपे। ताइवान ने कहा है कि चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी (पीएलएएन) के आठ जहाजों के साथ-साथ 23 विमानों को ताइवान के पास देखा गया है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने रविवार को कहा,आठ पीएलएएन जहाजों और 23 पीएलए (पीपुल्स लिबरेशन आर्मी) विमानों को हमारे आसपास के क्षेत्र में आज (28 अगस्त, 2022) शाम पांच बजे देखा गया। देश के सशस्त्र बलों ने स्थिति की निगरानी की है और सीएपी (लड़ाकू हवाई गश्ती) में विमानों, नौसैनिक जहाज और भूमि आधारित मिसाइल प्रणालियों के जरिए इन गतिविधियों का जवाब दिया है। मंत्रालय के अनुसार 10 विमानों ने ताइवान जलडमरूमध्य की तथाकथित 'मध्य रेखा' को पार किया था।

पाकिस्तान में जारी है बाढ़ का तांडव, मरने वालों की संख्या 1000 से पार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में विनाशकारी बाढ़ का तांडव जारी है। इस आपदा में मरने वालों की संख्या 1000 से अधिक हो गयी है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) की ओर जारी आंकड़ों के मुताबिक देश के विभन्नि हस्सिों में मूसलाधार बारिश के कारण आयी बाढ़ से अब तक 1000 से अधिक लोगों की जानें जा चुकी है और 1527 लोग घायल हुए हैं। वहीं 719,558 पशुओं की भी मौत हो चुकी है। पिछले 24 घंटों में ही 119 लोगों की मौत हुई है जबकि 71 लोग घायल हुए हैं। बीते 24 घंटे में सिंध प्रांत में 76 , खैबर-पख्तूनख्वा में 31 , गिनगिट-बाल्टस्तिान में छह , बलूचस्तिान में चार तथा पीओके में एक व्यक्ति की मौत हुई है। एनडीएमए के मुताबिक पूरे पाकिस्तान में 3,451.5 किमी सड़क क्षतग्रिस्त हो गयी है और 149 पुल ढह गए हैं जबकि 170 दुकानें नष्ट हो गयी हैं।

नैन्सी पेलोसी के ताइवान दौरे के बाद पहली बार अमेरिका ने भेजे दो युद्धपोत

बीजिंग। ताइवान को लेकर चीन और अमेरिका में तनाव के बीच पहली बार अमेरिकी युद्धपोत ने ड्रैगन को चेतावनी दी है। नैन्सी पेलोसी के दौरे के बाद चीन ने अप्रत्याशित रूप से ताइवान के करीब युद्धाभ्यास किया था। अब अमेरिका ने भी अपने दो मिसाइल डिस्ट्रॉयर यूएसएस एंटिएटम और यूएसएस चांसलर्सविले ताइवान के समंदर में भेज दिए। अमेरिकी सेना की तरफ से कहा गया है कि यह एक रूटीन ट्रांजिट है।

अमेरिका के बयान में कहा गया, दोनों ही युद्धपोत 28 अगस्त से ताइवान के समंदर में रूटीन ट्रांजिट कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय नियमों का किसी भी तरह उल्लंघन नहीं किया जा रहा है। वहीं चीन ने भी इन युद्धपोतों को ट्रैक किया और फिर कहा, हम किसी भी तरह की कार्रवाई के लिए तैयार हैं। पीएलए के ईस्टर्न थिएटर कमांड ने कहा,

अमेरिकी युद्धपोतों के गुजरने पर नजदीक से नजर रखी जा रही है। हर गतिविधि हमारे नियंत्रण में है।

बीजिंग ने कहा कि पीएलए ईस्टर्न थिएटर कमांड के सैनिक हर समय तैयार रहते हैं और किसी भी हरकत का जवाब देने में सक्षम हैं। बता दें कि अमेरिकी हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी के ताइवान दौरे के बाद चीन और अमेरिका के बीच तनाव चरम पर है। चीन ताइवान पर दावा करता है। पेलोसी के दौरे से पहले भी वह लगातार अमेरिका को धमकी दे रहा था।

बता दें कि पेलोसी के दौरे के बाद अमेरिका के पांच और सांसद ताइवान पहुंचे थे। इस दौरान भी चीन ने समंदर में अपनी सेना को तैनात कर दिया था। वहीं अमेरिका के इन युद्धपोतों का भेजा जाना यही दिखाता है कि यूएस संवतंत्र हिंद-प्रशांत क्षेत्र का संदेश देना चाहता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. -DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

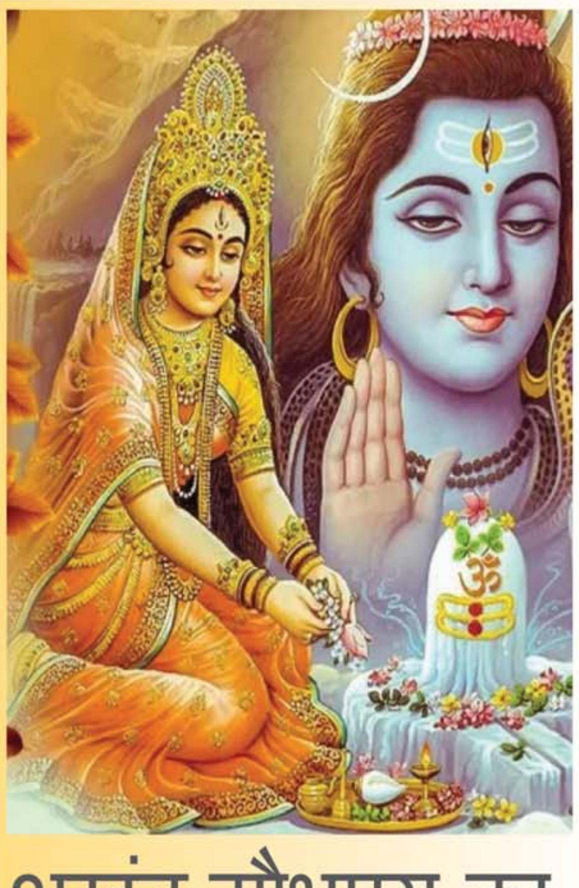

अखंड सौभाग्य का प्रतीक है हरतालिका व्रत

भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि हरितालिका तीज के नाम से शिव-पार्वती भक्तों में लोकप्रिय है। यह पर्व शिव-पार्वती के अखंड जुड़ाव का प्रतीक है। समाज में पति और पत्नी के बीच जो जुड़ाव है, वह क्या है? क्या इनके मध्य कोई ऐसी डोर भी है, जो हमको एक शांत और मंगलकारी परिवार की ओर ले जाती है? दूसरा प्रश्न... परिवार तो अन्य देवों के भी हैं, लेकिन सनातन संस्कृति में शिव परिवार ही क्यों आदर्श बना? भगवान शंकर और पार्वती के मिलन के कई प्रसंग हमारे लिए आदर्श हैं। शिव पुराण से लेकर श्रीरामचरितमानस तक अनेक ग्रंथों में शिव और पार्वती को श्रद्धा और विश्वास की संज्ञा दी गई है। श्रद्धा पार्वती जी हैं और विश्वास साक्षात भगवान शंकर हैं। जब एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा और विश्वास होगा, तो वह आदर्श परिवार होगा। जहां इनमें से किसी एक की भी कमी होगी, परिवार संकट और क्लेश में घिर जाएगा। शिव प्रसंग में दो स्त्री आती हैं। एक सती और दूसरी पार्वती। हम पार्वती के रूप में स्त्री को अंगीकार करते हैं। क्यों? पार्वती जी को ही हमने अक्षत सुहाग की अधिष्ठात्री माना है, क्योंकि वहां समर्पण है। सती प्रसंग में अपनी जिद है, लेकिन पार्वती के रूप में हर स्त्री सौभाग्यवती है। हरतालिका तीज का प्रसंग भी इसी से जुड़ा है। अविवाहिताओं के लिए मुख्य रूप से यह व्रत है, जो पूर्वांचल और बिहार आदि में प्रमुखता से किया जाता है। पश्चिमांचल में यही व्रत सावन में तीजोत्सव के रूप में आता है। हरतालिका तीज भादों (भाद्रपद) मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को होती है। दोनों की कथा एक ही है, लेकिन मर्म व्यापक है। पूर्वजन्म में सती होने के बाद देवी ने अगले जन्म में पार्वती के रूप में अवतरण किया। भगवान शंकर को पाने के लिए घोर तप किया। अन्न-जल त्याग दिया। उनका शरीर पर्ण के समान हो गया। यहीं से देवी का नाम अपर्णा पड़ा। भूख और प्यास को सहन करते हुए देवी ने केवल एक ही प्रण किया कि वह शंकर जी को ही वरण करेंगी। तप तो पूरा हुआ, लेकिन भगवान शंकर कहां मानने वाले थे। कथा आती है कि तारकासुर के संहार के लिए शंकर जी ने पार्वती से विवाह किया, क्योंकि तारकासुर को वरदान प्राप्त था कि शंकर जी के पुत्र (गर्भ से उत्पन्न) द्वारा ही वह मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। अंततोगत्वा कार्तिकेय के रूप में पार्वती जी ने पुत्र को जन्म दिया और तब जाकर तारकासुर से मुक्ति मिली। हरतालिका तीज इच्छित वर की कामना का व्रत है। इच्छित वर की कामना को गलत नहीं माना नहीं गया। वरन इसके व्रत भी हैं। हरितालिका इसमें से एक है। कालांतर में, सुहागिन स्त्रियां भी व्रत को करने लगीं। पार्वती जी की तरह निर्जल रहने लगीं। मुख्य उद्देश्य एक ही है शिव ही शिव हो, यानी कल्याण। परिवार में भी और दाम्पत्य जीवन में भी। शिव कल्याण के देव हैं और पार्वती जी कल्याणी। पारिवारिक और वैवाहिक, सभी संस्कारों की नींव शिव परिवार से ही पड़ी। यह सुखी और आदर्श परिवार है। इसमें कार्तिकेय के रूप में गर्भोत्पन्न शिशु भी हैं, तो मानस पुत्र के रूप में गणेश जी भी। अशुभता और शुभता का संकेत देने वाला नादिया भी है तो श्रद्धा के रूप में साक्षात पार्वती जी भी हैं। इन सभी का विश्वास शिव में है। शिव का विश्वास इनमें है। इसलिए, शिव परिवार सुखी परिवार है। जिस तरह माता पार्वती का सुहाग अक्षत है, उसी तरह व्रत को करने वालों का भी हो, यही कामना सनातन है। यही हरतालिका है। हम सभी परिवार के लिए कुछ न कुछ समर्पण करते हैं। अन्न-जल का त्याग इसी संकल्प का हिस्सा है। सब सुखी हों, सभी का परिवार श्रद्धा व विश्वास के साथ फूले-फले, यही कामना हमको और हमारी संस्कृति को पल्लवित करती है।

घर में पधारो गजानन जी, मेरे घर में पधारो

एकदंत, श्री गणेश, गजानन, विनायक, लंबोदर और वक्रतुंड के नाम से पुकारे जाने वाले भगवान श्री गणपति का पृथ्वी पर शुभागमन हो रहा है। प्रथम पूज्य श्री गणेश हमारे अति विशिष्ट, सौम्य और आकर्षक देवता हैं। उनके आगमन के साथ ही पृथ्वी पर चारों तरफ रौनक, रोमांच और रोशनी बिखर जाती है।

इस सुंदर देवता से हर वर्ग, हर उम्र के व्यक्ति का लगाव है। ऐसे मेहमान जो मोहित करते हैं, मुग्ध करते हैं, मन को भाते हैं, क्योंकि वे आते हैं बिना किसी अपेक्षा के और देकर जाते हैं हमारी अपेक्षा से कई-कई गुना ज्यादा....असंख्य आशीर्वाद, अनगिनत शुभता और मांगल्य। स्वागत, वंदन, अभिनंदन की इस बेला में हर दिल से यही निकलता है-

घर में पधारो गजानन जी, मेरे घर में पधारो...

क्या करें श्री गणेश जी के आगमन से पहले-

घर को सजाएं। संवारें। निखारें। इतना खूबसूरत हो उनके आने से पहले आपका घर कि देखते ही वे प्रसन्न हो जाए। मुस्कुरा उठें और कहें कि बस अब कहीं नहीं जाना.. यहीं रहना है। सुख, सुविधा, आराम, खुशियां जितनी आप गणपति के समक्ष रखेंगे उतनी ही और उससे कहीं ज्यादा आपको प्रतिसाद में मिलेगी। उनके स्थापना का स्थान स्वच्छ करें। सबसे पहले स्थान को पानी से धोएं।

कुमकुम से एकदम सही व्यवस्थित स्वास्तिक बनाएं। चार हल्दी की बिंदी लगाएं। एक मुट्ठी अक्षत रखें। इस पर छोटा बाजोट, चौकी या पटा रखें। लाल, केसरिया या पीले वस्त्र को उस पर बिछाएं। स्थान को रोशनी से सुसज्जित करें। चारों तरफ रंगोली, फूल, आम के पत्ते और अन्य सजावटी सामग्री से स्थान को सुंदर और आकर्षक बनाएं।

आसपास इतना स्थान अवश्य रखें कि आरती की पुस्तक, दीप, धूप, अगरबत्ती, प्रसाद रख सकें। सपरिवार आरती में शामिल होना जरूरी है अतः किसी ऐसे कमरे में गणेश स्थापना करें जहां सब पर्याप्त दूरी के साथ खड़े हो सके। एक तांबे का सुस्वच्छ कलश शुद्ध पानी भर कर, आम के पत्ते और नारियल के साथ सजाएं। यह समस्त तैयारी गणेश उत्सव के आरंभ होने के पहले कर लें।

जब गजानन को लेने जाएं तो स्वयं नवीन वस्त्र धारण करें। पुरुष सिर पर टोपी, साफा या रूमाल रखें। स्त्रियां सुंदर रंगबिरंगे वस्त्र के साथ समस्त आभूषण पहनें। सुगंधित गजरा लगाएं। अगर उपलब्ध हो तो चांदी की थाली साथ में लेकर जाएं ना हो तो पीतल या तांबे की भी चलेगी। सबसे आसान है लकड़ी का वस्त्र से सुसज्जित पाटा। साथ में सुमधुर स्वर की घंटी, खड़ताल, झांझ-मंजीरे लेकर जा सके तो अति उत्तम।

मंगल प्रवेश-

घर की मालकिन गणेश को लाकर द्वार पर रोकें। स्वयं अंदर आकर पूजा की थाली से उनकी आरती उतारें। उनके लिए सुंदर और शुभ मंत्र बोलें। आदर सहित् गजानन को घर के भीतर उनके लिए तैयार स्थान पर जय-जयकार के साथ शुभ मुहूर्त में स्थापित करें। सभी परिजन मिलकर कर्पूर आरती करें। पूरी थाली का भोजन परोस कर भोग लगाएं। लड्डू या मोदक अवश्य बनाएं। पंच मेवा भी रखें। प्रतिदिन प्रसाद के साथ पंच मेवा जरूर रखें।

पूजन विधि-

आचमन- ऊँ केशवाय नमः। ? नारायणाय नमः। ? माधवाय नमः।

कहकर हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें एवं ? ऋषिकेशाय नमः कहकर हाथ धो लें।

इसके बाद प्राणायाम करें एवं शरीर शुद्धि निम्न मंत्र से करें। (मंत्र बोलते हुए सभी ओर जल छिड़कें)...।

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

सावधानियां-

गणेश जी के स्थान के उलटे हाथ की तरफ जल से भरा हुआ कलश चावल या गेहूं के ऊपर स्थापित करें। धूप व अगरबत्ती लगाएं। कलश के मुख पर मौली बांधें एवं आमपत्र के साथ एक नारियल उसके मुख पर रखें।

नारियल की जटाएं सदैव ऊपर रहनी चाहिए। घी एवं चंदन को ताम्बे के कलश में नहीं रखना चाहिए। गणेश जी के स्थान के सीधे हाथ की तरफ घी का दीपक एवं दक्षिणावर्ती शंख रखना चाहिए। सुपारी गणेश भी रखें।

पूजन के प्रारंभ में हाथ में अक्षत, जल एवं पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन, गणेश ध्यान एवं समस्त देवताओं का स्मरण करें। अब अक्षत एवं पुष्प चौकी पर समर्पित करें। इसके पश्चात एक सुपारी में मौली लपेटकर चौकी पर थोड़े-से अक्षत रख उस पर वह सुपारी स्थापित करें। भगवान गणेश का आह्वान करें। गणेश आह्वान के बाद कलश पूजन करें। कलश उत्तर-पूर्व दिशा या चौकी की बाईं ओर स्थापित करें। कलश पूजन के बाद दीप पूजन करें। इसके बाद पंचोपचार या षोडषोपचार के द्वारा गणेश पूजन करें। परंपरानुसार पूजन करें। आरती करें।

विशेष- 10 दिन तक नियमित समय पर आरती करें। अपनी सुविधानुसार समय को घटाएं या बढ़ाएं नहीं। गणेश जी प्रतीक्षा करना कतई पसंद नहीं करते हैं। उन्हें समय पर प्रसाद और आरती से प्रसन्न करें।

पूजन- पंचोपचार पूजन- 1. गंध, 2. पुष्प, 3. धूप, 4. दीप, 5 नैवेद्य।

षोडषोपचार पूजन-

1. आह्वान, 2 आसन (स्थान ग्रहण कराएं), 3 पाद्य (हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए प्रभु के चरणों में अर्पित करें), 4. अर्घ्य (चंद्रमा को अर्घ्य देने की तरह पानी छोड़ें), 5 आचमनीय (मंत्र पढ़ते हुए 3 बार जल छोड़ें), 6. स्नान (पान के पत्ते या दूर्वा से पानी लेकर छींटें मारें), 7. वस्त्र (सिलेसिलाए वस्त्र, पीताम्बरी कपड़ा या कलावा), 8. यज्ञोपवीत (जनेऊ), 9. आभूषण (हार, मालाएं, पगड़ी आदि), 10. गंध (इत्र छिड़कें या चंदन अर्पित करें), 11. पुष्प, 12. धूप, 13. दीप, 14. नैवेद्य (पान के पत्ते पर फल, मिठाई, मेवे आदि रखें।), 15. ताम्बूल (पान चढ़ाएं), 16. प्रदक्षिणा व पुष्पांजलि।

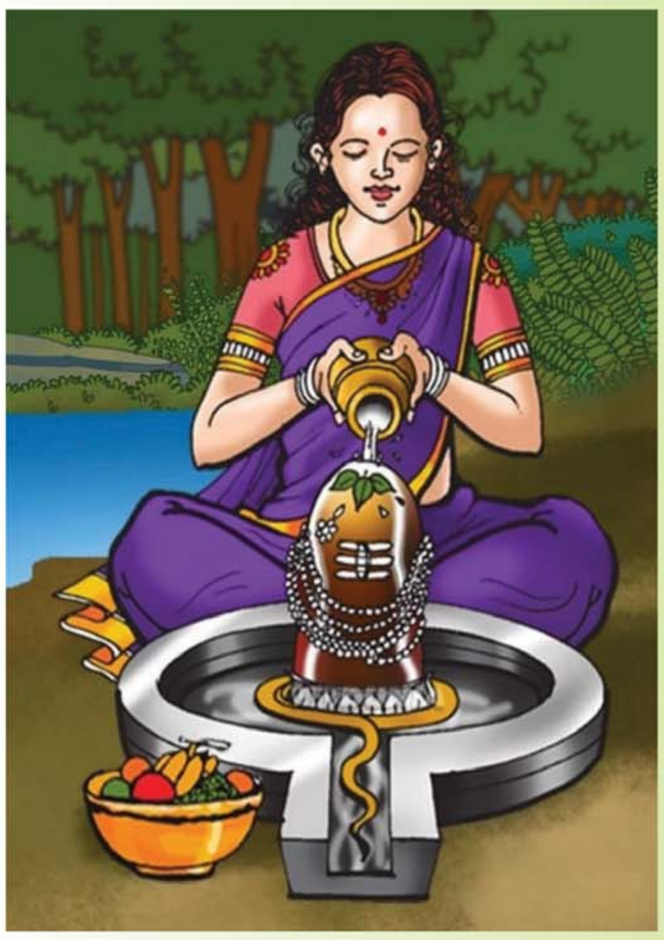

हरतालिका तीज क्यों है खास इस बार, ग्रहों की शुभ छाया में होगी पूजा, मिलेगा भगवान शिव का आशीष

भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन महिलाएं हरतालिका तीज का निर्जला व्रत रखती हैं। इस दिन बालू के शिवलिंग बनाकर उसकी 8 प्रहर पूजा होती है या शुभ मुहूर्त में भी पूजा करते हैं। इस बार का हरतालिका तीज पर ग्रहों के शुभ संयोग बन रहे हैं। ऐसे में शिवजी की पूजा से मिलेगा उनका आशीर्वाद। इस बार 30 अगस्त 2022 को यह व्रत रखा जाएगा।

तिथि: तृतीया तिथि 29 अगस्त दिन सोमवार को दोपहर 03 बजकर 20 मिनट से शुरू होकर अगले दिन 30 अगस्त मंगलवार को दोपहर 03 बजकर 33 मिनट रहेगी। उदयातिथि के अनुसार हरतालिका तीज का व्रत 30 अगस्त को रखा जाएगा।

ग्रह संयोग

1. रवियोग : इस दिन हस्त नक्षत्र रहेगा। दिनभर रवियोग रहेगा।
2. स्वराशि के ग्रह : इस दिन सूर्य सिंह में, बुध कन्या में, गुरु मीन में और शनि मकर में रहेगा।
3. अन्य ग्रह : इस दिन चंद्र कन्या में, केतु तुला में, राहु मेष में, मंगल वृषभ में और शुक्र कर्क में रहेगा।

हरतालिका तीज पूजा के शुभ मुहूर्त

अभिजीत मुहूर्त : सुबह 11:33 से 12:24 तक।
विजयी मुहूर्त : दोपहर 02:05 से 02:56 तक।
अमृत काल मुहूर्त : शाम 05:38 से 07:17 तक।
गोधूलि मुहूर्त : शाम 06:07 से 06:31 तक।
सायाह्न संध्या मुहूर्त : शाम 06:19 से 07:27 तक।
निशीथ मुहूर्त : रात्रि 11:36 से 12:21 तक।
नोट : पंचांग भेद और स्थानीय समय अनुसार समय में थोड़ी बहुत घट-बढ़ रहती है।

श्री गणेश चतुर्थी, महाभारत और वेद व्यास का क्या है कनेक्शन

31 अगस्त को गणेश स्थापना होगी और गणेशोत्सव पर्व मनाया जाएगा। भाद्रपद के शुक्ल चतुर्थी के दिन भगवान गणेशजी का जन्म हुआ था। गणेशजी सतयुग में, त्रेतायुग में और द्वापर युग में भी थे। द्वापर में उन्होंने प्रकट होकर वेद व्यासजी के कहने पर महाभारत लिखी थी। आओ जानते हैं इस संबंध में संपूर्ण इतिहास।

द्वापर में गणेशजी का अवतार: द्वापर युग में गणपति ने पुनः पार्वती के गर्भ से जन्म लिया व गणेश कहलाए। परंतु गणेशजी के जन्म के बाद किसी कारणवश पार्वती ने उन्हें जंगल में छोड़ दिया, जहां पर पराशर मुनि ने उनका पालन-पोषण किया। वेद व्यासजी के पिता थे पराशर मुनि। ऐसा भी कहा जाता है कि वे महिष्मति वरेण्य के पुत्र थे। कुरुप होने के कारण उन्हें जंगल में छोड़ दिया गया था।

यह भी कहा जाता है कि कहते हैं कि द्वापर युग में वे ऋषि पराशर के यहां गजमुख नाम से जन्मे थे। गजमुख नाम के राक्षस को मारने के कारण उनका ये नाम रखा गया जान पड़ता है। उनका वाहन मूषक था, जो कि अपने पूर्व जन्म में एक गंधर्व था। इस गंधर्व ने सौभरि ऋषि की पत्नी पर कुदृष्टि डाली थी जिसके चलते इसको मूषक योनि में रहने का श्राप मिला था। इस मूषक का नाम डिंक है।

द्वापर में सिंदुरासुर का किया था वध: द्वापर युग में गणेशजी मूषक पर सवार होकर प्रकट हुए थे। द्वापर युग में उनका वर्ण लाल है। वे चार भुजाओं वाले और मूषक वाहन वाले हैं तथा गजानन नाम से प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि द्वापर के इस अवतार में गणेश ने सिंदुरासुर का वध कर उसके द्वारा कैद किए अनेक राजाओं व वीरों को मुक्त कराया था। इसी अवतार में गणेश ने वरेण्य नामक अपने भक्त को गणेश गीता के रूप में शाश्वत तत्व ज्ञान का उपदेश दिया।

गणेशजी को पौराणिक पत्रकार या लेखक भी कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने ही 'महाभारत' का लेखन किया था। इस ग्रंथ के रचयिता तो वेदव्यास थे, परंतु इसे लिखने का दायित्व गणेशजी को दिया गया। इसे लिखने के लिए गणेशजी ने शर्त रखी कि उनकी लेखनी बीच में न रुके। इसके लिए वेदव्यास ने उनसे कहा कि वे हर श्लोक को समझने के बाद ही लिखें। श्लोक का अर्थ समझने में गणेशजी को थोड़ा समय लगता था और उसी दौरान वेदव्यासजी अपने कुछ जरूरी कार्य पूर्ण कर लेते थे।